शिवाजी

●

भीमसेन विद्यालङ्कार

राजपाल एण्ड सन्ज़
अनारकली — लाहौर ।

नवयुग ग्रन्थमाला का तृतीय पुष्प

शिवाजी

●

लेखक
भीमसेन विद्यालंकार

●

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
अनारकली — लाहौर

मूल्य

१॥)

मुद्रक—श्री विश्वनाथ एम. ए., आर्य प्रेस लिमिटिड, लाहौर ।

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

समर्पण और निवेदन

यह कृति पति और पिता से उपेक्षित

मातृशक्ति

और उसकी दिव्य लोरियों में पलने वाली, स्वतन्त्र मार्ग ढूंढ़ने वाली, दिन रात तपस्या और बलिदान की घाटियों में विचरने वाली, जीवन संघर्ष के प्रवेश द्वार पर खड़ी, २०, २५ वर्ष की आयु की तरुण उमंगों में लहराती

तरुण शक्ति

को समर्पित है।

इस रचना के निर्माण में नागरी प्रचारिणी पत्रिका, श्री यदुनाथ सरकार कृत शिवाजी, वीर मराठे, शिवदिग्विजय, शिवा-बावनी आदि ग्रन्थों से सहायता मिली है। उन सब का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

भीमसेन विद्यालंकार

हिन्दी संदेश मंदिर
मोहनलाल रोड लाहौर।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
२३ दिसम्बर १९४३

१

जीजाबाई की जय

मातृमान् पुरुषो वेद

पंचमी का उत्सव है। बीजापुर दरबार के सरदार पंचमी का पर्व मनाने के लिये आपस में एक दूसरे के घरों पर एकत्र होने लगे। मालो जी भोंसले अपने पुत्र शहा जी के साथ जाधवराव के घर पर उपस्थित हुए। जाधवराव अपनी कन्या जीजाबाई के साथ रंग पंचमी के त्यौहार में सम्मिलित हुए। चारों ओर आमोद प्रमोद का वातावरण था। छोटे बड़े रंग गुलेल उड़ा कर अपनी थकान दूर कर रहे थे। युवक कण स्फूर्तिमयी क्रीड़ाओं में मग्न थे। वृद्ध-सज्जन पास बैठी तरुण मंढली को, आप बीती जगबीती घटनाएं सुना रहे थे। बालक बालकों के साथ खेल कूद में मग्न थे। बाल-लीलाओं को देख कर वृद्ध युवा – प्रसन्न हो रहे थे। इतने में शहा जी—और जीजा बाई भी स्वभाव सुलभ चंचलता तथा आकर्षण से आपस में खेलने लगे। दोनों होनहार थे। उनको खेलते कूदते देखकर जाधव जी के मुँह से सहसा यह उद्गार निकला "क्या सुन्दर युगल जोड़ी सोहती है"! इस उद्गार को सुनते ही मालो जी ने मंडली में खड़े होकर कहा कि आज से जाधोजी हमारे समधी हुए। खेल कूद में दो वंशों का गठ बंधन हो गया। जाधो जी इस बात को सुनकर हैरान हो गये। परन्तु अब इस उद्गार-हृदयोद्गार-प्राकृतिक-स्वभाविक भाव प्रकाशन-को कैसे लौटाएं। जाधो जी अपने आपको ऊँचे कुल का समझते थे। मालो जी को हीन वंश

का। अब उन्हें इस प्रस्तावित सम्बन्ध के विषय में संकोच होने लगा। इधर मालो जी भोंसले ने इस सम्बन्ध को क्रियात्मिक रूप देने पर आग्रह करना शुरू किया। धीरे धीरे यह बात बीजापुर दरबार तक पहुँची। बीजापुर दरबार के दरबारियों ने वाग्दान-वचन को निभाने की कोशिश की। दरबार ने मालो जी की स्थिति को उन्नत तथा जाधो जी के बराबर करने के लिये उन्हें जागीरें तथा सरकारी ओहदे भी दिये। दरबार ऐश्वर्य दे सकता था। परन्तु जाधो जी के जन्म-कुलाभिमान की अहंकारमयी ज्वाला को शान्त करने के लिये उसके पास कोई साधन न था। महाराष्ट्र के घर घर में इसकी चर्चा होने लगी। लोकमत ने जाधो जी को वचन पालन के लिये बाधित किया। शुभ मुहूर्त (१६०४ ई० में) में शहा जी और जीजा बाई का विवाह सम्बन्ध हो गया। लोकाचार पूरे किये गये। परन्तु जाधो जी के जन्म-कुलाभिमान को इससे जो ठेस लगी—उससे वह दिल ही दिल में मालो जी से खलने लगे। पुत्री का प्रेम भी उनके हृदय को शान्त न कर सका। वह यथाशक्ति मालो भोंसले और शहा जो को नीचा दिखाने का अवसर ढूंढते। जीजा बाई इस स्थिति को देख कर हैरान थी। कुलाभिमानी जाधव जी ने जन्माभिमान की ऐंठ में अपनी पुत्री के—अपने हृदय की सार प्रतिमा के कष्ट और पीड़ा की भी परवाह नहीं की। शहा जी जाधव जी के संधिचक्रों से परेशान हो, इधर उधर भटकने लगे। उनके साथ गर्भवती जीजा बाई भी थी। शहाजी जीजा बाई को अपनी आपत्तियों का मूल कारण समझ कर उसके प्रति उदासीन रहने लगा। पति और पिता के तिरस्कार पूर्ण व्यवहार से खिन्न जीजा बाई के हृदय को ढाढ़स बंधाने वाला कोई न था। पति पत्नी के स्नेह सम्बन्ध को दृढ़ करने वाली सन्तान, शम्भु जी के नाम से

१६२३ ई० में पैदा हुई। यह अपत्य सम्बन्ध भी शाहजी को जीजाबाई का अनुरागी न बना सका। प्रचलित दन्त कथाओं के अनुसार जीजा बाई का बड़ा लड़का शम्भु जी कनकगिरि में मारा गया। इसके बाद शहा जी के हृदय में लखू जी जाधव और उसके परिवार के लिये घृणा का भाव गहरा हो गया। उसने समझा कि जाधव की कन्या का पुत्र उसके किसी काम न आएगा। जीजाबाई और शम्भु जी का परित्याग कर दिया। जाधो जी यथाशक्ति शहा जी को चैन न लेने देता था। शहा जी को नीचा दिखाने के लिये जीजाबाई के पिता मुगल दरबार से जा मिले। उधर मुगलों के आक्रमण से अहमदनगर की निजामशाही को बचाने के लिये शहा जी यत्न करने लगा। शहा जी ने जीजा बाई को उत्तर कोंकण में दादा जी कोंडदेव—की रक्षा में शिवनेरी किले में भेज दिया। स्वयं सांसारिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिये दक्षिण भारत की मुसलमानी बादशाहियों में संधिचक्र तथा युद्ध चक्रों का संचालन कर जीवन यात्रा व्यतीत करने लगे। इन्हीं दिनों इस भाग दौड़ में जीजा बाई को पतिदेव के राजनैतिक सन्धिचक्रों के जोड़ तोड़ के कारण स्थान २ पर भटकना पड़ा। वह अपने आराम उपभोग के लिये पतिदेव को छोड़ कर पितृ गृह में जा सकती थी—परन्तु आर्य मर्यादा—आर्यजाति की पवित्रमर्यादा के अनुसार वह पतिगृह को न छोड़ना चाहती थी।

इन अमंगल और अनर्थ की परम्पराओं से अपनी सन्तान की रक्षा के लिये वह अपने इष्टदेव शिव का चिन्तन स्मरण करने लगी, और पतिदेव की इच्छानुसार शिवनेरी किले में सन्तान प्राप्ति की प्रतीक्षा में दिन बिताने लगी। १६२७ ई० में १० अप्रैल को बालक ने जन्म लिया। इष्टदेव 'शिवा की' स्मृति में इसका

नाम भी शिवा जी रखा गया। पौराणिक दन्त कथाओं में प्रसिद्ध दक्ष प्रजापति और शिव के पारस्परिक संघर्ष में, पार्वती ने दक्ष-प्रजापति—अपने पूजनीय पिता का साथ देने के स्थान पर पतिदेव के साथ तपस्या का जीवन व्यतीत किया। पतिव्रत धर्म के प्रभाव से राक्षस संहारी पुत्र को जन्म दिया। जीजा बाई दिन रात इन दिनों पतिदेव के युद्धचक्रों तथा नीति चक्रों की चिन्ता में लगी रहती थी। नैपोलियन की वीर माता ने गर्भ दशा में नैपोलियन को वीर प्रकृति युद्ध विजेता बताया। अभिमन्यु की माता सुभद्रा ने अभिमन्यु को गर्भ दशा में, पतिदेव से व्यूह चक्र की कहानियां सुनते २ व्यूह चक्र का भेद करने का रहस्य सिखाया था।

जीजा बाई ने भी अपने पुत्र शिवा जी को गर्भ दशा से ही क्षत्र धर्म का पाठ पढ़ाया। पति पिता के संघर्ष से खिन्न और उद्विग्न जीजा बाई को पुत्र का आश्रय मिला। अपनी शक्ति, अपना ध्यान, पुत्र पर केन्द्रित किया। पतिदेव तथा पितृ देव दोनों की स्मृति में -शिव अर्चना करने लगी। माहात्म्य शिव दर्शन समझ कर उसे अपने संकटों का दूर करने वाला स्वीकार किया। अपने संकटों के मूल कारणों को दूर करने के लिये, संस्कार, वासना तथा भावनाओं द्वारा उसे शिक्षित तथा संस्कृत करने का संकल्प किया। शाहा जी ने इन्हीं दिनों दीपाबाई नाम की देवी से दूसरा विवाह किया। जीजा बाई के प्रति उपेक्षा तथा उदासीनता की भावना पराकाष्ठा को पहुँच गई। इस विवाह द्वारा उसने जाधवराव की पुत्री की अन्तरात्मा को क्लेशित कर जाधवराव के प्रति द्वेष भाव को मूर्त रूप दिया।

पुरुष जाति के इस स्वार्थमय, सामाजिक ऊँच नीच के इस कुपरिणाम को जीजा बाई ने देखा और अपना सर्वस लुटा कर इसे दूर करने का संकल्प किया। शिवा जी भी पितृदेव द्वारा,

पुरुष जाति द्वारा किये गये मातृशक्ति के अपमान को देख कर सिहरा उठा। उसके तरुण हृदय में उस समय की पुरुष जाति, तथा सामाजिक ऊँच नीच के प्रति विद्रोह का भाव प्रबलता के साथ जाग उठा। माता और पुत्र—एक ही व्रत में दीक्षित होकर संकल्प पूर्ति के लिये अपने आपको तैयार करने लगे। जीजा बाई ने रामायण और महाभारत की कथाएं सुनाकर—उसे युद्धचक्रों तथा संधिचक्रों की शिक्षा देनी आरम्भ की। शिवाजी के हृदय में, राम की भांति वानर जाति के वीर पुरुषों के उत्तराधिकारी, पर्वतों तथा कोकण की घाटियों में विचरने वाले मावलियों को, अपनाने की प्रेरणा हुई। शिवा जी इनमें खेलने लगा। इन्हें बालसखा बनाया। यह सब वीर भी जीजा बाई को माता की तरह पूजने लगे। महाभारत की कथाएं सुनाकर श्री कृष्ण की भांति आवश्यकतानुसार संधिचक्रों तथा छलयुद्धों में विजयी होने के लिये शिवाजी को शिक्षित किया। कोई ब्राह्मण शिवा जी को छोटी जाति का होने से मंत्र दीक्षित करने को तैयार न था—परन्तु माता की लोरियों की वीर रसोत्तेजक शिक्षा ने इस पुत्र की मंत्र-शिक्षण की कमी को पूरा किया। जीजाबाई एकान्त में—जन समुदाय—सब जगह इस होनहार वीर शिवा जी को लिये विचरने लगी। भक्त-बाल सखा उसके गुणों से आकृष्ट हुए चारों ओर इकट्ठे होने लगे।

× × × ×

इतने में समाचार मिला कि शहा जी को बीजापुर दरबार ने—उनकी वीरता और योग्यता पर प्रसन्न होकर पूना और सूपा की जागीर दी है। शहा जी ने अपना कार्यक्षेत्र कर्नाटक को बनाया। अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ उधर ही रहने का विचार किया। जीजाबाई और उसके पुत्र शिवा जी को पूना सूपा की जागीर निर्वाह

के लिये दिलाने का संकल्प किया। दादाजी कोंडदेव को इसका प्रबन्ध करने के लिये नियत किया। पूना सूपा की जागीर शिवा जी के नाम कराने के लिये शिवा जो को बीजापुर दरबार में बुला भेजा। जीजा बाई भी पतिदेव के दर्शनों के लिये पुत्र के साथ बीजापुर पहुँची। आर्य देवी चिरप्रतीक्षा के बाद, पुत्रसहित पतिदेव के चरणों में उपस्थित हुई। श्रद्धा और भक्ति के भाव प्रकट करने की उत्कंठा थी। परन्तु शहा जी ने—जीजा बाई को कहा कि तुम यहां क्यों आए। माता पुत्र—पिता के इस भाव को देख कर चकित हो गए। माता के लाड़ले, शिवा जी के हृदय में माता के इस अपमान को देख कर ग्लानि और विद्रोह के भाव पैदा हुए। शहा जी बीजापुर दरबार की कृपा की चाह में, अपने कर्तव्य को भूल गया। जीजा बाई ने पुत्र को शान्त किया। परन्तु माता के अपमान को वीर पुत्र कैसे भूलता। शहा जी ने जीजा बाई और शिवा को कुछ दिनों के लिये बीजापुर में रहने के लिये कहा। मौका देख कर पूना-सूपा की जागीर शिवा जी के नाम कराने के लिये शिवा जी को बीजापुर दरबार में उपस्थित किया।

शिवा जी का मन माता के अपमान से अशान्त था—उन्होंने दरबार में उपस्थित होकर बादशाह को 'मुजरा' आदि न किया। शहा जी ने 'बालक नाबालिग है' कह कर बादशाह को शान्त किया। जीजा बाई की छत्रछाया तथा लोरियों में पलने वाला वीर शिवा जी 'नाबालिग' नहीं था। उसने समझा—खूब—समझा, कि इन जागीरों तथा बादशाही कृपाओं की चाह में ही उसके पिता—दर-दर भटक कर उसकी माता की उपेक्षा कर कर रहे हैं। दरबार की रौनक समाप्त हुई। जीजा बाई

उद्विग्न विद्रोही पुत्र के साथ पूना सूपा को वापिस आई। रास्ते में शिवा जी माता के साथ—बीजापुर दरबार—की—तथा उस समय की स्थिति को बदलने के लिये भांति भांति के मनोरथ बनाता हुआ वापिस आया। जीजा बाई ने शिवा जी के साथ बीजापुर जाकर उसे स्थिति की भयंकरता—का साक्षात्—अनुभव कराया। इसने उसके हृदय में प्रज्वलित विद्रोह की आग को और भी प्रदीप्त किया। इस तरह भविष्य में स्वदेशी विदेशी सब अत्याचारियों को भस्मसात् कर, महाराष्ट्र में—जनता का राज्य स्थापित करने की भूमिका बांधी गई।

× × × ×

शिवा जी की स्वच्छन्द-क्रियाओं-स्वेच्छाचारिता-उथल पुथल से बीजापुर दरबार तंग हो गया। दरबार ने अफजलखां को उसका दमन करने के लिये भेजा। वह भारी सेना के साथ शिवा जी का सिर कुचल कर छल नीति का प्रयोग करने के लिये उद्यत हुआ। जीजाबाई को इस आने वाले संकट का पता लगा। शिवा जी जीजाबाई के चरणों में उपस्थित हुआ। जीजाबाई ने ❀"व्रजन्ति ते मूढ़ धियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः" का उपदेश देकर शिवा जी को छल नीति का आश्रय लेने के लिये प्रेरित किया। अपने पुत्र को अपने हाथों बाघनखा कवच तथा लोहे की टोपी पहना कर विदा किया! क्या आज कोई वीर माता अपने पुत्र को इस प्रकार विदा करने को तैयार है! माता का आशीर्वाद लेकर शिवा जी—मृत्यु को निमन्त्रण देने उपस्थित हुआ—माता के आशीर्वाद ने जादू का सा असर किया! माता के आशीर्वाद रूपी

❀ जो लोग संसार यात्रा में मायावियों की माया का माया छल से मुकाबला नहीं करते वह पराजित होते हैं।

अभेद्य कवच पर शत्रु का वार बेकार रहा।

× × × ×

शिवाजी महाराजा मिर्ज़ा जयसिंह की प्रेरणा तथा आश्वासन पर औरंगजेब के दरबार में उपस्थित होने के लिये आगरा जाने के लिये तैयार हो रहे हैं। तरुण मंडली तथा शिवा जी के बाल सखा और मंत्रिमंडल चिन्तित हैं कि पता नहीं औरंगजेब क्या करे। पीछे महाराष्ट्र के शासन चक्र का संचालन कैसे हो। शिवा जी के व्यक्तित्व के स्थान पर किसका व्यक्तित्व सारे मराठा मंडल को एक सूत्रमें संगठित करेगा। वीर पुत्र ने माता के सामने यह समस्या उपस्थित की। जीजाबाई ने पुत्र का प्रतिनिधि होकर शासन सूत्र की बागडोर संभाली और शिवा जी को अमर आशीर्वाद के साथ मृत्यु के मुंह में, औरंगजेब की छल-शाला में जाने के लिये उत्साहित तथा सावधान किया। केवल पुत्र को ही नहीं, अपने पुत्र के पुत्र को भी साथ भेजा! क्या आज कोई वीर देवी अपने अपने प्राणसार को—अपने हृदय के सार पुत्र को इस प्रकार राष्ट्रीय कार्य के लिये संकट पूर्ण मार्ग का राही बनाने को तैयार है! जीजा बाई ने अपने हृदय के टुकड़ों को महाराष्ट्रीय जनता की स्वाधीनता की जलती भट्टी में भेंट कर, शिवाजी के बाल-सखाओं तथा साथियों को भारी से भारी बलिदान देने के लिये उतावला कर दिया।

× × × ×

मुगल दरबार के समाचार महाराष्ट्र में पहुंचे। शिवा जी पुत्र सहित औरंगजेब का कैदी बन गया। जीजाबाई विचलित न हुई। उनके व्यक्तितत्व ने महाराष्ट्र को विशीर्ण न होने दिया!

राजमाता की आज्ञाओं को जनता ने सिर माथे स्वीकार किया। राजगढ़ का किला है। राजमाता किले में बैठी है। किले के पहरे-दारों ने राजमाता की सेवा में निवेदन किया कि कुछेक विचित्र वैरागी किले के दरवाजे पर खड़े हैं। आपके दर्शनों के लिये अन्दर आना चाहते हैं। जीजाबाई ने अन्दर आने की आज्ञा दे दी। राजमाता के सामने उपस्थित होते ही नीरोजी पन्त ने वैरागियों की प्रथानुसार जीजाबाई को आशीर्वाद दिया। शिवाजी (वैरागी वेश में) जीजाबाई की ओर बढ़े और अपने आप को उसके चरणों में समर्पित किया। जीजाबाई उसे पहचान न सकी और वैरागी के इस व्यवहार से हैरान होगई कि एक वैरागी इस प्रकार मर्यादा के विपरीत आशीर्वाद देने के स्थान पर, अपने आप को भक्तों के चरणों में समर्पित कर रहा है। माता को चकित स्त-म्भित देख कर शिवाजी ने अपना सिर जीजाबाई की गोदी में रख दिया और वैरागियों वाली टोपी अपने सिर से उतार दी। शिवा जी के सिर के चिह्न को देखकर, जीजाबाई ने उसे तत्काल पह-चान लिया और उसका आलिंगन किया। जीजाबाई पुत्र की चतुराई तथा कुशलता को देखकर आनन्द पुलकित हो गई। राज-माता ने शिवा जी के सकुशल लौटने पर अपने आप को धन्य धन्य समझा।

× × × ×

कर्नाटक में बाजा जी निंबॉलकर नाम का मराठा सरदार रहता था। बीजापुर के बादशाह ने उसे कहा कि या तो तुम मुसलमान बनो नहीं तो तुम्हारी जागीर और सम्पत्ति छीन ली जायगी। पारि-वारिक परिस्थितियों से लाचार होकर निंबॉलकर ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद यह सरदार शिवा जी के

दरबार में पहुंचा। जीजाबाई को इस अनुभवी सरदार के पहुंचने का समाचार मिला। उन्होंने इस बलशाली सरदार को मराठा मण्डल में सम्मिलित करने का विचार प्रकट किया। बिछुड़े आर्य सन्तान को अपनाने का संकल्प किया। सरदारों से परामर्श किया।

राजमाता के संकल्प तथा इच्छा के सामने सबने सिर झुकाया। शुद्धि की गई। उसे फिर से आर्य जाति का अंग बनाया गया। जीजाबाई को इससे सन्तोष न हुआ। विवाह सम्बन्ध के बिना इस प्रकार के संस्कार क्षणिक प्रभाव पैदा करते हैं। जीजाबाई ने अपनी पोती, शिवा जी की पुत्री, शम्भा जी की बहिन सुखुबाई का विवाह बजा जी निम्बालकर के पुत्र महाराजी के साथ सन् १६५७ ई० में कर दिया। आज आर्य जाति की देवियां अपनी संकीर्णता तथा रूढ़िप्रियता के कारण आर्य जाति में सम्मिलित होने वाले लाखों आर्य सन्तानों को कुलाभिमान तथा जन्माभिमान के कारण तिरस्कृत कर रही हैं। जीजाबाई ने इस कार्य द्वारा महाराष्ट्र की जनता के सामने यथार्थ में अपने आप को राजमाता के रूप में उपस्थित किया। शिवा जी के बाल सखा, छोटे बड़े जन्ममूलक ऊंच नीच आदि के भेद भावों को छोड़ कर जीजाबाई को राजमाता—राष्ट्रमाता के रूप में पूजने लगे।

× × × ×

शिवा जी के राज्याभिषेक की तैयारियां होरही हैं। विविध देशों के राजदूत शिवा जी की भेंट करना चाहते हैं। परन्तु शिवा जी राज्याभिषेक समारोह में सम्मिलित होने से पूर्व स्वामी गुरु रामदास और जीजाबाई की सेवा में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। आज का स्वर्णीय दृश्य है। जागीरदार की

कन्या जीजाबाई को, सारा जीवन-युवावस्था की उमंग भरी रातें मुसीबतों में बितानी पड़ीं। परन्तु आज उसकी दुःख की वह रातें समाप्त होती हैं। पिता-पति दोनों से उपेक्षित जीजाबाई के चरणों में, आज महाराष्ट्र के छत्रपति सिर झुका रहे हैं। जिस की साधना में सारा जीवन व्यतीत किया, आज वह कामना सफल हुई। शहा जी की उपेक्षित धर्म पत्नी—अस्सी साल की आयु में—आज पति पिता की उदासीनता को भूलकर, वीर पुत्र की भक्ति और श्रद्धामयी सेवा से पुलकित हो अपने आप में समा नहीं रही। आनन्दाश्रु उसकी चिन्ता तथा विपत्तियों से जर्जर शरीर को पुलकित और स्फूर्तिमय बना रहे हैं। आज उसके आनन्द का पारावार नहीं। अपने पुत्र को अपनी जन्मभूमि में मुकुट धारण करते हुए देख कर वह आनन्द की अनन्त लहरियों में तरंगित हो रही है। दयालु परमात्मा ने शायद उसे यह स्वर्गीय दृश्य देखने के लिये ही दीर्घायु प्रदान की है। राज्याभिषेक के २१ दिन बाद १८ जून को जीजाबाई ने देहलीला संवरण की। राजमाता कुन्ती की भांति जीजाबाई ने अपने पुत्र को विजयी और राजभिषिक्त हुआ देख कर *"धर्मेवो धीयतां बुद्धिः मनोवोमहदस्तुच" का उपदेश देते हुए संसार से विदाई ली। जागीरदार की पुत्री—जागीरदार की पत्नी, विद्रोही तरुण की माता—आज राष्ट्र माता की आनशान और शोभा के साथ संसार से कूच कर गई। बोलो राजमाता जीजाबाई की जय !!!

---

* तुम्हारी बुद्धि धर्म का चिन्तन करे और तुम्हारा मन विशाल तथा उदार हो।

२

शिवा जी का बाल्य-काल और शिक्षण

गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः ॥‡

१६३६ मार्च तक शहा जी का परिवार शिवनेरी किले में रहा। १६३६ ई० अक्तूबर में शहा जी ने बीजापुर दरबार में नौकरी की। दरबार ने उन्हें चाकण से लेकर इन्दपुर और शिरबाल तक का प्रदेश जागीर के रूप में दिया। शहा जी ने दादा जी कोंडदेव को जागीर का प्रबन्धक नियत किया और उसे कहा कि "मेरी धर्म-पत्नी जीजा बाई शिवनेरी के किले में रहती है। उसने शिवा जी नाम के पुत्र को जन्म दिया है। उसको और उसके पुत्र शिवा जी को ले आओ और अपने निरीक्षण में उन्हें पूना में रखो। उन्हें आवश्यक खर्चों के लिये धन देते रहो। माता पुत्र, शहा जी से पृथक् रहने लगे। शिवा जी अकेला, पिता के वात्सल्य प्रेम से वंचित हो, पलने लगा। जीजा बाई उसके लिये सब कुछ थी। वह उसे साक्षात् देवी की तरह पूजता था। शिवा जी चिरकाल तक अपने पिता के लिये अजनवी बना रहा। शिवा जी ने अपने जीवन की रूपरेखा का निर्माण स्वयं किया। स्वतन्त्र-स्वच्छन्द निर्बाध जीवन व्यतीत करने के कारण उसके स्वभाव में, दूसरों के आगे हाथ पसारने की प्रकृति पैदा नहीं हुई। होनहार वीर

---

‡ शेर और स्वाभिमानी राजा स्वाभिमान रक्षा के लिये प्रायः कष्टों और मसीबतों का जीवन व्यतीत करते हैं।

पुरुषों की भांति उसमें, स्वयं अपने लिये जीवन की दुर्गम घाटियों में, अपना रास्ता बनानेकी प्रवृत्ति पैदा हुई। इस प्रवृत्ति ने ही उसे विपरीत परिस्थितियों में, निर्भय और निःशंक होकर आगे बढ़ने की ओर प्रेरित किया। महाराजा रणजीतसिंह और अकबर की भांति बाल्यकाल से ही शिवा जी को स्वतन्त्र बुद्धि से काम लेना पड़ा।

जब दादा जी कोंडदेव ने पूना की जागीर का प्रबन्ध संभाला; उस समय यह जिला उजाड़ हो चुका था। लगातार ६ साल के युद्धों ने भूमि को बर्बाद कर दिया था। उच्छृङ्खल आक्रमणकारी सिपाहियों की लूट मार के बाद, चोर डाकुओं ने अराजकता से खूब लाभ उठाया। पूना का प्रदेश निजामशाही के अधिकार से निकल कर, बीजापुर की आदिल शाही के आधीन हुआ था। इस शासन परिवर्तन काल में, कोई स्थिर शासनतंत्र स्थापित न हो सका था। शहा जी को इस भाग दौड़ में, इस प्रदेश का प्रबन्ध करने की फुर्सत न थी। १६३१—३२ ई० में इस प्रदेश में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। इस दुर्भिक्ष ने शहा जी और बीजापुर दरबार की सेनाओं से तहस नहस इस प्रदेश को और भी उजाड़ कर दिया। १६३४—१६३६ तक मुगलों के आक्रमणों ने जुनार और पूना के उत्तरी भाग को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इन्हीं दिनों अहमदनगर की निजामशाही के छिन्न भिन्न होते २ मोरोतान देव नाम के विद्रोही किसान ने पूना के समीपवर्ती प्रदेश में उपद्रव खड़ा कर उसे अपने आधीन कर लिया। इस उजड़े प्रदेश में जंगली पशुओं की प्रबलता होगई।

दादा जी कोंडदेव ने अपने मालिक शहा जी के पुत्र शिवा जी के साथ मिल कर इस उजड़ी जागीर तथा प्रदेश को आबाद तथा सुरक्षित करने का यत्न किया। दादा जी कोंडदेव ने हिंसक पशुओं को मारने वाले पहाड़ियों को इनाम देने की घोषणा की।

पहाड़ी लोगों को कई प्रकार के प्रलोभन तथा रियायतें देकर इस प्रदेश में खेती वाड़ी करने के लिये उत्साहित किया। नए किसानों से भूमि कर में प्रथम वर्ष में एक रुपया द्वितीय वर्ष ३) तीसरे वर्ष ६) चौथे वर्ष ६) और ५वें वर्ष १०) और छठे वर्ष २०) लगान लेने की घोषणा की। पुराने किसानों को भी इसी प्रकार की अनेक सहूलियतें दीं। दादा जी कोंडदेव की इस नीति से यह प्रदेश कृषि-भूमि बन गया।

इस प्रदेश की रक्षा के लिये स्थानीय सिपाहियों की टुकड़ी संगठित की। इन सिपाहियों को प्रदेश की रक्षा के लिये उचित स्थानों पर तैनात किया। दादा जी कोंडदेव के सुप्रबन्ध से उस देश से चोरों और लुटेरों का नाम मिट गया। शाहा जी के नाम से एक बगीचा बनाया और किसी भी व्यक्ति को वहां से फलादि तोड़ने की आज्ञा नहीं दी जाती थीं। एक दिन अचानक दादा जी कोंडदेव ने स्वयं उस बाग में एक आम के वृक्ष से फल तोड़ लिया। इस अपराध पर वह स्वयं अपना हाथ काटने लगा। परन्तु दूसरे व्यक्तियों के बीच में पड़ने से वह रुक गया। नियंत्रण के प्रति सन्मान का भाव दिखाने के लिये उसने जीवन के शेष भाग में अपने गले में लोहे की जंजीर डाली और अपराधी हाथ को मृत्यु पर्यन्त लम्बे दस्ताने (glove) में बन्द रखा। दादा जी कोंडदेव की संगति से शिवाजी ने प्रबन्ध, शासन और नियंत्रण करने की शिक्षा प्राप्त की। साथ ही साथ घोड़े पर चढ़ना, शस्त्रास्त्र चलाना-योद्धाओं के लिये आवश्यक, करतब शिवाजी ने इस प्रदेश में पूरी स्वाधीनता के साथ सीखे। दिन रात पहाड़ी मावलियों के साथ इन घाटियों में विचरने से शिवाजी

का स्वभाव और शरीर, स्फूर्तिमय अनथक परिश्रम करने का अभ्यासी हो गया।

शिवाजी के अक्षर ज्ञान की शिक्षा के विषय में कोई स्पष्ट प्रबल प्रमाण नहीं मिलता। तारीख-ए-शिवाजी और चिट नवीस के वर्णनों से यह पता लगता है कि दादा जी कोंडदेव ने शिवाजी को शिक्षित करने के लिये शिक्षक नियत किया और वह बहुत विद्वान् हो गया। परन्तु उपलभ्यमान ऐतिहासिक विवरणों में ऐसा कोई प्रबल प्रमाण नहीं मिलता, जिस से शिवा जी के पुस्तकी ज्ञान अथवा अक्षर ज्ञान को सिद्ध किया जा सके।

परन्तु इस शिक्षण के न होने से उसका हृदय तथा मन भाव हीन और जड़ नहीं रहे। शिवाजी के हृदय तथा मन को रामायण, महाभारत की कथाओंने आलोकित किया था। उसे साधु सन्त-फकीरों के सत्संग का बहुत शौक था। रामदास, तुकाराम और मुसलमान फकीरों की सेवा और सत्संगति से उसने अपने हृदय में आध्यात्मिकता और पवित्र भावों को विशेष रूप से संचित किया था। जब कभी विजय यात्रा से अवसर बचता तो मार्ग में आनेवाले मंदिरों के दर्शन से न चूकता था। माता जीजा बाई की धार्मिक और वैराग्य प्रधान सात्विक प्रवृत्तियों ने शिवाजी के हृदय को, आदर्शवाद का पुजारी बना दिया था। बाल्यकाल की इस शिक्षा ने उसे युवावस्था तथा बड़ी उमर में अपने स्वीकृत पथ से विचलित न होने दिया।

× × ×

सेनापति नेल्सन और सम्राट् नैपोलियनके विषय में प्रसिद्ध है उन्होंने अपने जीवनकालकी प्रसिद्ध लड़ाइयां, अपने शिक्षणालयों के क्रिकेट के मैदानों में जीती थीं। इसी प्रकार से शिवा जी के विषय

में यह कहना यथार्थ है कि उसने बीजापुर और मुगल बादशाहों के साथ जो भयंकर युद्ध किये— उनकी तैय्यारी उसने अपने शित्ता काल में—शैशव क्रीड़ा स्थान-मावला के प्रदेश में की थी। पूना प्रदेश का पश्चिमी भाग—पश्चिमी घाट के साथ १० मील की लम्बाई और १४ मील की चौड़ाई-वाला स्थान-मावला प्रदेश कहलाता था। यह प्रदेश अत्यन्त औघड़ पथरीला (Ruggid) चक्करदार गहरी घाटियों से घिरे हुए, छोटे२ समतल भूमि भागों वाला है। इन घाटियों में कई तरह की ऊंची-सीधी पहाड़ियां दिखाई देती हैं। जहां वृत्त हैं, वहां साथ ही घनी झाड़ियों वाले दुर्गम जंगल हैं। कहीं कहीं घने २ जंगलों के टुकड़े दिखाई देते हैं। इस प्रदेश की उत्तरी घाटियों में रहने वाले पहाड़ी कोली (Koli) कहलाते हैं। दत्तिणी घाट के निवासी मराठा कहलाते हैं। इस प्रदेश की आबोहवा खुश्क और जीवन संचारिणी है। पश्चिमी और दत्तिणी भारत के अन्य प्रदेशों की अपेत्ता यहां का वातावरण कम गर्म है। यह सारा प्रदेश सामूहिक रूप में १२ मावलों के नाम से कहा जाता है। जुनार के नीचे १२ मावल थे और पूना के नीचे भी १२ मावल थे। दादा जी कोंडदेव ने इन मावलों को पूर्णतया अपने अधीन कर लिया। जिन्हों ने सिर उठाया, उन्हें कुचल दिया गया। शिवाजी भी इन प्रदेशों में विचरता रहा। दिन रात के इस क्रीड़ा-स्थल से, उसे भविष्य जीवन के साथी, उत्तम सिपाही बालसखा और सब कुछ न्यौछावर करने वाले अनुयायी मिले। येस्सा जी कंक, बाजी पारलकर शिवाजी के समवयस्क मावले सरदार थे। कोंकण का ताना जी मालसरे भी इसी प्रकार का शिवाजी का विश्वस्त बालसखा वीर था।

इन साथियों के साथ शिवाजी स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने

लगा। यथावसर क्षत्रधर्म में शिक्षित होने के लिये किलों पर भयानक आक्रमण करता। मुगल दरबार और दक्खन के विदीर्ण होते हुए दरबारों में उसे अपनी शक्तियों के विकास का अवसर दिखाई न देता था। वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने के लिये उत्कंठित था। दादा जी कोंडदेव, उसकी इन उच्छृङ्खलताओं से चिन्तित था। कई बार शहा जी तक इसकी सूचना भी पहुंचाई। शहाजी ने चेतावनी के पत्र भी लिखे। दादा जी कोंडदेव ईमानदार प्रभावशाली प्रबन्धक था। बीजापुर दरबार और शहाजी की सेवा करना वह अपना मुख्य कर्त्तव्य समझता था। जीवनकाल का बड़ा भाग इसी भावना में बिताया था। वह शिवाजी की मनोवृत्ति को, उसकी उमंगों को समझ न सकता था। उसने कई बार शिवाजी को बीजापुर दरबार का भक्त बनकर सांसारिक ऐश्वर्य का उपभोग करने, और ऊंचे ओहदे प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया। परन्तु माता की स्वतन्त्र लोरियों, पहाड़ी प्रदेशों की उत्तुंग चोटियों की स्वाभाविक स्वतन्त्र पवन में, विकसित उमंगें-इन के सुनहरी ऐश्वर्यों से तृप्त न हो सकती थीं। वह स्वतन्त्र सिंह की भांति दुर्गम पहाड़ियां में अपना स्वतन्त्र रास्ता बनाना चाहता था। इन्हीं दिनों १६४७ ई० दादा जी कोंडदेव का देहान्त होगया। कइयों का कहना है कि शिवाजी की उच्छृङ्खलताओं तथा बीजापुर दरबार की भर्त्सनाओं से तंग आकर दादा जी ने विष खालिया। इस समय शिवाजी की आयु २० वर्ष की थी। दादा जी की मृत्यु के बाद शिवाजी स्वतन्त्र हो गया। अपनी जागीर का प्रबन्ध तथा शासन की बागडोर उसने स्वयं संभाली। एक जागीरदार के बेटे, दरबारी पिता के पुत्र ने अशिक्षित पहाड़ी किसानों को बाल-सखा बनाकर, भवानी की तलवार के चमत्कारी आक्रमणों, और सतर्क जटिल संधियुद्धों के गहरे

दांव पेचों से, साधन सम्पन्न शासनतन्त्रों को शिथिल और जीर्ण शीर्ण कर दिया। इसका रोमांचकारी वर्णन ही शिवाजी की जीवनी का चित्तसंचारी कथानक है। वर्तमान भारत को स्वतन्त्र भारत बनाने के लिये उत्कण्ठित तरुण हृदय किसानों, आदर्शवादी जमींदारों, राष्ट्रभक्त मजदूरों, और स्वाभिमानी धनी मानी भारतीयों को, स्वतन्त्र-स्वाभिमान-पूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये, शिवाजी की भांति दरबारों द्वारा सम्मानित होने के स्थान पर; भूखी-असन्तुष्ट जनता द्वारा सम्मानित होने का संकल्प धारण करना चाहिए। तभी भारत माता अपने पुत्रों को स्वतन्त्रता समानता और भातृभावना की पवित्र निर्मल शीतल जल धाराओं से अभिषिक्त देख सकेगी। यथार्थ में इस स्वतन्त्र युद्ध की तैय्यारी के लिए—भारत की पर्वतमालाओं की घाटियां, घने बीहड़ जंगलों की पगडंडियों, शहरों की गलियां; गावों की झोंपड़ियां और समतल मैदानों की निर्जन मरुस्थलियां ही पूर्व पीठिका—भूमि और शिक्षण स्थान हैं।

इनकी पैदल परिक्रमा करने वाले ही, स्वातन्त्र्य युद्ध में दीक्षित हो सकते हैं।

३

स्वातन्त्र्य युद्ध का शंखनाद्

सेनापति की नियुक्ति

शिवाजी अपने पिता की पश्चिमी जागीर पर काम करने वाले हरेक कार्यकर्ता को जानता था। दादा जी कोंडदेव के जीवन काल में ही शिवाजी अपने नाम से जागीर पर काम करने वाले नौकरों को सीधी आज्ञाएं देने लगा था। उसके मुख्य कार्यकर्ता निम्न लिखित थे। (१) श्यामराज नीलकण्ठ रांझेकर। पेशवा (chancellor) था। (२) बालकृष्ण दीक्षित मजूमदार (Accountant General) (३) सोना जी पन्त दाबीर या मंत्री (secretary) (४) रघुनाथ बल्लाल कुर्डे सबनीज (Pay master)। शहाजी ने जागीर का प्रबन्ध करने के लिये यह चार व्यक्ति १६३६ ई० में कर्नाटक से इधर भेजे थे। दादाजी कोंडदेव इनसे जागीर का काम लेता रहा। शिवाजी ने प्रबन्ध का काम हाथ में लेते ही तुकोजी घोर मराठे को अपना सर-ए-नौबत सेनापति (Commander in Chief) और नारायणपन्त को खजानची (Divisional paymaster) नियत किया। सेनापति की नियुक्ति द्वारा, शिवाजी ने स्वातंत्र युद्ध का शंखनाद किया। रणचण्डी भवानी की पूजा के लिये, स्वतंत्रता के शस्त्रधारी दीवाने सिपाहियों की टोली को सजाया। इन्हीं दिनों १६४६ ई० में शिवाजी को समाचार मिला कि बीजापुर का बादशाह मुहम्मद आदिलशाह बीमार होगया है। वह १० साल तक बीमार रहा।

इस बीमारी के कारण बादशाह दरबार तथा राज के कामकाज स्वयं न देख सकता था। प्रबन्ध का काम बेगम बारी साहिबा करती थीं। राज्य के दूरस्थ प्रदेशों में—कर्नाटक आदि प्रान्तों में सरदार लोग स्वेच्छापूर्वक यथावसर प्रदेशों को बीजापुर में शामिल कर रहे थे।

शिवाजी ने बीजापुर दरबार की इस निर्बलता से लाभ उठाने का संकल्प किया। १६४६ ई० में तोरण का किला जीतने के लिये बाजी पसालकर, येसाजो कङ्क और ताना जी मालसरे को मावलों की पैदल टुकड़ी के साथ भेजा। बीजापुर का सरदार इनके सामने टिक न सका। तोरण का किला शिवाजी के अधीन हो गया। यहां के सरकारी खजाने से लगभग दो लाख की सम्पत्ति मिली। इस किले से ५ मील पूर्व की ओर पहाड़ियों की इसी तलैटी पर राजगढ़ नाम का नया किला बनाया। यह किला पहाड़ी भाग की क्रमशः एक दूसरे से ऊंची, तीन उच्च भागों पर खड़ी की गई, एक दूसरे के पीछे तीन दीवारों से, घेर कर सुरक्षित किया गया। बीजापुर दरबार में भी यह समाचार पहुंचे। शिवाजी ने दरबारी आदमियों को चतुराई से, अपने साथ मिला लिया। शहाजीने भी तोरण किले के किलेदार की अयोग्यता और शिवाजी की बीजापुर दरबार की भक्ति की चर्चा कर दरबार के क्रोध को शान्त किया। दादाजी कोंडदेव की मृत्यु के बाद शिवाजी ने यत्न किया कि पूना सूपा की जागीर को अपने अधीन कर उसे एक संगठित प्रदेश के रूप में एक शासनतंत्र के नीचे रखा जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति में शहाजी की दूसरी धर्मपत्नी का भाई शम्भुजी मोहिते बाधक था। वह शहाजी की ओर से सूपा की जागीर में रहता था। दादा जी के जीवन काल में कोई अड़चन पैदा न हुई। परन्तु

दादाजी कोंडदेव की मृत्यु के बाद शम्मा जी मोहिते ने शिवाजी की आज्ञा मानने से इनकार किया और शहाजी से सीधी आज्ञा लेकर काम करना चाहा। शिवाजी इस आज्ञाभंग को नहीं सह सकता था। शिवा जी ने मौका देखा। आमोद प्रमोद के निमित्त उसको मिलने गया। आज्ञा मानने से इन्कार करने पर उसको गिरफ्तार कर लिया। उसकी सम्पत्ति छीन कर अपने आधीन कर ली और उसे शहाजी के पास भेज दिया। सूपा के प्रदेश को भी अपनी जागीर में मिला लिया। चाकण किले के किलेदार फिरंग—जी नारसला, जागीर के पूर्वी भागों के थाना और बारामती के सरदारों ने भी शिवाजी की आधीनता स्वीकार कर ली। पूना से ११ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कोंडाणा का किला, आदिलशाह के सूबेदार को अपने साथ मिलाकर, अपने आधीन कर लिया।

पूना से १८ मील दक्षिण पूर्व की ओर पुरंदर का अभेद्य दुर्ग था। बीजापुर दरबार की ओर से इस किले पर नीलो निकण्ठ नायक नाम का ब्राह्मण तैनात था। इस परिवार के लोग चिरकाल से इस किले के आसपास के प्रदेशों में प्रबन्ध करते थे। नीलोनिकण्ठ कठोर प्रकृति का पुरुष था। अपने छोटे भाई पिलाजी और शङ्करजी को इस जागीर का किसी प्रकार का हिस्सा न देता था। इन दोनों ने शिवाजी को मध्यस्थ होकर फैसला करने के लिये निमंत्रित किया। दिवाली के दिन अतिथि के रूप में शिवाजी को किले में निमंत्रित किया। तीसरे दिन दोनों भाइयों ने अचानक तीनों को बेड़ियों में बांधकर शिवाजी के सामने उपस्थित किया। शिवाजी ने तीनों भाइयों को गिरफ्तार कर लिया और किले को अपने आधीन कर नीलोजी के सब नौकरों तथा पहरेदारों को निकाल दिया। उनके स्थान पर अपने मावले सरदारों को किले

का रक्षक नियत किया। इसी सिलसिले में रोहिरा, तिकोना, (पूना के उत्तर पश्चिम) लोहगढ़ आदि किलों को भी अपने आधीन कर लिया।

× × ×

इसके बाद शिवाजी ने उत्तर कोंकण में प्रवेश किया। कल्याण ज़िला में बीजापुर दरबार की ओर से मुल्ला अहमद नाम का अरब निवासी विदेशी सूबेदार शासन करता था। बीजापुर के बादशाह की बीमारी के कारण, इस सरदार को बीजापुर में रहना पड़ा। उसके पीछे इस प्रदेश का शासन प्रबन्ध शिथिल हो गया था। जनता में असन्तोष फैलने लगा। इसी समय आबाजी सोनदेव के आधीन, मराठे घुड़सवारों ने इस प्रदेश पर हमला किया। कल्याण और भींडी नाम के समृद्ध नगरों से पर्याप्त सम्पत्ति प्राप्त की। माहली का किला भी जीत लिया। कल्याण का शहर और थाना के कुछ भाग शिवाजी के आधीन हो गये। शिवाजी के वीर सिपाही दक्षिण की ओर बढ़ते २ कोलावा ज़िला में पहुंचे। यहां के स्थानीय सरदारों ने मुसलमानो शासकों से स्वतंत्र होने के लिये शिवाजी को निमंत्रित किया। सूर्यगढ़, बीरवाड़ी, ताला धोसलगढ़ भूरप, मंगोही किलों के साथ कैरो (रायगढ़) के अभेद्य किले को भी अपने आधीन किया। यह रायगढ़ ही शिवाजी की राजधानी बना। इस प्रकार जंजीरा के अबिसीनियनों को कोलावा ज़िले का पूर्वी भाग भी शिवाजी के आधीन हो गया। आवश्यकतानुसार इन स्थानों पर वीरवाड़ी और तिगोना में (रायगढ़ से ५ मील पूर्व की ओर) दुर्गम पहाड़ी किले बनाए गये। शिवाजी ने उत्तर कोंकण के इन विजित प्रदेशों

का प्रबन्ध करने के लिये आबाजी सोनदेव को यहां का शासक नियत किया।

× × ×

शिवाजी के इन कार्यों से बीजापुर दरबार में खलबली मच गई। शिवाजी की प्रगति को रोकने के उपाय सोचे जाने लगे। शहाजी बीजापुर दरबार की ओर से कर्नाटक में शासन प्रबन्ध करता था। दरबार ने उन पर दबाव डाल कर शिवाजी की रोकथाम करनी चाही। बीजापुर दरबार की फौजें शहाजी के निरीक्षण में जिंजी किले को जीतने में जुटी हुई थीं। परन्तु इन्हें सफलता नहीं रही थी। शहाजी ने अपना आदमी भेजकर बीजापुर के नवाब मुस्तफ़ाखां से छुट्टी मांगी और कहा कि अनाज मंहगा हो गया है। सिपाही थक गये हैं। अतः वह देर तक इधर इस युद्ध को जारी नहीं रख सकता। नवाब मुस्तफ खां ने बाजीराव घोरपड़े और जसवन्तराव आसदखानी को सेना के साथ, शहाजी को गिरफ्तार करने के लिये भेजा। शहाजी रात के आमोद प्रमोद के कारण प्रातःकाल अभी सो ही रहा था कि बाजीराव घोरपड़े ने उसके शिविर पर आक्रमण कर दिया। शहाजी बचाव के लिये घोड़े पर सवार होकर अकेला निकल भागा। बाजीराव घोरपड़े ने उसका पीछा किया, और उसे गिरफ्तार कर नवाब के सामने पेश किया। बीजापुर के बादशाह आदिलशाह ने अफजलखां को शहाजी की सम्पत्ति जब्त करने और उसे बीजापुर दरबार में हाजिर करने के लिये भेजा। शहाजी बेड़ियों और जंजीरों में जकड़ा हुआ बीजापुर दरबार में लाया गया। वहां उसे कैद किया गया। उसकी कोठरी के दरवाजों में भी ईंटें चुनी जाने लगीं। इस प्रकार उसे भांति

भांति से, अपने पुत्र शिवाजी को राजद्रोही कारनामों से रोकने के लिये, तंग किया जाने लगा।

× × ×

राजद्रोही पुत्र के विद्रोही कार्यों के कारण राजभक्त पिता को कैदी बनना पड़ा। अदूरदर्शी, अत्याचारी अन्यायी शासकों ने पुत्र के पापों के लिये पिता को – उसकी राजसेवाओं की उपेक्षा करके, कालकोठरी में डालकर भयंकर से भयंकर अत्याचारों की भूमिका बांधीं। अत्याचारी स्वेच्छाचारी सरकारें, इस प्रकार के व्यवहार करने में संकोच नहीं करतीं। स्वेच्छाचारी शासकों का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है। शिवाजी के सामने विषम समस्या उपस्थित थी। शिवाजी इससे विचलित नहीं हुआ। उसने मुगल बादशाह के पुत्र मुराद बख्श के पास अपना प्रतिनिधि भेजकर उसे बीजापुर दरबार के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया और उसे आदिलशाही को मुगलदरबार के आधीन करने की आशा दिलाई। जिस समय शहाजी कैद में था—उस समय बीजापुर दरबार ने बाजीश्यामराज को १०००० सिपाहियों के साथ शिवाजी को गिरफ्तार करने के लिये कोंकण में भेजा। शिवाजी चौल के प्रदेश में लूटमार कर रहा था। श्यामजी उसे गिरफ्तार न कर सका। इसके विपरीत शिवाजी ने अपनी टुकड़ी भेजकर बाजीश्याम की सेना पर छापे मार कर उसे वापिस भेजा। बीजापुर दरबार के अधिकारियों को इसकी भनक मिली। बीजापुर दरबार के शरजाखां और रणदुल्लाखां ने बीच में पड़कर शहाजी को कैद से छुड़ा दिया। शिवाजी ने भी शहाजी के जीवनकाल तक बीजापुर दरबार के प्रदेशों पर आक्रमण न करने का आश्वासन दिया। जीजी का किला जीतने के बाद शहाजी को रिहा कर दिया गया। कैद

से छुटकर शहाजी तुंगभद्रा प्रदेश में रहा और वहीं से अपनी जागीर का प्रबन्ध करता रहा।

१६४६–१६५५ ई० तक शिवाजी ने बीजापुर दरबार के किसी प्रदेश पर आक्रमण नहीं किया। यह समय विजित प्रदेशों को सुदृढ़ और सुरक्षित करने में व्यतीत किया। शिवाजी अनुभव करता था कि जब तक जावली का प्रदेश नहीं जीता जायेगा और इसे मराठा मंडलमें शामिल नहीं किया जायगा, तब तक यह विजित प्रदेश सुरक्षित नहीं हैं। इस लिए शिवाजी जावली पर आक्रमण कर. उसे जीतने की तैयारियों में लग गया।

× × × ×

चन्द्रराव मोरे का खून

सतारा ज़िले के उत्तर पश्चिमी कोने में जावली नाम का ग्राम है। यह प्रदेश पहाड़ों और जंगलों से छाया हुआ है। जावली से कोंकण की ओर छोटे २ असंख्य नाले बहते हैं। १६ वीं सदी में मोर नाम के मराठा वंश को बीजापुर दरबार से जावली का प्रदेश, वीरता के पुरस्कार में जागीर के तौर पर मिला था। इनके पास १२,००० पदाति सेना थी। यह सिपाही मावलों की टक्कर के थे। बीजापुर दरबार ने इस वंश के वीर पुरुषों की वीरता से प्रसन्न होकर इन्हें 'चन्द्रराव' की पदवी दी थी। १६५२ ई० में कृष्णाजी बाजी जावली का शासक था। यह प्रदेश सैनिक दृष्टि से शिवाजी के लिये महत्वपूर्ण था। यहां के मराठे तथा इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति शिवाजी के राज्य विस्तार की योजना में अत्यन्त सहायक थी। शिवाजी ने रघुनाथ बल्लाल कुर्दे को १२५ चुने हुए वीरों के साथ जावली भेजा। उसने कृष्णाजी के सामने प्रस्ताव किया कि वह अपनी लड़की का विवाह शिवाजी के साथ करदे।

इधर विवाह की बातचीत चल रही थी। इसी बीच में रघुनाथ बल्लाल ने वहां की स्थिति तथा जावली के सरदार के स्वभाव तथा रहन सहन का पूरा२ पता लिया। उसे मालूम हुआ कि यह शराबी है, और असावधान स्वभाव का है। शिवाजी के पास सूचना भेजी और उसे परिस्थितियों से लाभ उठाने के लिये, सेना के साथ समीपवर्त्ती प्रदेश में उपस्थित रहने की सलाह दी। बल्लाल ने चन्द्रराव मोरे से दूसरी भेंट एकान्त में की। प्रारम्भ २ में विवाह सम्बन्धी बातें विस्तार के साथ होती रहीं। चन्द्रराव का ध्यान इन बातों में लगा था कि बल्लाल ने एक दम अचानक खंजर खींच ली और चन्द्रराव पर हमला कर उसे यमलोक भेज दिया। उसके भाई सूर्यराव को भी ज़ख्मी किया। बल्लाल के साथी मराठे सिपाही ने सूर्यराव का भी प्राणान्त कर दिया। खूनी घातक एक दम दरवाजे से बाहर निकल भागे और समीप के जंगलों में सुरक्षित स्थान पर छिप गये।

शिवाजी भी बल्लालपन्त के संकेत पर तीर्थ यात्रा के निमित्त सेना सहित महाबलेश्वर पहुंचा हुआ था। चन्द्रराव की हत्या का समाचार मिलते ही वह जावली पहुंचा और जावली के किले के संरक्षकों पर आक्रमण कर दिया। छः घंटों तक घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर लड़ने वाले मराठे सिपाही थे। चन्द्रराव के दो पुत्रों और परिवार को कैद कर लिया गया। चन्द्रराव मोरे के सम्बन्धी, जागीर के प्रबन्धक हनुमन्तराव मोरे ने समीप के गांव में सेना इकट्ठी कर शिवा जी का मुकाबला करना चाहा। शिवा जी ने हनुमन्तराव का खून करने के लिये शम्भुजी कावजी नाम के मराठे सरदार को संदेश भेजने के बहाने से भेजा। दोनों की एकान्त में भेंट हुई। १६५५ ई० में कावजी ने इस पर भी खंजर का वार कर

इसे परलोक भेजा। इस प्रकार जावली का सारा प्रदेश शिवाजी के आधीन हो गया। अब शिवाजी को दक्षिण कोंकण तथा कोल्हापुर प्रदेश पर आक्रमण करने से रोकने वाला कोई नहीं रहा। कई ऐतिहासिकों का कहना है कि मोर के दोनों पुत्रों को पूना ले जाकर मार दिया गया। मोर वंश के शेष व्यक्ति इधर उधर तितिर बितिर हो गए। १६६५ ई० में महाराजा जयसिंह ने शिवाजी को पराजित करने के लिये इन मोरों से भी सहायता ली। शिवाजी को इस प्रदेश के जीत लेने से अपनी सेना के लिये लड़ाके सिपाही और कई वर्षों से संचित मोरों का कोष भी मिला।

जावली से दो मील पश्चिम की ओर प्रतापगढ़ नाम का नया पहाड़ी दुर्ग बनाया। इस किले में अपनी आराध्य देवता भवानी की प्रतिमा स्थापित की। तुलजापुर की भवानी प्रतिमा दूर थी। शिवाजी ने समय समय पर प्रतापगढ़ की भवानी को अनेक कीमती उपहारों से सुसज्जित किया।

जावली के पश्चिम की ओर कोंकण के मैदान में, रतनगिरि ज़िले के मध्य में स्थित शृंगेरपुर पर शिवाजी ने आक्रमण किया। आस पास के छोटे मोटे सरदारों को भी अपने आधीन किया। इस प्रकार से रत्नगिरि का पूर्वीय भाग भी शिवा जी के आधीन हो गया।

शिवाजी ने यह खून क्यों कराया—शिवाजी का इस हत्या से प्रत्यक्ष कितना सम्बन्ध था। मोर जाति के वीर मराठे थे—शिवाजी ने साम द्वारा, शान्ति द्वारा—मोर सरदारों को अपने साथ मिलाने का यत्न किया—मोर घराने की कन्या के साथ विवाह करने का प्रस्ताव भी किया—जब जावली को अपने साथ मिलाने

का कोई रास्ता न मिला—दूत को भेजा—दोनों में कहा सुनी हो गई—मोरों ने शिवाजी के महाबलेश्वर, सेनासहित आने पर आपत्ति की—शिवा जी के दूत ने मोरों पर शिवाजी के साथ विश्वास घात कर आक्रमण करने का अपराध लगाया। बातों बातों में तलवारें खिंच गईं। मोर के निवास स्थान पर शिवाजी के वीर दूत की तलवार का वार अचूक रहा। शिवाजी ने इस अवसर को नहीं चूका। श्रीकृष्ण के पद चिह्नों पर चलते हुए, ब्राह्मण वेश धारण किये हुए भीम, अर्जुन द्वारा किये गये जरासंध वध की भांति, अपने राज्य विस्तार के कंटक को दूर किया। आस पास के छोटे मोटे सरदारों को, शराब पीने वाले मोर सरदारों तथा बीजापुर दरबार के अत्याचारों से मुक्त किया। यदि मोर सरदार शान्ति पूर्वक शिवाजी का साथ देते – तो शिवाजी के दूत को एक मराठे भाई के खून से अपनी तलवार रक्त रंजित न करनी पड़ती। शिवा जी के इस खूनी वार से आस पास के मराठे सरदारों तथा बीजापुर दरबार पर भारी आतंक छा गया। प्रतिपक्षी लोग शिवाजी और उसके अनुयाइयों की छाया—को—मौत की छाया समझ कर भयभीत होने लगे।

× × × ×

राजनीति की शतरंजी चालें

१६५३ ई० के बाद औरंगजेब दक्षिण भारत का शासक बन कर आया। इसने इधर आते ही बीजापुर पर आक्रमण करने की तैय्यारियां शुरू कीं। शिवाजी ने इस मौके से लाभ उठाकर मुगलों के साथ मिल कर बीजापुर दरबार से छीने हुए प्रदेशों को स्थिर रूप में अपने आधीन करने के लिये मुगल बादशाह से सन्धि चर्चा शुरू की। अपने दूत औरंगजेब के पास भेजे। बीजापुर दरबार को

इसका पता चला। बीजापुर दरबारने शिवाजी और मुगल दरबार को आपस में लड़ाने के लिये शिवाजी को मुगल प्रदेशों पर हमला करने की प्रेरणा की। औरंगजेब इस समय अपनी सेनाओं के साथ बेदर में रुका हुआ था।

शिवाजी ने मीनाजी भोंसले और काशी नाम के मराठे सरदारों को, तीन हजार सिपाहियों के साथ भीमा नदी पार कर, चमरगुंडा और रमीन के प्रदेशों के मुगलाई ग्रामों को लूटने के लिये भेजा। इन सरदारों ने अपने तूफानी हमलों से इस प्रदेश को खूब लूटा और अहमदनगर शहर तक वार किया। दूसरी तरफ़ शिवाजी स्वयं जुनार के मुगलाई प्रदेश में लूट मार कर रहा था। एक रात को जुनार शहर की चार दीवारी पर शिवाजी चुपचाप रस्सी की सीढ़ियों से चढ़ गया। पहरेदारों को मौत के घाट उतार कर वहां से ३ लाख हून, २०० घोड़े और कीमती जवाहरात और कपड़े लूट में ले गया। इन समाचारों ने औरंगजेब को हैरान कर दिया। उसने अपने सरदारों को मराठा विद्रोही सरदारों को मुगल प्रदेशों से निकाल कर, शिवाजी के प्रदेशों पर आक्रमण करने का हुक्म दिया। मुलतफातखान और नसीरीखान ने मराठे सरदारों की लूट मार की रोक थाम कर, अहमद नगर और जुनार को मराठों से खाली किया। इन्हीं दिनों १६५७ ई० में शाहजहां की बीमारी के कारण शाहजहां के बेटों में राजगद्दी का उत्तराधिकारी बनने के लिये युद्ध शुरू हो गया। इधर बीजापुर दरबार ने मुगलों से संधि कर ली। यह अवस्था देख कर शिवाजी ने मुगलों के साथ अकेले युद्ध करना व्यर्थ समझा और रघुनाथ बल्लाल को औरंगजेब के पास सुलह के लिये भेजा। औरंगजेब राजगद्दी के युद्धों के लिये उत्तर भारत की यात्रा करने को तैय्यार हो चुका था। सोनाजी को शिवाजी

के प्रतिनिधि रूप में, मुगल दरबार में भेजने की स्वीकृति देकर पूना सूपा कोंकण की जागीरों पर शिवाजी का अधिकार स्वीकार किया।

परन्तु दूसरी ओर गुप्त रूप से, औरंगजेब ने अपने सरदार मीरजुम्ला और बीजापुर के बादशाह आदिलशाह को हुक्म दिया कि शिवाजी को सिर मत उठाने दो। उसे मुगलाई प्रदेशों से दूर कर्नाटक में, जागीर देकर उसकी सेवा से फ़ायदा उठाओ। पूना कोंकण आदि प्रदेशों से निकाल कर उस के किलों को जीत लो। मुगल दरबार और बीजापुर दरबार मिल कर शिवाजी का दमन करने की तैय्यारियां करने लगे। अस्तु ! शिवाजी शत्रुओं की इन चालों को समझता था—उसने औरंगजेब के दक्षिण से उत्तर भारत को रवाना होते ही, बीजापुर दरबार की अन्दरूनी निर्बलताओं से लाभ उठाकर राज्य विस्तार के लिए अपने वीर सिपाहियों को तैनात किया। इधर बीजापुर दरबार ने भी औरंगजेब को दक्खिन से उत्तर जाते देखकर, बीजापुर दरबार के प्रधान मन्त्री खवासखान और बेगमबारी साहिबा ने विद्रोही सरदारों का दमन करना शुरू किया। दरबार की नज़र शिवाजी की उच्छृङ्खलताओं पर पड़ी। शिवाजी का दमन करने के लिए सेना भेजने का निश्चय किया गया। परन्तु शिवाजी के चमत्कारी जादू के कारण उस सेना का सेनापति बनने को कोई उद्यत नहीं होता था। बीजापुर दरबार ने इस काम के लिये बीजापुर दरबार के विश्वासपात्र अनुभवी सरदार अफजलखान को नियत किया।

४

अफज़लखां की तलवार—और शिवाजी का बाघनखा

*आततायिन मायान्तं हन्यादेवाविचारयन्

बीजापुर दरबार में अफजलखान (अब्दुल्ला मराठा) अपनी शूरवीरता, दूरदर्शिता के लिये प्रसिद्ध था। बीजापुर की बड़ी बेगम बारी साहिबा ने शिवाजी का दमन करने के लिये १०००० सिपाहियोंके साथ इसे बुला भेजा और हुक्म दिया कि शिवाजी का सिर दरबार में हाज़िर करो। अफजलखां ने भरे दरबार में, शिवाजी को दरबार में कैदी के रूप में पेश करने की प्रतिज्ञा की। अफजलखां चाहता था कि रक्त पात किये बिना कुटिलनीति द्वारा ही शिवाजी को हथिया ले। शिवाजी की सेनाओं के चुपचाप छुपे गुरिल्ला हमलों से भी वह घबराता था। उसने तलवार और कुटिलनीति दोनों के प्रयोग करने का निश्चय किया। १०,००० घुड़सवार फौज के साथ बीजापुर से प्रस्थित हुआ। बीजापुर से अफजल की सेना उत्तर की ओर तुलजापुर की ओर बढ़ी। तुलजापुर का मंदिर महाराष्ट्र के पवित्रतम मंदिरों में से एक विशेष मंदिर माना जाता है। यहां भोंसला वंश की अधिष्ठात्री देवी भवानी की प्रतिमा स्थापित थी। अफजलखां ने सोचा कि मौका देख कर या तो सीधा मराठा राष्ट्र के पूर्वी भाग से सीधा पूना पहुंच कर शिवाजी के दक्षिणी किलों को घेरा जाय। अथवा शिवाजी को किसी प्रकार से खुले

---

* हत्यारे घातक को मारने से मत चूको।

मैदान में रणांगण में बीजापुर की भारी साधन सम्पन्न सेना से मुकाबला करने पर बाधित किया जाय। शिवाजी की भावनाओं को ठेंस पहुंचाने और उसे प्रत्यक्ष आक्रमण के लिये उत्तेजित करने के लिये अफजलखां ने तुलजापुर की भवानी प्रतिमा को तोड़ कर उसे चक्की में पिसवा कर मट्टी मट्टी कर दिया। इतने में उसे पता लगा कि शिवाजी राजगड़ को छोड़ कर प्रतापगढ़ के किले में आगया है। इस पर अफजलखान ने पूना की ओर प्रस्थित होने के स्थान पर अपनी सेनाओं की बागडोर प्रतापगढ़ की ओर मोड़ी। लौटते हुए रास्ते में तीर्थ स्थानों में मूर्तियों तथा ब्राह्मणों को अपमानित करते हुए वह राक्षस सतारा से उत्तर की ओर २३ मील पर 'वाई' नाम के स्थान पर पहुंचा। यह प्रदेश बीजापुर दरबार के आधीन था। यहीं अफजलखान ने अपना शिविर लगाया। यहां ठहर कर उसने शिवाजी को पर्वतीय प्रदेशों से बाहर मैदान में लाने के लिये, कई प्रकार के रंग ढंग किए। कई स्थानीय मराठा सरदारों द्वारा शिवाजी को जीते जी गिरफ्तार करने की भी कोशिश की। परन्तु शिवाजी अपनी तथा शत्रु की शक्ति को खूब समझता था। वह समझता था कि दूसरे के मैदान में जाकर विजय पाना कठिन है। वह इस कोशिश में था कि बीजापुर की सेनाएं पहाड़ियों में घिर जायें और वहां मराठे अपने अपने गुरिल्ला आक्रमणों से उसे हैरान करें। अफजलखां ने विठोजी हैबतराव नाम के मराठे सरदार को अपने सिपाहियों के साथ जावली के पास बीजापुर की सेना के साथ आने की आज्ञा दी। खांडो जी खोपड़े नाम के सरदार ने वहीं पहुंच कर रोहिडखोर इलाके की देशमुखी मिलने की आशा पर, शिवाजी को गिरफ्तार कर हाजिर करने की लिखित प्रतिज्ञा की। अफजलखां मराठे

सरदारों की सहायता से शिवा जी को गिरफ्तार करने की कोशिश में था वह मुगल बादशाहों की भांति राजपूताना के राजपूत राजाओं को एक दूसरे से लड़ाकर, भेद नीति द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करना चाहता था। मुगल बादशाह सफल होगये। क्योंकि राजपूत राजाओं की प्रजाएं मूक और निर्जीब थीं। राजपूत राजाओं और उनकी प्रजाओं के बीच में कई प्रकार की भेद भाव की दीवारें खड़ी थीं। राजपूताना की जनता राजपूत राजाओं की मुसीबतों को अनुभव नहीं कर सकती थीं। ठाकुरों और सरदारों ने—जनता को जागृत नहीं होने दिया था। अकेले उदयपुर के महाराणा प्रताप ने राजपूताना की साधारण जनता भीलों के साथ—सीधा सम्बन्ध रखा। वह उसके लिए मर मिटने को तैयार हो गये, और कोई भी प्रबल बादशाह चित्तौड़ की स्वाधीनता की पताका को नीचे न झुका सका। महाराष्ट्र में शिवाजी के व्यक्तित्व ने—साधारण मराठा जनता को शिबा जी का भक्त बना दिया था। इने गिने मध्यम श्रेणी के मराठा सरदारों की कुछ न चलती थी। शिवा जी की मूर्त्ति को देखते ही, उसका शंखनाद सुनते ही मराठा जनता—दक्खनी और मुगलाई बादशाहों को छोड़कर शिवाजी की जय जय करने लगती थी। अफजलखान के धार्मिक अत्याचारों ने, उसकी मूर्त्ति-ध्वंस की नीति ने, मराठों को शिवाजी का अनन्य भक्त बना दिया। जनता की इस अटल भक्ति के कारण अफजलखान की भेद नीति काम न आई। लाचार उसने साम-पूर्ण छलनीति द्वारा शिवा जी को जीतना चाहा। कृष्णा जी भास्कर नाम के दूतको शिवा जी के पास निम्नलिखित संदेश के साथ भेजा।

"तुम्हारे पिता मेरे गहरे दोस्त थे। तुम मेरे लिये अजनवी

नहीं हो। मेरे पास आओ। मुझे मिलो। मैं अपने प्रभाव से तुम्हें कोंकण का प्रदेश और वह किले जो इस समय तुम्हारे पास हैं, तुम्हारे नाम बीजापुर दरबार से भी स्वीकृत करा दूंगा। बीजापुर दरबार से तुम्हारे लिये अनेक प्रकार के फौजी और दीवानी सम्मान सूचक उपाधियां तथा पुरस्कार दिलाऊंगा। यदि तुम चाहोगे तो तुम्हें राजदरबार में सम्मान का स्थान दिया जायगा यदि तुम स्वयं उपस्थित न होना चाहोगे—तो इससे मुक्त भी किया जा सकेगा।"

शिवा जी ने कृष्णाजी भास्कर का ब्राह्मणोचित सत्कार किया। एकान्त में उसकी धार्मिक भावनाओं को—तुलजापुर की प्रतिमा भंग—आदि की घटनाएं सुना कर उत्तेजित किया। अफ़ज़ल खान के दिल की टोह ली और पता लिया कि अफ़-ज़ल उसके साथ छल बल का प्रयोग करने में संकोच न करेगा। दूत के साथ पंडित गोपीनाथ पन्त को भेजा और अफ़ज़ल खान के साथ भेंट करने के लिये सहमति प्रकट की और अफ़ज़ल खान से अपनी जीवन रक्षा का आश्वासन चाहा। शिवा जी ने पं० गोपीनाथ द्वारा भेंट के समय अपनी ओर से अफ़ज़ल खान को रक्षा का आश्वासन दिया। साथ ही उसे अफ़ज़ल खान के सैन्य बल तथा उसके असली भाव का पता लेने के लिये साव-धान किया; और उसे अफ़जल खान के पास भेजा।

पंडित गोपीनाथ ने मिलनसार नीति और चतुरता से अफ़जल खां के दरबारियों से पता लिया कि उसका असली भाव भेंट द्वारा शिवा जी को गिरफ्तार करने का है। पंडित गोपी नाथ ने वहां से लौट कर शिवा जी के सामने सारी स्थिति रखी,

और उसे अफ़जल खान के द्वारा संभावित छल से सावधान तथा सतर्क कर—स्वयं मौके से लाभ उठाने का संकेत किया।

शिवाजी ने सारी स्थिति को समझ लिया। अफ़जलखान चाहता था कि शिवाजी—उसे वाई के मैदान में मिले—शिवाजी ने यह स्वीकार नहीं किया और प्रतापगढ़ किले के समीप भेंट का स्थान निश्चित करने पर आग्रह किया, और अफ़जल खान से अपनी जीवन रक्षा का आश्वासन चाहा। अफ़जल खान ने इसे भी स्वीकार कर लिया। शक्ति मद और उच्च स्थिति के अभिमान में अफ़जल खान इस मांग को टाल न सका। वह समझता था, उसे भरोसा था कि एक बार—एकान्त में भेंट हो जाय। मैं उसे अपने हाथों—चंगुल से निकलने न दूंगा। जाल में फंसी मछली निकल नहीं सकती। रणांगण में न सही—एकान्त भेंट में ही उसे तलवार की धार उतार कर सदा के लिये बीजापुर दरबार के कंटक को उखाड़ दूंगा। अफ़ज़लखान ने—इस उत्सुकता और उत्कंठा में—अपना स्थान मैदान छोड़ कर—पहाड़ियों से घिरे स्थान पर भेंट करना स्वीकार किया। मगरमच्छ ने पानी से बाहर—रेतीले पथरीले मैदान में शिवाजी को गिरफ्तार करने का—जीते जी पकड़ने का संकल्प किया। शिवा जी ने वाई से प्रताप गढ़ किले के बीच के घने जंगलों के बीच में एक रास्ता बनाने की आज्ञा दी। रास्ते के दोनों ओर स्थान २ पर बीजापुर की सेना के सिपाहियों के लिये खाने पीने के सामने जुटाए गये रतौंडी दर्रे के पास (महाबलेश्वर के बौम्बेया पायण्ट के नीचे) अफ़जल खान पार नाम के गांव की ओर बढ़ा। यह गांव प्रताप गढ़ किले से दक्षिण की ओर एक मील पर है। अफ़ज़ल खान के सिपाहियों ने कोपना नदी के निकास तक, टोलियां बनाकर

पानी के छोटे मोटे तालाबों के आस पास डेरे डाल लिये। गोपी नाथ पन्त ने शिवाजी को अफ़ज़ल खान के पार स्थान पर पहुंचने की सूचना दी। अगले दिन भेंट का समय नियत किया गया। प्रताप गढ़ किले के नीचे—और कोपना की घाटी पर अवस्थित ऊंचाई की समतल भूमि पर तम्बुओं पर घिरी हुई चित्रित सुसज्जित चांदनी खड़ी की गई। आलीशान गलीचे, दरियां तथा कीमती राजोचित शोभा वाले, आसन मंच सजाए गए।

शिवाजी ने अपने आप को इस भेंट के लिये तैयार किया। अंगरखे के नीचे लोहे का कवच पहना। सिर पर लोहे की टोपी के ऊपर पगड़ी बांधी। बांए हाथ की अंगुलियों में दो अंगूठियों में बांध नखा और दाईं बांह की आस्तीन में बिछुआ रखा।

अपने साथ जीवमहाल और शम्भ जी कावजी नाम के मराठे सरदारों को लिया। दोनों विश्वास-पात्र शूरवीर और तलवार चलाने के द्वन्द्व युद्ध में अपने समय के इने गिने वीरों में से थे। त्रिमूर्ति निश्चित कार्य के लिये प्रताप गढ़ से चली। रास्ते में राजमाता ने, तीनों को वात्सल्य रस सिंचित करके आशीर्वाद दिया। त्रिमूर्ति प्रतापगढ़ की तलैटी पर जाकर प्रतीक्षा करने लगी।

अफ़ज़लखान पालकी में सवार होकर दो सिपाहियों और सैय्यद बन्दा नामक प्रसिद्ध तलवार बीर के साथ भेंट के स्थान की ओर प्रस्थित हुआ। शेष सेना पार स्थान पर रुकी रही। साथ में कृष्णा जी भास्कर और गोपीनाथ पन्त भी थे। शिविर में पहुंचते ही अफ़जल खां—उस शामियाने की शान-शौकत व सजावट को देख कर खिसियाया और जागीरदार के लड़के की इस आनशान की सजावट पर खिजावट प्रकट की। गोपी नाथ पन्त ने वाक्चातुरी से उत्तर दिया कि यह सब सामान

भेंट रूप में, भेंट के बाद शिवाजी बीजापुर दरबार की नज़र में पेश करेगा। शिवा जी के पास शीघ्र आने के लिये दूत भेजे गये। शिवा जी ने दूर से ही सैय्यद बन्दा को देख कर कहा कि इसे अफ़ज़ल खान के शिविर से दूर रखना चाहिए। क्योंकि नियमानुसार दोनों ओर के दोनों रक्षक सिपाही ही होने चाहिए थे। शिवा जी के प्रतिवाद पर उसे रोक दिया गया। भेंट के लिये निश्चित शिविर में दोनों पहुंचे। दोनों ओर चार आदमी उपस्थित थे। दो दो सशस्त्र सिपाही, एक दूत तथा स्वयं शिवा जी और अफ़ज़ल खान। अफ़ज़ल खान की कमर में तलवार लटक रही थी। शिवाजी निःशस्त्र था। अफ़ज़ल खां ऊंचे मंच पर था। शिवा जी मिलने के लिये मंच पर चढ़ा और अफ़ज़ल खां के सामने दरबारी सरदारों की भांति सन्मान प्रकट करने के लिये झुका। अफ़जल खान अपने स्थान से उठा। कुछ क़दम आगे बढ़ा, और भुजाएं फैलाकर शिवा जी का आलिंगन करने लगा। शिवाजी क़द में छोटा था। अफ़जल खान के कन्धों तक पहुंचता था। अफ़ज़ल खां ने एकदम अपनी पकड़ को सख्त किया शिवा जी की गर्दन को बाएँ हाथ की पकड़ से दबोचा, और दांए हाथ से पास लटक रही तलवार को खींच कर शिवाजी की कमर पर वार किया। शिवा जी इस अचानक आक्रमण से गले में दबोचा हुआ कहराने लगा—परन्तु एक दम अपने आपको संभाल लिया—गुरुरामदास के अमोघ 'राम मन्त्र' का स्मरण किया। "शठेशाठ्यं" का स्मरण किया। एकदम बाएं हाथ को अफजल खां की कमर में भोंक कर उसकी अंतड़ियों को फाड़ दिया और दाएं हाथ के बिछुए को उसके दूसरे पार्श्व में भोंक दिया। आहत अफजलखान को अपनी पकड़ ढीली करनी पड़ी। शिवाजी ने

अपने को उसके चंगुल में से निकाल लिया। मंच स्थान से छलांग मार कर उतर पड़ा और बाहर खड़े अपने साथियों से जा मिला।

दोनों पक्षों के सिपाहियों में भगदड़ मच गई। सैय्यद बन्दा ने अपनी तलवार का वारकर शिवाजीको रोकना चाहा, और उसके सिर पर वार भी किया। लोहे की टोपी पर तलवार टकरा कर कुन्द हो गई। शिवा जी ने जीवमहाल नाम के मराठा सरदार से खुखरी (छोटी तलवार) लेकर उसका मुकाबला किया। इतने में जीवमहाल दूसरी तलवार लेकर आ गया और सैय्यद बन्दा की दायीं भुजा काट दी और उसे यमलोक का यात्री भी बनाया। इधर अफजलखां को पालकी में बैठाकर उसके साथी उसे शिविर की ओर ले जाने लगे। शम्भु जी कावजी ने पालकी उठाने वालों की टांगों पर अचूक गहरी चोट की—उन्होंने पालकी वहीं छोड़ दी। तत्क्षण कावजी ने अफजलखां का सिर धड़ से अलग कर दिया। कटे हुए सिर को शिवाजी के सामने पेश किया।

शिवाजी और उसके दोनों साथी प्रतापगढ़ किले के शिखर पर पहुंचे और वहां पहुंच कर उन्होंने अफजलखां के मारे जाने और स्वयं सुरक्षित वापिस पहुंचने का संकेत करने के लिये तोपों के गोले छोड़े! तोपों की आवाज़ सुनते ही रास्ते में दोनों ओर के जंगल में छिपी हुई मराठी सेना बानरों की टोलियों की भांति बाहर निकल आई और बीजापुर दरबार की सेना को चारों ओर से घेर लिया। तीन चार घंटों तक घमासान युद्ध होता रहा। मराठी सेना—रण-क्षेत्र के चप्पे चप्पे से परिचित थी। बीजापुर दरबार की सेना को भारी हार खानी पड़ी। अनेकों कैदी किये गये। खजाना तथा युद्ध सामग्री मराठी सेना के हाथ में आई। कैदियों में अफजलखां की

औरतें और उसके लड़के और लम्बा जी भोंसले और झुझार राव घोर भी थे। अगले दिन सब कैदी प्रतापगढ़ किले में शिवाजी के सामने पेश किये गये। शिवा जी ने सब कैदियों को रिहाकर उन्हें घर जाने के लिये आवश्यक सामग्री के साथ बिदा किया। मराठा सिपाहियों को उनकी शूरवीरता तथा चतुराई के लिये पारितोषक तथा भेंटें दी गईं—इस युद्ध में आहत सिपाहियों को औषधोपचार के साथ इनाम भी दिये गये। मराठा सरदारों को हाथी घोड़े और कीमती कपड़ों के साथ हीरे जवाहरात भी दिये गये।

अफजलखां को जीतने के कारण मराठी सेना ने उत्साहित होकर दक्षिण कोंकण, और कोल्हापुर के ज़िलों में आक्रमण किए। शिवाजी ने बीजापुर की सेना को हराकर पन्हाला का किला अपने आधीन कर लिया। (१६५६—१६६०)

इस विजय ने मराठी जनता में—चमत्कारी उत्साह पैदा कर दिया। बीजापुर दरबार इस पराजय से झुंझला उठा। तात्कालिक मुसलमान शासकों के अत्याचारों से पीड़ित जनता शिवाजी को अपना रक्षक समझने लगी। घटनाओं के इस क्रम में—वीरता और चतुरता की संधि को सुनहरी किरणों में, आर्य जाति को अपने भाग्योदय के सूर्य की आकर्षक दिव्य झलक दीखने लगी। वीर भूषण कवि ने—उस समय को आर्य जनता के इन भावों को अपनी कविता की झनकार के साथ प्रकट कर शिवाजी को जाति रक्षक राष्ट्रीय नेता के रूप में चित्रित किया।

× × × ×

५

शिवाजी की अग्नि परीक्षा

इस विजय ने शिवाजी तथा उनकी मंडली को मुगल दरबार और बीजापुर दरबार की सम्मिलित कोपाग्नि की परीक्षा में—डाल दिया। इस परीक्षा में—सफलता पूर्वक उत्तीर्ण होने के लिये शिवाजी को अनेकों बलिदान करने पड़े—अपने आप को हर समय दिन रात रणचण्डी की ज्वालाओं की लपटों में झुलसाए रखा।

बीजापुर दरबार के अलि आदिलशाह द्वितीय ने शिवाजी जैसे उच्छृङ्खल अदम्य विद्रोही को दमन करने के लिये स्वयं सेना के साथ रणाँगण में उतरने का निश्चय किया। इसी समय सीदी जौहर नाम के अबीसीनियन गुलाम ने बीजापुर दरबार को लिखा कि यदि दरबार उसकी कर्नूल की जागीर को स्वीकार कर ले, तो वह बीजापुर दरबार की ओर से शिवा जी का दमन करने के लिये अपनी सेवाएं देने को तैय्यार है। बादशाह ने सीदी जौहर की मांग को स्वीकार किया और उसे सलावत खां की उपाधि के साथ भारी सेना देकर शिवा जी को पराजित करने के लिये भेजा। दूसरी तरफ़ पूना ज़िले में मुगल सेनाएं शिवाजी के किले छीन रही थीं—इधर सीदी जौहर ने शिवा जी पर आक्रमण कर दिया। शिवाजी की सेनाओं को मैदान छोड़ना पड़ा—शिवाजी अपनी सेनाओं के साथ पन्हाला किले में घिर गया। शिवाजी इस समय लाचार था—उसने सीदी जौहर को गुप्त पत्र लिखकर, उसके साथ दोस्ती करने का प्रस्ताव किया। महात्वाकांक्षी—सीदी जौहर ने

शिवाजी के साथ मिलकर दक्षिण में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की आशा से शिवा जी के साथ एकान्त में भेंट करनी स्वीकार की। शिवाजी ने मध्यरात में, दो तीन आदमियों के साथ सीदी जौहर से मुलाकात की और स्वयं उसके दरबार में भी उपस्थित हुआ। वहां दोनों ने एक दूसरे की रक्षा करने की प्रतिज्ञाएं कीं। शिवाजी किले में वापिस चला गया। सीदी जौहर किले का घेरा डाले पड़ा रहा।

बीजापुर दरबार में जब यह समाचार पहुंचा—बादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और सेना लेकर स्वयं दोनों विद्रोहियों को दण्ड देने के लिये राजधानी से चल पड़ा। दूत भेजकर सीदी जौहर को अपने साथ मिलाने की कोशिश की—सफलता न हुई—बादशाही सेना मिरज तक पहुंची सेना की एक टुकड़ी कुछ आगे पन्हाला किले की ओर बढ़ी। शिवाजी—एक रात को अपने परिवार तथा ५००० सिपाहियों के साथ किले से निकल कर चला गया। पन्हाला किला बिना युद्ध के आदिलशाह के आधीन हो गया।

× × × ×

बाजी प्रभु का बलिदान

शिवा जी के किले से निकल भागने की खबर बादशाह को मिली। उसने तत्काल सीदीजौहर के बेटे सीदी अजीज और अफजलखां के बेटे फजलखान को बीजापुरी सेना के साथ शिवाजी का पीछा करने के लिये भेजा। शिवाजी ने मलकपुर के समीप पहाड़ी घाटी के गहरे नाले के प्रवेश स्थान पर बाजीप्रभु को ७०० वीरों के साथ बीजापुरी सेना का मुकाबला करने के लिये तैनात किया; और आदेश दिया कि जब तक मराठी सेना

विशालगढ़ किले में सुरक्षित न पहुँचे तब तक वह वहां बीजापुरी सेना का मुकाबला करता रहे। बीजापुर की सेना ने तीन बार आक्रमण कर बाजीप्रभु के सिपाहियों को पीछे हटा कर शिवाजी का पीछा करने के लिये रास्ता खोलने का यत्न किया। परन्तु बाजीप्रभु और उसके वीर साथियों ने—थर्मापली के वीरों की भांति कट २ कर गिरना स्वीकार किया—परन्तु बीजापुर की सेना को एक कदम भी आगे न बढ़ने दिया। बाजीप्रभु का एक २ सिपाही बीजापुर दरबार के सैंकड़ों सिपाहियों को रोक रहा था—यह वीर, जी जान पर खेल रहे थे—जान हथेली पर थी—कान विशालगढ़ किले की तोप की आवाज की प्रतीक्षा में थे। बाजीप्रभु अकेला था—उसके सामने—सीदी जौहर का बेटा और अफजलखां का बेटा खून का बदला लेने के लिये बेताब थे—परन्तु बाजीप्रभु ने जीते जी किसी को आगे न बढ़ने दिया। आखिर, चारों ओर से आक्रमण होने लगे—बाजीप्रभु जख़्मी होकर गिर गया—घाव गहरा था—चिन्ता सता रही थी—कि कहीं शिवाजी के विशालगढ़ पहुँचने से पहले—शत्रु सेना को इस घाटी में से रास्ता न मिल जाय !!! ज़ख़्मों की पीड़ा—उसे न सताती थी वह बलिदान के अमृत का पान कर—अमर हो चुका था—परन्तु शिवाजी की जीवन रक्षा की चिन्ता—उसे चिन्तित कर रही थी—इधर शिवाजी, ७०० वीर मराठों और बाजीप्रभु के—बीजापुर दरबार के साथ हो रहे संघर्ष की–घमासान, लड़ाई की, उनकी तलवारों की झनकार की–भीषणता की कल्पना कर, हवा की गति से विशालगढ़ की ओर बढ़ रहा था। बाजीप्रभु धराशायी हो चुका था—परन्तु, अभी तक प्राण—बाकी थे—शिवाजी ने अपने वीर सिपाही की इच्छा को पूरा किया। विशालगढ़ के किले से तोप दागी गई। 'शाबास बाजीप्रभु' की

ध्वनि ने आकाश को गुंजा दिया। इस आवाज को सुनकर बाजी-प्रभु ने शान्ति और संतोष के साथ प्राणों को छोड़ा। पहाड़ी घाटी, शत्रु की तलवारें—विशालगढ़ की सेनाएं बाजीप्रभु की जय के नाद को गुँजाने लगीं। हताश बीजापुरी सेना—वीर प्रभु के रक्तामृत से सींचित घाटी को पार न कर सके, और वहां से वापिस चली गईं।

६

औरंगजेब और शिवाजी

औरंगजेब उत्तर भारत में अपने भाइयों को परास्त करके और अपने पिता को राजवन्दी वनाकर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हो गया था। आलमगीर औरंगजेब बादशाह के नाम से, शासन करने लगा। सबसे पहले उसकी दृष्टि दक्षिण के स्वतन्त्र मुसलमानी और हिन्दु राजाओं की ओर गई। अफ़ज़लखान के वध तथा बीजापुर दरबार के अन्दरूनी झगड़ों ने उसको इस बात के लिये तय्यार किया कि वह शिवाजी का दमन करने के लिये अपनी सेनाओं का रुख उधर करे। इसके लिये उसने अपने अनुभवी और प्रसिद्ध सेनापति शायस्ताखां को भारी सेना के साथ शिवाजी का दमन करने के लिये भेजा। औरंगजेब ने यह समझ लिया था कि दकिखन की आदिलशाही कुछ दिनों की मेहमान है— उसने इस बात को ताड़ लिया था कि दक्खन में उसका असली प्रतिद्वन्द्वी शिवाजी है। शिवाजी की वीरता, चतुराई स्फूर्ति और संगठन कुशलता को वह अच्छी तरह समझता था। उत्तर भारत तथा दिल्ली की विद्रोही शक्तियों को नियंत्रण में रखने के लिये, अपने सिंहासन को सुरक्षित रखने के लिये अभी वह दिल्ली व आगरा में ही रहना चाहता था। आगरा दिल्ली में रहते हुए भी उसका ध्यान 'शिवाजी' की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने में व्यग्र रहता था। उसने अपने मामा, अपने समय के प्रसिद्ध अमीर नवाब शायस्ताखां को राजा यशवन्तसिंह के साथ शिवाजी का दमन करने के लिये भेजा।

शायस्ताखां ने दक्षिण में आते ही बीजापुर दरबार को दक्षिण दिशा से शिवाजी पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया। स्वयं अहमदनगर से पूना चाकन तथा उत्तरी कोंकण पर आक्रमण करने शुरू किये। बीजापुरी सेनाओं के आक्रमणों के कारण शिवाजी विशालगढ़ किले में घिर गया।

इधर शायस्ताखां की सेनाओं ने उत्तर महाराष्ट्र में शिवाजी के किलों को जीतना शुरू किया। शिवाजी इधर न आ सकता था। २५ फ़रवरी १६६० में शायस्ताखां ने अहमदनगर से विशाल सेना के साथ दक्षिण की ओर कूच किया। पूना के पूर्व की ओर दक्षिण भाग तक बे-रोक टोक बढ़ता गया। सोनवाड़ी के रास्ते से बारामती पहुँचा। १८ अप्रैल को पूना से दक्षिण में २६ मील की दूरी पर शिरवाल स्थान पर पहुँचा। शायस्ताखां जिन किलों को जीतता था, उन पर अपने सरदारों को तैनात करता जाता था। उसकी सेना ने राजगढ़ के चारों ओर के गावों को तहस नहस कर दिया।

शिरवाल से शिवपुर होती हुई मुगल सेना १ मई को सस-वाड (शिवपुर से पूर्व १३ मील और पूना से दक्षिण पूर्ण १६ मील पर) पहुँची। यहां मराठा सेना के ३००० सिपाहियों ने मुगल सेना को रोकना चाहा, परन्तु लड़ाई के बाद उन्हें मैदान छोड़ना पड़ा। ससवाड से मुगल सेना ने आस पास आक्रमण करने शुरू किये। पुरंदर किले की तलैटी के गांवों में लूट मार करने लगी। मराठी सेना ने उन पर हमला किया। मुगल सेना ने दृढ़ता से मुकाबला किया। मुगल सेना के कई सिपाही मारे गये। कई ज़ख्मी हुए। इतने में मुगल सेना में और भी सिपाही सम्मिलित हुए। उन्होंने मराठी सेना का पीछा किया। पुरंदर किले की गोला बारी की बौछार में भी मुगल सेना ने मराठा सिपाहियों का पीछा किया। आखिर

मराठी सेना को तितिर बितर होना पड़ा। उत्तर कोंकण में मुगल सेना ने इस्माइल सेनापति के आधीन इस किले को भी सर कर लिया। यह प्रदेश सलावतखां दक्खिनी के आधीन कर दिया गया। शायस्ताखां अपनी सेना के साथ ६ मई को पूना पहुंचा और बरसात की मौसम तक यहीं रहने का निश्चय किया। परन्तु मराठी सेना ने इसके आस पास के प्रदेशों को उजाड़ कर दिया था। और बरसात में नदियों में बाढ़ आने से मुगलाई सरहद और पूना के बीच में यातायात होने में बहुत कठिनाई होने लगी। सामान की तंगी के कारण सेना को बहुत मुश्किल होने लगी। इस दशा में शायस्ताखां ने अपना सैन्य शिविर, पूना से हटाकर चाकरण में ले जाने का निश्चय किया। यह स्थान अहमदनगर और मुगलाई प्रदेश के समीप था। यहां सब प्रकार की रसद और सहायता बे रोक टोक पहुच सकती थी।

× × ×

चाकण का किला और फिरंगी जी की वीरता

चाकण का किला युद्ध संचालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान था। इसके पूर्व में भीमानदी और छोड नदी के उथले पाट हैं—कोई कठिन पहाड़ी दर्रा इसके पास नहीं है। मुगलाई प्रदेश से यहां तक आना जाना सरलता से हो सकता है। शायस्ताखां को इसके आधीन कर लेने से अहमदनगर से रसद मंगाने में बहुत आसानी थी। अहमदनगर से कोंकण जाने का छोटे से छोटा मार्ग चाकण के किले की छाया में है। शायस्ताखां पूना से १६ जून को चलकर २१ जून को चाकण के समीपवर्ती प्रदेश में पहुंचा। सारी स्थिति का अवलोकन कर, सरदारों के साथ परामर्श कर किला सर

करने की योजना की गई। चाकण का किला, चौतर्फा घेरे वाला, और आगे बढ़े अग्र भागों वाला था। इसके चारों कोनों पर चार गुम्बज थे। इसकी ऊँची दीवारें ३० फीट गहरी और १५ फीट चौड़ी खाई से घिरी हुई थीं! पूर्व की ओर इसका प्रवेश द्वार था। वहां तक पहुंचने के लिये ६ दरवाज़ों में से गुज़रना पड़ता था। शिवाजी ने इस किले की रक्षा का भार अपने पिता शहा जी के समय के अनुभवी सरदार नरसाला को सौंपा हुआ था। उसे आज्ञा दी थी कि जब तक वह इस किले की रक्षा कर सके करे—जब बिल्कुल लाचारी की अवस्था हो और कुछ न हो सकता हो, तो आत्म-समर्पण कर दे। इस समय शिवा जी बीजापुर दरबार की सेनाओं के साथ पन्हाला के किले में उलझा हुआ था। लगभग दो महीनों तक फिरंग जी नरसाला ने जीजान पर खेल कर किले की रक्षा की।

शायस्ताखां ने किले को सर करने के लिये अपनी सेना के चार भाग किये। चारों ओर से किले को घेर कर खाइयां खोदकर, किले की चार दीवारी तक पहुँचने के लिये सुरंग बनाने की योजना की गई। उचित मौके के स्थानों पर तोपों को तैनात करने के लिये ऊंचे प्लेटफार्म-स्थान खड़े किये गए। दक्खिन के मुगलाई किलों से तोपें मँगाकर वहां तैनात की गईं। चौमासा बरसात की भारी बौछारों ने तोपों के स्थान बनाने तथा सुरंग बनाने में काफी दिक्कतें खड़ी की, और उधर किले के रक्षक मराठों ने गोलों की मार से मुगलसेना को काफी हैरान भी किया। परन्तु मुगल सेना गोलों और पानी की बौछार में आगे ही बढ़ती गई। ५४ दिनों की कोशिश के बाद उत्तर पूर्व कोने के गुम्दद के नीचे सुरंग लगादी गई। १४ अगस्त १६६० ई० ३ बजे दुपहरे इसमें स्फोट किया गया। बुर्ज और

उसके रक्षक स्फोट की आग से आकाश में, भस्मसात् हो गये। मुगलों ने आक्रमण किया। परन्तु दीवार के पीछे किले के रक्षक मराठों ने एक और दीवार खड़ी करली थी, और इसकी छाया में खड़े होकर इन्होंने मुगल सिपाहियों पर अस्त्रों, पत्थरों तथा आग के गोलों से हमला किया। मुगलों की आक्रमण—पार्टी को रुकना पड़ा। रात भर उसी रक्त रंजित भूमि में डटे रहे। १५ अगस्त की प्रातःकाल फिर आक्रमण शुरू किया। दीवार पर चढ़ गये। मुख्य किले को छीन लिया। अनेक रक्षकों को मृत्यु के घाट उतारा शेष सिपाहियों को किले में धकेल दिया। थोड़ी देर में किले के मराठा रक्षकों को मैदान छोड़ना पड़ा। किलेदार फिरंग जी वीरता पूर्वक एक २ इंच भूमि के लिये लड़ा। आखिर सहायता न आने पर, आत्मसमर्पण कर दिया। शायस्ताखां ने उसकी शूरवीरता से मुग्ध होकर उसे बादशाही सेना में निमंत्रित किया। उसने ईमानदार स्वामिभक्त की भांति इस मांग को ठुकरा दिया। किला मुगलों के हाथ में आगया था। फिरंगी जी शेष बची हुई सेना के साथ शिवाजी के पास चला गया।

× × ×

इस प्रकार से दो सालों तक मुगल सेनापति शिवाजी के प्रदेशों में लूटमार मचाते रहे। मराठे सरदार भी मौका देखकर उन्हें परेशान करते। १६६३ मार्च में शिवाजी की घुड़सवार सेना के सेनापति नेता जी का पीछा किया गया नेता जी ने अपने अश्वारोहियों के साथ मुगलाई सेना के शिविर पर आक्रमण किया था। मुगलाई सेना के ७००० घुड़सवारों ने उसका पीछा किया—इससे बचने के लिये नेता जी को ५० मील की रफ्तार से दिन में भाग

दौड़ करनी पड़ी। मुगलाई सेना ने बीजापुर से ५ मील की दूरी तक उसका पीछा किया। रुस्तम-जमान ने मुगल सरदारों को आगे बढ़ने से रोका और कहा कि अगला प्रदेश अजनबी सेना और सिपाहियों के लिये खतरनाक है, और स्वयं नेता जी का पीछा करने की प्रतिज्ञा की। नेता जी मुगलाई सेना के चंगुल से जख्मी होकर बच निकला। इस भाग दौड़ में उसके ३०० घुड़सवार मारे गये।

मुगलाई और बीजापुरी सेनाओं द्वारा मराठा शक्ति तथा सेना के तितिर बितिर होने पर भी, मराठा मंडल विचलित नहीं हुआ। इन पराजयों ने मराठा वीरों को निराश और हताश करने के स्थान पर अधिक कर्मशील और उत्साही बना दिया। बाजी प्रभु के बलिदान ने—फिरंगज जी की चाकण दुर्ग की रक्षा में प्रकट की गई अद्भुत वीरता ने—इनकी कहानियों ने—मराठा सरदारों तथा मराठा मंडल को जी जान पर खेलने के लिये, आत्म समर्पण तथा आत्म बलिदान के लिये उतावला कर दिया। हरेक मराठा अपने आपको शत्रु को परेशान करने के लिये—भयंकर से भयंकर आपत्ति को निमंत्रण देने में अपना अहोभाग्य समझने लगा। नेता जी ने—इसी धुन में इने गिने घुड़सवारों के साथ मुगलाई सेना पर कई हमले किए—और उन्हें परेशान किया। इन लड़ाइयों में शिवा जी के कई किले छिन गये थे उत्तर दक्षिण दोनों ओर से मुगलाई तथा बीजापुरी सेनाएं शिवाजी पर आक्रमण कर रहीं थीं। ऐसे समय में शिवाजी ने अपने वीरों को रणचण्डी का संदेश सुनाने और विजेता शायस्ता खां को वीरता और चातुरी का पाठ पढ़ाने के लिये रात को कड़े पहरे में पूना के शानदार महलों के शयनागार में प्रवेश कर उसे जगाया और युद्ध के लिये ललकारा।

शिवाजी शायस्ताखां के शयनागार में

चाकण किले को जीतकर शायस्ताखां पूना में चला गया। वहां उसने शिवाजी के बाल्यकाल के निवासस्थान और क्रीड़ास्थान में डेरा लगाया। अपनी सेनाओं के घेरे में सपरिवार विजय यात्रा के आमोद प्रमोद की उमंगों को तृप्त करने के सब सामान जुटाए। इधर शिवाजी अपने घर में शत्रु को अधिष्ठित देखकर चैन से कैसे बैठ सकता था। परन्तु वह क्या करता? शायस्ताखां और यशवन्तसिंह की सम्मिलित सेनाओं का मुकाबला करने के लिये उसके पास साधन न थे छोटी मोटी लड़ाइयों में शिवाजी के सिपाहियों के कहीं पैर न टिकते थे—ऐसे समय शिवाजी ने 'आत्म बलिदान' के अचूक—ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने का निश्चय किया। अपने आपको खतरे में डालने का निश्चय किया। अकेले—रात को—शायस्ताखां के शिविर में घुसकर उससे दो दो हाथ करने का संकल्प किया।

शायस्ताखां ने पूना में सपरिवार—शिवाजी के महलों में डेरा डाला। उसका परिवार—उसकी औरतें उसके साथ थीं। अन्तःपुर के चारों ओर रक्षकों, नौकरों और बाजा बजाने वालों के डेरे थे। कुछ दूरी पर रास्ते के पार, सिंहगढ़ के दक्षिण की ओर राजा यशवन्तसिंह ने १०००० सिपाहियों के साथ अपना शिविर तैनात किया हुआ था।

रमजान का महीना था। नवाब तथा उनके मुसलमान नौकर दिन के उपवास के बाद रात को भोजन करके—गहरी नींद में सो गये थे। शिवाजी ने अपने साथ १००० विश्वस्त सिपाही ले जाने के लिये चुने। मुगल शिविर से एक मील की दूरी पर मुगल सेना

शिविर के दो पार्श्वों पर, नेताजीपालकर और मोरोपन्त पेशवा के साथ १००० सिपाहियों की दो टुकड़ियां तैनात की गई। बाबा जी बापू जी और चिमणा जी बापू जी को शिवाजी ने अपना शरीर रक्षक चुना। मराठी सेना ने नियत समय पर शिवाजी के नेतृत्व में सिंहगढ़ से कूच किया। दस मील का अन्तर दिन दिन में तय किया गया। शिवजी पूना में रात होते २ पहुंच गया। ४०० चुने हुए सिपाहिय के साथ शिवाजी ने मुगल सेना शिविर की सीमा में प्रवेश किया। मुगल पहरेदारों के रोकने पर अपने आप को बादशाही सेना का दक्खिनी सिपाही बताकर अपने नियत स्थान पर जाने की सूचना दी। सैन्य शिविर के एक एकान्त कोने में, कुछ घंटे आराम किया। मध्यरात में मराठा टोली शायस्ताखां के निवास-स्थान के पास पहुंची। शिवाजी को पूना शहर के कोने कोने का पता था। जिस मकान में शायस्ताखां सो रहा था—उसमें शिवाजी ने बाल्य काल बिताया था। उसकी एक २ ईंट का शिवाजी को ज्ञान था। कुछ रसोइये—रसोई घर में आग जलाकर प्रातःकाल के भोजन की तैय्यारी कर रहे थे। इन्हें मराठा सिपाहियों ने चुप-चाप यमलोक भेज दिया। रसोई घर और अन्तःपुर वाले कमरे की बीच क दीवार में एक छोटा सा द्वार होता था। परन्तु शायस्ताखां ने अन्तःपुर को रसोई घर से पृथक् करने के लिये ईंटों द्वारा इस दरवाज़े को चुनवाकर बन्द कर दिया था। मराठा सिपाहियों ने इन ईंटों को धीरे २ निकाल कर दरवाजा बनाना शुरू किया। हथौड़ों की चोटों और रसोई घर में, मृत्यु की मुंह में कराहते नौकरों की हाय!! ने कुछ नौकरों को जगा दिया। उन्होंने शायस्ताखां को—भयजनक—आशंका जनक—आवाज की सूचना दी। निश्चिन्त अचेत—ऐश आराम की नींद में मस्त शायस्ताखां ने उनको डांट

कर नींद में खलल न डालने की ताड़ना की।

शीघ्र ही दरवाज़े में—एक आदमी के जाने का रास्ता निकल आया—शिवाजी चिमणा जी बापू जी के साथ सबसे पहले उस दरवाजे से अन्तःपुर में शायस्ताखां के शयनागार में—प्रविष्ट हुआ। २०० सिपाही भी उनके पीछे २ अन्दर घुस गये। यह स्थान कनातों से घिरा हुआ था। चादर की दीवारों के अन्दर, चादर की दीवारें थीं—पर्दे के घेरे के अन्दर, पर्दे के गोलाकार कनात लगे हुए थे। शिवाजी तलवार से उन पर्दों को चीरता फाड़ता—शायस्ता खां के शयनागार में पहुंच गया। हनुमान—रावण के—अन्तःपुर में पहुंच गया। भयभीत स्त्रियों ने नवाब को जगाया। शिवाजी ने शायस्ताखां को तलवार को हाथ में लेने से पहले ही दबोच लिया और अपनी तलवार की चोट से उसके हाथ का अंगूठा काट दिया। इसी समय किसी चतुर स्त्री ने शयनागार के जलते लैम्प गुल कर दिये—कमरे में अंधकार छा गया। मराठा सिपाही अंधेरे में पानी के भरे बरतनों से टुकराकर गिर पड़े। दासियां ने, मौका देख कर शायस्ताखां को सुरक्षित स्थान में पहुंचा दिया। मराठी सिपाहियों ने मार काट जारी रखी। कई स्त्रियां जख्मी हुईं, कई मारी गईं।

अन्तःपुर के बाहर २०० मराठे सिपाहियों ने सोते हुए पहरेदारों को कतल कर उन्हें इस प्रकार असावधानी से, पहरा देने पर डांटा और शायस्ताखां के नाम से बाजे वालों को बैण्ड बजाने का हुक्म दिया। बैण्ड की आवाज ने जख्मी लोगों की चीख पुकार और मरते हुए शत्रु सिपाहियों की आहों को गुम कर दिया। सब तरफ़ गड़बड़, भाग दौड़ और परेशानी परेशानी ही दिखाई देने लगी। अन्तःपुर का शोरगुल क्षण क्षण में भयंकर होता गया। कुछ समय

बाद मुगल सेना को पता चला कि इनके सेनापति पर शत्रुओं ने हमला कर दिया है। शायस्ताखां का बेटा अब्दुल फतह सिपाहियों के साथ पिता की रक्षा के लिये घटनास्थल पर पहुंचा। यह वीर युवक कुछ समय तक मराठे सिपाहियों से जूझता रहा। एक दो मराठे सिपाहियों को तलवार के घाट उतारा। आखिर जख्मी होकर धराशायी हुआ। एक और मुगल सर्दार ने अन्त:पुर का दरवाजा बन्द पाया। रस्सी की सीढ़ी से ऊपर चढ़कर अन्दर जाने की कोशिश की—नीचे उतरा भी— परन्तु वह एक दम मराठा सिपाहियों की तलवारों का निशाना बनकर मौत का अतिथि बना।

शिवाजी ने देखा कि शत्रु जाग गया है, और सावधान हो गया है। शिवाजी झटपट अपने साथियों के साथ एक छोटे—सीधे रास्ते से मुगल शिविर से बाहर निकल गया। मुगल सिपाही उसको इधर उधर तलाश करने में लग गये। शिवाजी सुरक्षित दशा में, शिविर से बाहर निकल गया! मुगल सेना उसका पीछा न कर सकी।

यह घटना १६६३ ई० की ५ अप्रैल की रात को हुई थी। ६ अप्रैल को प्रातःकाल दरबारी लोग रात की मुसीबत के सम्बन्ध में शोक और सहानुभूति प्रकट करने के लिये शायस्ताखां के शिविर में आए। महाराजा यशवन्तसिंह भी आए। शायस्ताखां ने कटाक्ष के साथ उन्हें देखते ही कहा कि अच्छा तुम अभी जीवित हो। मैंने तो यह समझा था कि तुम शिवाजी को रोकते रोकते मर चुके थे। शाइस्ताखां के शिविर में निराशा और मातम छा गया। उसका अपना हृदय दिन प्रति दिन इस पराजय से बुझने लगा। आत्म-रक्षा के विचार से शायस्ताखां औरंगाबाद को चला गया। बादशाह ने जब यह घटना वृतान्त सुना तो उसने शायस्ताखां की इस नालायकी और असावधानी पर क्रोध प्रकट

किया और उसे बंगाल की तरफ़ सूबेदार बना कर भेज दिया। औरंगज़ेब के शब्दों में बंगाल उन दिनों 'नरक' काला पानी था। शायस्ताखां को बादशाह से मिलने का भी अवसर न दिया गया। १६६४ जनवरी को शायस्ताखां शाहजादा मुअज्जम को दक्षिण का शासन भार देकर वहां से बिदा हुआ।

× × × ×

सूरत में शिवाजी पर खूनी वार

सूरत शहर उस समय के समृद्ध सम्पत्तिशाली शहरों में प्रमुख शहर था। मुगल बादशाहों के समुद्र द्वारा होने वाले विदेशी व्यापार का मुख्य केन्द्र था। इसी शहर से होकर मुसलमान हाजी अरब की हज यात्रा करने जाते थे। अभी इधर मुगल दरबार के दक्षिण भारत के शासकों में परिवर्तन हो रहे थे, कि उधर शिवाजी ने सूरत पर हमला कर दिया। वहां से लगभग दो करोड़ की सम्पत्ति लूटी। सूरत शहर के गवर्नर इनायतखां ने शिवाजी के आक्रमण करने की बात सुनते ही शहर को असुरक्षित दशा में छोड़ कर सूरत के किले में शरण ली। शिवा जी की सेना ने शहर को दिल खोल कर लूटा। लूटने से पहले शिवाजी ने ६ जनवरी १६६४ ई० को दो दूतों द्वारा शहर के गवर्नर और शहर के मुख्य व्यापारियों:—हाजी सैय्यद वेग और बहरा जी बोहरा और हाजी कासिम को सुलह की शर्तों के लिये बुला भेजा। परन्तु कोई उत्तर नहीं आया। चार दिन तक खूब लूट मार मची। शिवाजी ने अपने कुछेक सिपाहियों को, सूरत के किले के संरक्षकों के साथ लड़ाई में जुटा दिया। बहरा जी बोहरा, और हाजी सैयद बेग के महलों को लूटकर जला दिया गया। शिवा जी ने स्पष्ट घोषणा की कि मैं औरंगजेब द्वारा मराठा मुल्क पर किये गये आक्रमण का बदला लेने के लिये ही आया हूं। मेरा सूरत के व्यापारियों से कोई

झगड़ा नहीं। इस लूट में डच अंगरेज़ और पुर्तगीज़ और टर्किश आर्मीनियन लोगों ने स्वयं आत्म रक्षा की।

इन्होंने शिवाजी के रास्ते में किसी प्रकारकी रुकाबट खड़ी नहीं की और आत्म रक्षा के लिये उचित उपाय किये। सूरत शहर का शासक इनायत खां प्रत्यक्ष मुकाबले में शिवा जी के सामने न आ सका। उसने एक नौजवान दूत को शिवा जी के पास सुलह की शर्तों के लिये भेजा। शिवा जी ने कहा कि मैं तुम्हारे शासक की भांति छिप कर लड़ने वाला 'औरत' नहीं हूं। नौजवान ने एक दम उत्तर दिया कि हम औरत नहीं हैं और तुम्हारे लिये हमारे पास और भी संदेश है। यह कहते कहते छिपी हुई खंजर निकाल कर शिवाजी पर हमला कर दिया। शिवा जी के पास खड़े शरीर रक्षक ने तलवार के एक वार से घातक का हाथ काट गिराया। 'वह युवक हाथ कटने पर भी न रुका। उसने शिवाजी पर हमला किया। दोनों लड़ते लड़ते भूमि पर लोट पोट होने लगे। शिवा जी के कपड़ों पर रक्त के छींटें देखकर उसके अनुयाइयों ने समझा कि शिवा जी मारा गया है। यह बात सुनते ही मराठा अफ़सरों ने शत्रु-कैदियों की हत्या करने का फौजी हुक्म दे दिया। इतने में शिवाजी के शरीर रक्षक ने घातक युवक का सिर धड़ से अलग कर दिया। शिवाजी सुरक्षित रूप में सिपाहियों के सामने उपस्थित हुआ; और तत्काल कैदियों की हत्या की मनाई की। इतने में मुगल सेना के आने की खबर मिली। शिवाजी १० जनवरी प्रातःकाल वहां से लूट का सामान लेकर विदा हो गया और कोंकण में जाकर रुका। १७ जनवरी को शाही फौज वहां आई। बादशाह ने राजकर में कमी करके पीड़ित व्यापारियां के साथ सहानुभूति प्रकटकी और अनेक डच व्यापारियों को शिवा जी के साथ न मिलने तथा सूरत शहर के व्यापारियों की सहायता के उपलक्ष में आयात माल पर कर की मात्रा भी कम कर दी।

७

मिर्ज़ा जयसिंह और शिवाजी

अजब तेरी कुदरत अजब तेरा खेल
मकड़ी के जाले में उलझा है शेर ॥

शिवाजी की गति को रोकने के लिये, बीजापुर दरबार और मुगल दरबार के अफ़ज़लखां और शायस्ताखां भेजे गये—साथ में मराठे सरदार और राजपूत सरदार भी सहायक के रूप में भेजे गये। परन्तु कोई भी उसकी गति को न रोक सका। शिवाजी आकाश में उड़ता था—एक दम देखते २ पहाड़ियों—घाटियों की गहराई में छुप जाता था। पता नहीं कब कहां से आ चमकता था। अंग्रेज, डच, आर्मोनियम उसकी स्फूर्ति, चतुरता वीरता और फुर्तीलेपन से परेशान थे। वह उसे भूत प्रेतों का अधिनायक—मौत का दोस्त—समझते थे। उस समय के बादशाह—राजा—उसके नाम से—उसके घुड़सवार सिपाहियों की टापों से—थरथर काँपते थे। कईबार यम के द्वार—मौत के घर से उसे सही सलामत वापस आया देखकर उस समय की जनता उसे—अमर—मौत का लाड़ला—अजेय समझने लगी थी। उसके साहस—निडर व्यवहार से मौत भी उसकी चेरी बन गई थी—भयंकर से भयंकर—मुसीबतों में मौत उसको अपने वरदान से—सुरक्षित रखती थी।

औरंगजेब हैरान था—परेशान था वह दिन प्रतिदिन शिवा जी के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिये कोशिश करता था—परन्तु जितनी वह कोशिश करता था—उतना ही उसका प्रभाव

और उसकी गति प्रबल होती जाती थी। औरंगजेब के दरबार में महाराजा जयसिंह अपनी वीरता-दूरदर्शिता नीति कुशलता के लिये प्रसिद्ध था। मुगल दरबार में—अपने गुणों के कारण—उनकी सभ्यता को—उनकी भाषा साहित्य को इसने इस तल्लीनता से अपनाया था कि इसे मिर्जा जयसिंह के नाम से स्मरण किया जाता था। औरंगज़ेब जसवन्तसिंह से निराश हो चुका था। उसने मुअज्जम को दक्खिन का शासक बनाकर मिर्जा जयसिंह के साथ शिवाजी को कैदकर करने के लिये भेजा। जयसिंह भारी सेना तथा विस्तृत अधिकारों के साथ दक्षिण में आया। उसने आते ही सेना संचालन इस ढंग से करने का निश्चय किया जिससे बीजापुर दरबार और शिवाजी दोनों पर उसकी आंख रहे। दोनों आपस में मिल न सकें। शिवाजी ने जयसिंह से मुलाकात करने के लिये कई यत्न किये—जयसिंह ने एक न सुनी। एक के बाद एक करके शिवाजी के जीते हुए प्रदेशों को आधीन करने का क्रम जारी किया।

टिप्पणी—इस पत्र की ऐतिहासिक तथा यथार्थता के समर्थन में पूरे प्रमाण नहीं मिलते। फिर भी यह कहा जा सकता है कि इस पत्र के लेखक कवि को उस समय की राजनैतिक स्थिति का विस्तृत ज्ञान था इस पत्र में शिवाजी की राजनीति-दूरदर्शिता-प्रकट की गई है। परन्तु जयसिंह पर इस पत्र का भी कोई असर न हुआ।

पत्र

सरे सर्वरां राजए राजगाँ। चमनबंद बुस्ताने हिंदोसताँ॥

ए सर्दारों के सर्दार, राजाओं के राजा [तथा] भारतोद्यान की कियारियों के व्यवस्थापक।

जिगर बंद फ़र्ज़ानए रामचंद्र। ज़ तो गर्दने राजपूताँ बुलंद॥

ए रामचन्द्र के चैतन्य हृदयांश, तुझ से राजपूतों की ग्रीवा उन्नत है ॥

क़वीतर ज़े तो दौलते बाबरी। ज़े बख़्ते हुमायूँ तुरा यावरी ॥

तुझ से बाबरवंश की राज्यलक्ष्मी अधिक प्रबल हो रही है (तथा) शुभ भाग्य से तुझ से सहायता (मिलती) है।

जवाँ बख़्त जैशाह बा राय पीर। ज़े सेवा सलामो दरूदे पिज़ीर ॥

ए जवान (प्रबल) भाग्य [तथा] वृद्ध (प्रौढ़) बुद्धि वाले जयशाह, सेवा (अर्थात् शिवा) का प्रणाम तथा आशिष स्वीकृत कर।

जहाँ आफ़रीनत् निगहदार बाद। तुरा रहनुमायद सुए दीनो दाद ॥

जगत् का जनक तेरा रक्षक हो [तथा] तुझ को धर्म एवं न्याय का मार्ग दिखावे।

शनीदम कि बर क़स्दे मन् आमदी। बफ़तहे दयारे दकिन आमदी ॥

मैंने सुना है कि तू मुझ पर आक्रमण करने [एवं] दक्षिण प्रान्त को विजय करने आया है।

ज़े ख़ूने दिलो दीदए हिंदुआँ। तु ख़्वाही शवी सुर्ख़रू दर जहाँ ॥

हिंदुओं के हृदय तथा आँखों के रक्त से तू संसार में लाल मुँहवाला (यशस्वी) हुआ चाहता है।

न दानी मगर कीं सियाही शवद। कज़ीं मुल्को दीं रा तबाही शवद ॥

पर तू यह नहीं जानता कि यह [तेरे मुँह पर] कालख लग रही है क्योंकि इससे देश तथा धर्म को आपत्ति हो रही है।

अगर सर दमे दर गरेबाँ कुनी। चु नज़्ज़ारए दस्तों दामाँ कुनी ॥

यदि तू क्षणमात्र गरेबान में सिर डाले (संकुचित होकर विचार करे) और यदि तू अपने हाथ और दामन पर (विवेक) दृष्टि करे।

बबीनी कि ईं रंग अज़ ख़ून कीस्त। कि दर दो जहां रंग ईं रंग चीस्त ॥

तो तू देखे कि यह रंग किसके खून का है और इस रंग का (वास्तविक) रंग दोनों लोक में क्या है [लाल या काला] ।

तु ख़ुद आमदी गर बफ़तहे दकिन। शुदे फ़र्शे राहत सरो चश्मे मन ॥

यदि तू स्वयं [अपनी ओर से] दक्षिण बिजय करने आता [तो] मेरे सिर और आँख तेरे रास्ते के बिछौने बन जाते ।

शुदम हमरकाबत ब फौजे गराँ। सुपुर्दम बतो अज़ कराँ ता कराँ ॥

मैं तेरे हमरकाब (घोड़े के साथ) बड़ी सेना लेकर चलता [और] एक सिरे से दूसरे सिरे तक (भूमि) तुझे सौंप देता (विजय करा देता) ।

वले तू ज़े औरंगज़ेब आमदी। बइग़वाय ज़ाहिद फ़रेब आमदी ॥

पर तू तो औरंगज़ेब की ओर से (उस) भद्रजनों के धोखा देनेवाले के बहकाने में पड़कर आया है ।

नदानम कुनूँ चूँ बबाज़म् बतो। न मर्दी बुवद् गर बसाज़म् बतो ॥

अब मैं नहीं जानता कि तेरे साथ कौन खेल खेलूं । [अब] यदि मैं तुझ से मिल जाऊँ तो यह मर्दी (पुरुषत्व) नहीं है ।

कि मर्दां न दौराँ निवाज़ी कुनंद् । हिज़ब्रां न रूबाहबाज़ी कुनंद् ॥

क्योंकि पुरुष लोग समय की सेवा नहीं करते । सिंह लोमड़ी-पना नहीं करते ।

वगर चार: साजम बतेग़ो तबर। दो जानिब रसद् हिंदुआँ राज़रर ॥

और अगर मैं तलवार तथा कुठार से काम लेता हूँ तो दोनों ओर हिंदुओं को ही हानि पहुँचती है ।

दरेग़ा कि तेग़म जेहद् अज़ मियाँ। जुज़ अज़बहे ख़ूं ख़ुर्दने...... ॥

बड़ा खेद तो यह है कि .... खून के अतिरिक्त

किसी अन्य कार्य के निमित्त मेरी तलवार को मियान से निकलना पड़े।

चु तुर्की बर्दी कारज़ार आमदे। बरे शेर मर्दां शिकार आमदे॥

यदि इस लड़ाई के लिए तुर्क आए होते तो [हम] शेरमर्दों के निमित्त [घर बैठे] शिकार आए होते।

वले आं सियहकारे बे दादो दीं। कि देवस्त दर सूरते आदमीं॥

पर वह न्याय तथा धर्म से वंचित पापी जो कि मनुष्य के रूप में राक्षस है।

चु फ़ज़्ले ज़े अफ़ज़ल नयामद पदीद। न शाइस्तकारी ज़े शाइस्तः दीद।

जब अफ़ज़ल खाँ से कोई श्रेष्ठता न प्रकट हुई [और] न शाइस्त: खाँ की कोई योग्यता देखी।

तुरा बरगुमारद पए जंगे मा। कि दारद न .खुद ताबे आहंगे मा॥

[तो] तुझ को हमारे युद्ध के निमित्त नियत करता है क्योंकि वह स्वयं तो हमारे आक्रमण के सहने की योग्यता रखता नहीं।

बख़्वाहद कि अज़ ज़ुम्रए हिंदुआँ। न मानद क़वीपंजए दर जहाँ॥

[वह] चाहता है कि हिंदुओं के दल में कोई बलशाली संसार में न रह जाय।

बहम कुश्त:ओ ख़स्त: शेरां शवँद। शिगालाँ हिज़ब्रे नयस्ताँ शवंद॥

सिंहगण आपस ही में [लड़ भिड़ कर] घायल तथा श्रांत हो जायँ जिसमें कि गीदड़ जंगल के सिंह बन बैठें।

न ई राज़ चूँ दर सर आयद तुरा। फ़सूनश मगर बर गिरायद तुरा॥

यह गुप्त भेद तेरे सिर में क्यों नहीं बैठता। प्रतीत होता है कि,उसका जादू तुझे बहकाए रहता है।

बसे नेको बद दर जहाँ दीदई। गुलोख़ार अज़ बोस्ताँ चीदई॥

तैंने संसार में बहुत भला बुरा देखा है। उद्यान से तैंने फूल और कांटे दोनों संचित किए हैं।

न बायद कि बामा नबर्द आवरी। सरे हिंदुश्राँ ज़ेरे गर्द आवरी ॥

यह नहीं चाहिए कि तू हम लोगों से युद्ध करे [और] हिंदुओं के सिरों को धूल में मिलावे।

बदीं पुख़्त:कारी जवानी मकुन। ज़े सादी मगर यादगीर ईं सख़ुन ॥

ऐसी परिपक्क कर्मण्यता [प्राप्त होने] पर भी जवानी (यौवनोचित कार्य) मत कर, प्रत्युत सादी के इस कथन को स्मरण कर—

न हरजा मुरक्कब तवाँ ताख़्तन। कि जाहा सिपर बायद अंदाख़्तन ॥

सब स्थानों पर घोड़ा नहीं दौड़ाया जाता। कहीं कहीं ढाल भी फेंककर भागना उचित होता है।

पलंगाँ बगोरा पलँगी कुनंद। न बाज़ेग़माँ ख़ान:जंगी कुनंद ॥

व्याघ्र मृगादि पर व्याघ्रता करते हैं। सिंहों के साथ गृहयुद्ध में नहीं प्रवृत्त होते।

चु आबस्त दर तेग़ बुर्राने तो। चु ताबस्त दर अस्पे जौलाने तो ॥

यदि तेरी काटनेवाली तलवार में पानी है; यदि तेरे कूदने वाले घोड़े में दम है।

ब बायद कि बर दुश्मने दीं ज़नी। बुनो बेख़े रा बरकनी ॥

[तो] तुझ को चाहिए कि धर्म के शत्रु पर आक्रमण करे [एवं] उस की जड़ मूल खोद डाले।

अगर दावरे मुल्क दारा बुदे। बमा नीज लुत्फ़ो मदारा बुदे ॥

अगर देश का राजा दारा शिकोह होता। तो हम लोगों के साथ भी कृपा तथा अनुग्रह के बर्ताव होते।

वले तूने जसवंत दादी फ़रेब। ब दिल दर न कर्दी फ़राज़ो नशेब ॥

पर तूने जसवंतसिंह को धोखा दिया [तथा] हृदय में ऊँच नीच नहीं सोचा।

ज़ेरुबाहबाज़ी न सेर आमदी। बजंगे हिज़ब्रां दिलेर आमदी ॥

तू लोमड़ी का खेल खेलकर अभी अघाया नहीं है [और] सिंहों से युद्ध के निमित्त ढिठाई करके आया है।

अज़ीं तुर्कताज़ी चे आयद तुरा। हवायत सुराबे नुमायद तुरा ॥

तुझ को इस दौड़ धूप से क्या मिलता है, तेरी तृष्णा तुझे मृग-तृष्णा दिखलाती।

बदाँ सिफ्ल:मानी कि जेहदे बरद। उरूसे बचंगाल ख़ेश आवरद ॥

तू उस तुच्छ व्यक्ति के सदृश है जो कि बहुत श्रम करता है [और] किसी सुन्दरी को अपने हाथ में लाता है।

वले बर न अज़ बागे हुस्नश खुरद। बदस्ते हरीफ़ वरा बसपुरद ॥

पर उसकी सौंदर्य वाटिका का फल स्वयं नहीं खाता [प्रत्युत] उसको अपने प्रतिद्वंदी के हाथ में सौंप देता है।

चि नाज़ी तु बर मेहे आ नाबकार। बदानी सरंजामे कारे जुझार ॥

तू उस नीच की कृपा पर क्या अभिमान करता है। तू जुझारसिंह के काम का परिणाम जानता है।

बदानी कि बर बचए छत्रसाल। चेसाँ ख्वासस्त ओ ता रसानद ज़वाल

तू जानता है कि कुमार छत्रसाल पर वह किस प्रकार से आपत्ति पहुँचाता था।

बदानी कि बर हिंदुआने दिगर। नयामद चे अज़ दस्ते आँ कीन:वर

तू जानता है कि दूसरे हिंदुओं पर भी उस दुष्ट के हाथ से क्या क्या विपत्तियाँ नहीं आईं।

गिरफ्तम् कि पैवंद बस्ती बदो। तु नामूस रा दर शिकस्ती बदो ॥

मैंने मान लिया कि तैंने उससे संबन्ध जोड़ लिया है और कुल की मर्यादा उसके सिर तोड़ी है।

बरां देव दामे अजीं रिश्त: चीस्त। कि महकम तर अज़ बंदे शलवार नीस्त

[पर] उस राक्षस के निमित्त इस बन्धन का जाल क्या वस्तु है क्योंकि यह बंधन तो इज़ारबन्द से अधिक दृढ़ नहीं है।

पए कामे .खुद ऊ न दारद हज़र। ज़े .खूने बिरादर ज़े जाने पिदर॥

वह तो अपने इष्ट साधन के निमित्त भाई के रक्त [तथा] बाप के प्राण से भी नहीं डरता।

ज़े पासे वफ़ा गर बरानी सखुन। चि कर्दी बशाहेजहां याद कुन॥

यदि तू राजभक्ति की दोहाई दे तो तू यह तो स्मरण कर कि तैंने शाहजहाँ के साथ क्या बर्ताव किया।

अगर बहर:दारी ज़े फ़र्ज़ानगी। ज़नी लाफ़े मर्दी ओ मर्दानगी॥

यदि तुझको विधाता के यहाँ से बुद्धि का कुछ भाग मिला है [और] तू पौरुष तथा पुरुषत्व की बड़ मारता है।

ज़े सोज़े वतन तेग़ रा ताब् देह। ज़े अश्के सितम दीद:गां आब देह॥

तो तू अपनी जन्मभूमि के संताप से तलवार को तपावे [तथा] अत्याचार से दुखियों के आंसू से [उस पर] पानी दे।

न मारा बहम् वक्ते पैकार हस्त। कि बर हिंदुओं कार दुश्वार हस्त॥

यह अवसर हम लोगों के आपस में लड़ने का नहीं है क्योंकि हिन्दुओं पर [इस समय] बड़ा कठिन कार्य पड़ा है।

ज़नो बच्चओ मुल्को इमलाके मा। बुतो माबिदो आबिदे पाके मा॥

हमारे लड़के बाले, देश, धन, देव, देवालय तथा पवित्र देव पूजक—

हम: रा तबाहीस्स्त अज़, कारे ऊ। बहाए रसीदस्त आ ज़ारे ऊ॥

इन सब पर उसके काम से आपत्ति पड़ रही है। [तथा] उसका दुःख सीमा तक पहुँच गया है।

कि चंदे चु कारश बमानद चुनीं। निशाने न मानद जे मा बर ज़मीं॥

कि यदि कुछ दिन तक उसका काम ऐसा ही चलता रहा [तो] हम लोगों का कोई चिह्न [भी] पृथिवी पर न रह जायगा।

तअज्जुब कि इक दस्तए मुगलाँ। बरीं पहन मुल्कम् शवद हुक्मरां॥

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मुट्ठी भर मुगल हमारे [इतने] बड़े इस देश पर प्रभुता जमावें।

न ईं चीरःदस्ती ज़े मर्दानगीस्त। बबीं गर तुरा चश्मे फ़र्ज़ानगीस्त॥

यह प्रबलता [कुछ] पुरुषार्थ के कारण नहीं है। यदि तुझ को समझ की आँख है तो देख।

चसां ऊ बमा मोह्ःबाज़ी कुनद। चसां बर रुख़श रंगसाज़ी कुनद॥

[कि] वह हमारे साथ कैसी गोटियाचाली करता है और अपने मुँह पर कैसा कैसा रंग रँगता है।

कशाद् पाय मारा ब जंजीरेमा। बबुर्रद् सरेमा ब शमशीरे मा॥

हमारे पावों को हमारी ही साँकलों में जकड़ देता है [तथा] हमारे सिरों को हमारी ही तलवारों से काटता है।

मरा जहद बायद फरावाँ नमूद। पए हिंदुओ हिंदो दीने हुनूद॥

हम लोगों को [इस समय] हिंदू, हिंदोस्तान तथा हिंदू धर्म [की रक्षा] के निमित्त बहुत अधिक यत्न करना चाहिए।

बबायद कि कोशेमो राये ज़नेम्। पए मुल्के ख़ुद दस्तो पाये ज़नेम्॥

हमको चाहिए कि यत्न करें और कोई राय स्थिर करें [तथा] अपने देश के लिये खूब हाथ पाँव मारें।

ब शमशीरो तदबीर आबे देहेम। बतुर्की ब तुर्की जवाबे देहेम॥

तलवार पर और तदबीर पर पानी दें [अर्थात् उन्हें चमकावें

और] तुर्कों को जवाब तुर्की में (जैसे का तैसा) दें।

ब जसवंत गर तू मुवाफ़िक़ शवी। ब दिल दर्पए ग्याँ मुनाफ़िक़ शवी॥

यदि तू जसवंतसिंह से मिल जाय और हृदय से उस कपट कलेवर के पैंड़े पड़ जाय।

ब राना दमी हमदमे हमदमी। बे बायद कि कारे बर आयद हमी॥

[तथा] राना से भी तू एकता का व्यवहार कर ले तो आशा है कि बड़ा काम निकल जाय।

ज़े हर्सू बता ज़ंदो जंग आवरेद। सरे मारा ज़ेरे संग आवरेद।

चारों तरफ से धावा करके तुम लोग युद्ध करो। उस साँप के सिर को पत्थर के नीचे दबा लो (कुचल डालो)।

कि चंदे ब पेचद बर अंजामे ख़ेश। नेयारद बमुल्के दकिन दाम ख़ेश॥

कि कुछ दिनों तक वह अपने ही परिणाम के सोच में पड़ा रहै [और] दक्षिण प्रांत की ओर अपना जाल न फैलावे।

मन ईं सू ब मर्दाने मेजःगुज़ार। अर्ज़ी हर दो शाहाँ बर आरम दमार॥

[और] मैं इस ओर भाला चलाने वाले वीरों के साथ इन दोनों बादशाहों का भेजा निकाल लूँ।

ब अफ़वाजे गुर्रिंदा मानिंदे मेग़। बेबारम अबर दुश्मनां आवे तेग़॥

मेघों की भाँति गरजने वाली सेना से दुश्मनों पर तलवार का पानी बरसाऊँ।

ब शोयम ज़े दुश्मना नामो निशाँ। ज़े लौहे दकिन अज़करां ताकरां॥

दक्षिण देश के पटल पर से एक सिरे से दूसरे सिरे तक दुश्मनों का नाम तथा चिह्न धो डालूँ।

अज़ां पस ब मर्दाने पैमूदःकार। बजंगी सवाराने नेजःगुज़ार॥

इसके पश्चात कार्यदक्ष शूरों तथा भाला चलाने वाले सवारों के साथ।

चु दरियाय पुर शोरिशो मौजज़न। बर आयम ब मैदाँ ज़े कोहे दकिन ॥

लहरें लेती हुई तथा कोलाहल मचाती हुई नदी की भाँति दक्षिण के पहाड़ों से निकल कर मैदान में आऊँ।

शवम जुदतर हमरकाबे शुभा। अज़ो बाज़ पुर्सम हिसाबे शुमा ॥

और अत्यंत शीघ्र तुम लोगों की सेवा में उपस्थित हूँ और फिर उससे तुम लोगों का हिसाब पूछूँ।

ज़े हर चार सू सख्त जंग आवरेम। बरो अर्सए जंग तंग आवरेम ॥

[फिर हम लोग] चारों ओर से घोर युद्ध उपस्थित करें और लड़ाई का मैदान उसके निमित्त संकीर्ण कर दें।

बदेहली रसानेम अफ़वाजरा। बदाँ खानए खस्तः अमवाजरा ॥

हम लोग अपनी सेनाओं की तरंगों को, दिल्ली में, उस जर्जरीभूत घर में, पहुंचा दें।

ज़े नामश न औरंग मानद न ज़ेब। न तेगे तअद्दी न दामे फरेब ॥

उसके नाम में से न तो औरंग (राजसिंहासन) रह जाय और न ज़ेब (शोभा) है। न उसकी अत्याचार की तलवार [रह जाय] न कपट का जाल।

बरारेम जूए पुर अज़ खूने नाब। बरूहे बुजुर्गां रसानेम आब ॥

हम लोग शुद्ध रक्त से भरी हुई एक नदी बहा दें [और उस से) अपने पितरों की आत्माओं का तर्पण करें।

बनैरूए दादारे जाँ आफ़रीं। बसाज़ेम जायश बज़ेरे ज़मीं ॥

न्यायपरायण प्राणों के उत्पन्न करने वाले (ईश्वर) की सहायता से हम लोग उसका स्थान पृथ्वी के नीचे (क़ब्र में) बना दें।

न ई कार बिसियार दुशवार हस्त। दिलो दीदओ दस्त दरकार हस्त ॥

यह काम [कुछ] बहुत कठिन नहीं है। [केवल यथोचित] हृदय, आँख तथा हाथ की आवश्यकता है।

दो दिल यक शवद् बेशकुनद् कोहरा। परागंदगी आरद् अंबोहरा ॥

दो हृदय (यदि) एक हो जायँ तो पहाड़ को तोड़ सकते हैं [तथा] समूह के समूह को तितिर बितिर कर दे सकते हैं ॥

अज़ी दर् मरा गुफ्तनीहा बसेस्त। कि दर् नाम: आवुर्दनश राय नेस्त।

इस विषय में मुझको तुझसे बहुत कुछ कहना [सुनना] है, जिसका पत्र में लाना (लिखना) [युक्ति] सम्मत नहीं है ॥

बख्वाहम कि रानेम बाहम सखुन। ने यारेम बे सूद रंजो मेहन।

मैं चाहता हूँ कि हम लोग परस्पर बात चीत कर लें जिसमें कि व्यर्थ दुःख तथा श्रम न झेलें।

चु ख्वाही बे आयम बदीदारे तो। बगोश आवरम राज़े गुफ़तारे तो ॥

यदि तू चाहे तो मैं तुझसे साक्षात् करने आऊँ। [और] तेरी बातों का भेद श्रवणगोचर करूँ।

बख़ल्वत कुशायेम रूए सखुन। कशम शान: बर पेचे मूए सखुन ॥

हम लोग बात रूपी सुंदरी का मुख एकांत में खोलें। [और] मैं उसके बालों के उलझन पर कंघी फेरूं।

ब दामाने तदबीर दस्त आवरेम। .फ़ुसूने बरां देव मस्त आवरेम ॥

यत्न के दामन पर हाथ धरें। [और] उस उन्मत्त राक्षस पर कोई मंत्र चलावें।

तराज़े म राहे सुए कामे ख्वेश। फराजेम दर दो हाँ नामे ख्वेश ॥

अपने कार्य की [सिद्धि] की ओर का कोई रास्ता निकालें [और] दोनों लोकों (इहलोक तथा परलोक) में अपना नाम ऊँचा करें।

बतेग़ो बअस्पो बमुल्को बदीं। कि हर्गिज़ गज़न्दत न आयद अज़ीं ॥

तलवार की शपथ, घोड़े की शपथ, देश की शपथ तथा धर्म की शपथ करता हूँ कि इससे तुझ पर कदापि [कोई] आपत्ति नहीं आवेगी।

ज़े अंजामे अफ़ज़ल मशौ बदगुमाँ। कि ओगा न बुद रास्ती दरमियाँ॥

अफ़ज़ल खाँ के परिणाम से तू शंकित मत हो क्योंकि उस में सचाई नहीं थी।

ज़े जंगी सवारा ने परख़ाशजू। हज़ारो दो सद दर कमीं दाश्त ऊ॥

बारह सौ बड़े लड़ाके हब्शी सवार वह मेरे लिये घात में लगाए हुए था।

अगर पेश दस्ती न कर्दम बरो। कि ईं नामः अकनूँ नविश्ते बनो॥

यदि मैं उस पर पहिले ही हाथ न फेरता तो इस समय यह पत्र तुझको कौन लिखता।

मरा बातो चश्मे चुनीं कार नेस्त। तुरा खुद बमन नीज़ पैकार नेस्त॥

[पर] मुझको तुझसे ऐसे काम की आशा नहीं है [क्योंकि) तुझको भी स्वयं मुझसे कोई शत्रुता नहीं है॥

जवाबन बयाबम अगर बाशवाब। शब आयम् ब पेशे तो तनहा शिताब।

यदि मैं तेरा उत्तर यथेष्ट पाऊँ तो तेरे समक्ष रात्रि को अकेला आऊँ।

नुमायम् बतो नामःहाए निहाँ। कि बगिरफ़्तम अज़ जेबे शायस्तःखाँ॥

मैं तुझको वे गुप्त पत्र दिखाऊं जोकि मैंने शाइस्तः खां के जेब से निकाल लिए थे।

ज़नम आबे अंदेशः बर दीदःअत। कुनम् दूर ख़्वाबे पसंदीदःअत॥

तेरी आँखों पर मैं संशय का जल छिड़कूँ (और) तेरी सुख-निद्रा को दूर करूँ।

कुनम् रास्त् ताबीर ख़्वाबे तुरा। वज़ां पस बगीरम् जवाबे तुरा॥

तेरे स्वप्न का सच्चा सच्चा फलादेश करूँ (और) उसके पश्चात् तेरा जवाब लूँ।

नयाबद चु ई नाम:इमज़ाजे तो। मनो तेग़ बुर्रानो अफ़वाजे तो॥

यदि यह पत्र तेरे मन के अनुकूल न पड़े। (तो फिर) मैं हूँ और काटने वाली तलवार तथा तेरी सेना।

चु .खुर्शेद फ़र्दा कशद रूबशाम। हिलालम् नेयाम अफनगद वस्सलाम

कल जिस समय सूर्य अपना मुँह संध्या में छिपा लेगा। उस समय मेरा अर्धचंद्र (खड्ग) मियान को फेंक देगा (मियान से निकल आवेगा)। बस, भला हो।

× × × ×

मिर्जा राजा जयसिंह ने शशवाद में मुख्य शिविर कायम किया। शिवाजी से असन्तुष्ट मराठे सरदारों को अपने साथ मिलाया। धन, राज सम्मान के प्रलोभनों द्वारा अनेक मराठा सरदारों को अपनी ओर किया। इधर शिवाजी भी यथाशक्ति मुगल सेनाओं पर अचानक आक्रमण कर उन्हें भयभीत करने का यत्न करने लगा। परन्तु जयसिंह ने अपनी सेनाओं का संचालन इस ढंग से किया कि शिवाजी की यह चालें—उसकी सेनाओं की गति को न रोक सकीं। आख़िर पुरंदर के किले पर दोनों की मुठभेड़ हुई। पुरंदर के किले तक पहुंचने के लिये वज्रगढ़ का किला सर किया गया। तदनन्तर जयसिंह ने पुरंदर का किला जीतने के लिये—उसके सामने तोपें तैनात कीं। पुरंदर के किले में २००० मराठा सिपाही थे। जयसिंह ने दिलेरखान के आधीन सेनाएं भेजकर पुरंदर को घेर लिया। २००० मराठा सिपाही कई दिन तक मुगल सेनाओं को रोकते रहे। आखिरकार मुगल सेना के सामने वह न टिक सके। पुरंदर किले के सरदार मुरारबाजी प्रभु ने अन्त में जी जान पर खेलने का निश्चय किया। उसने चुने हुए ६०० मराठा सिपाही अपने साथ लिये। किले से बाहर निकल पड़े। दिलेरखां ५००० अफ़गान सिपाही और कुछ अन्य सिपाहियों के साथ पुरंदर के

किले की दीवारों पर, तोपों की संरक्षा में—चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मराठा सिपाही मुरारबाजी प्रभु के नेतृत्व में पठान सिपाहियों से जूझ पड़े। घमासान लड़ाई हुई। मुरारबाजी प्रभु ने मावला सिपाहियों के साथ ५०० पठानों को यमलोक भेजा। चुने हुए ६० मर मिटने वाले मराठा सिपाहियों के साथ मुरारबाजी मौत को हथेली पर रखे दिलेरखान के शिविर की ओर बिजली की गति से बढ़ा। एक२ मावले वीर ने वीसियों पठानों को तलवार के घाट उतारा परन्तु अन्त में मुगल सिपाहियों ने सब मावलों को मार काट कर धराशायी किया—मुट्ठी भर सिपाही मुगलों की समुद्र और पर्वत समान भारी सेना का कब तक मुकाबला करते। परन्तु मुरारबाजी को कोई न रोक सका। मुगल सिपाहियों की टोलियां—उसे रोकने—उससे दो २ हाथ करने आतीं—परन्तु उसकी तलवार के सामने—उसकी चमक से चकाचौंध हो लौट जातीं—अभिमन्यु की भांति मुगल महारथियों ने उसको रोकना चाहा—परन्तु कोई उसे न रोक सका उसने दोनों हाथों से तलवार चलाई:-कोई पास न फटका। अकेला मुगल सिपाहियों को काटता हुआ सेनापति दिलेरखां के शिविर पहुंचा। दिलेरखां ने उसे आत्म समर्पण करने के लिये—कहा—दरबार में ऊंची पदवी देने को कहा!—मौत को हथेली पर रखे हुए को ललचाया—मुरारबाजी ने—तलवार से इसका जवाब दिया—दिलेरखान पर बार करने को हाथ उठाया—मरते दम तक शत्रु को चैन न लेने दी। दिलेरखान ने दिन भर के थके—अकेले—पर वार किया सिर धड़ से अलग हो गया। परन्तु कहा जाता है कि—सिर के अलग होने पर भी धड़—दोनों हाथों से तलवारें चलाता रहा—मरते २ कइयों को धराशायी कर गया—आखिर वीरों की भांति मौत की गोद में आश्रय लिया दिलेरखान के तीर

ने उसके प्राण पखेरू को आकाश यात्री बनाया। साथ में ३०० मावले सिपाही भी धराशायी हुए। बचे हुए सिपाही फिर किले में वापिस चले गये। मुरारबाजी प्रभु के बलिदान की रोमांचकारी कहानी सुनकर अन्दर के शेष सिपाहियों ने जी जान पर खेलने का निश्चय किया। अन्तिम दम तक लड़ते रहे। दो महीने के निरन्तर युद्ध ने किलेदारों की रसद को कम कर दिया। इधर मुगल सेनाओं ने किले के कई मुख्य भागों को सर कर लिया था। किले के अन्दर रहने वाले परिवारों की रक्षा तथा उन्हें व्यर्थ के रक्त पात से बचाने के लिये शिवाजी ने जयसिंह के पास रघुनाथ वल्लाल को संधि के लिये भेजा। विजयी जयसिंह ने शिवाजी को स्वयं उपस्थित होकर आत्म-समर्पण करने के बाद संधि चर्चा करने का अवसर देना स्वीकार किया। शिवाजी ने आत्मरक्षा के आश्वासन पर भेंट करना स्वीकार किया। जयसिंह ने जीवन रक्षा का आश्वासन दिया।

१० जून को प्रातःकाल ९ बजे पुरंदर किले की तलैटी में दरबार में जयसिंह के साथ शिवाजी की भेंट हुई। रघुनाथ पंडित ने शिवाजी के आने की सूचना दी। भेंट के समय कड़ा पहरा तैनात किया गया। जयसिंह ने भेंट के लिये आते हुए, शिवाजी को संदेश भेजा कि यह भेंट उसी अवस्था में हो सकेगी यदि शिवाजी सर्वथा आत्म समर्पण कर दे और अपने सब किले मुगल बादशाह के आधीन कर दे। शिवाजी ने शर्तें स्वीकार कीं और दो अफसरों के साथ भेंट के लिये प्रस्थित हुआ। शिविर के दरवाजे पर—राजा जयसिंह के खजानची ने उसका स्वागत किया। राजा जयसिंह ने आगे बढ़ कर शिवाजी का आलिंगन किया और उसे अपने साथ बैठाया। सशस्त्र राजपूतों का कड़ा पहरा तैनात किया। यहां से

पुरंदर किले पर हो रही लड़ाई दिखाई देती थी। राजा जयसिंह ने पूर्व निश्चित योजना के अनुसार शिवाजी के दरबार में प्रवेश करते ही, दिलेरखान को पुरंदर किले पर हमला करने का इशारा किया। शिवाजी ने इस रक्त पात को व्यर्थ समझ कर पुरंदर का किला समर्पित करने का निश्चय प्रकट किया। जयसिंह ने संदेशहर भेज कर दिलेरखान को युद्ध बन्द करने और किले में बन्द मराठा सिपाहियों को सुरक्षित बाहर जाने की आज्ञा दी। संदेशहर के साथ शिवाजी ने अपना आदमी भेज कर किले के संरक्षकों को किला दिलेरखान के आधीन करने की आज्ञा दी। परस्पर विचार विनिमय के बाद निम्न लिखित शर्तें तय हुईं।

(१) २३ किले मुगल बादशाह के आधीन किये गये।

(२) शेष १२ किले शिवा जी के आधीन रहने दिये गये। इसके बदले शिवाजी को मुगल दरबार में नौकरी करनी होगी और मुगल बादशाह के प्रति राजभक्ति का भाव प्रकट करना होगा। शिवाजी ने राजा जयसिंह को इस बात के लिये प्रेरित किया कि मुगल दरबार में उपस्थित होने से उसे मुक्त किया जाय। उसके स्थान पर उसका लड़का ५०० घुड़सवारों के साथ रहेगा। शिवाजी ने मुगल दरबार के लिये बीजापुर दरबार तथा कुतबशाही के विरुद्ध लड़ने—उनके प्रदेशों को मुगलों के लिये जीतने का भी आश्वासन दिलाया। परन्तु जयसिंह नहीं माना। इस पुरंदर की संधि के बाद शिवाजी के कई साथी नेता जी आदि उसे छोड़ कर बीजापुर दरबार की सेना में भर्ती होने लगे। बीजापुर दरबार तथा कुतबशाही के बादशाहों ने शिवाजी और मुगल सेना को एक होते हुए देख कर—अपनी सत्ता को ख़तरे में समझा। पुरंदर की संधि के स्वीकार करने के अगले दिन मुगल दरबार की ओर से

शिवाजी को कई फर्मान और सन्मान सूचक दरबारी पोशाक भी मिले।

शिवाजी और नेताजी पालकर ने राजा जयसिंह की सेनाओं के साथ मिलकर बीजापुर पर हमला किया। बीजापुर के बादशाह आदिलशाह ने मुकाबला किया। शिवाजी को जयसिंह ने पन्हाला किला जीतने के लिये नियत किया। इतने में समाचार मिला कि नेताजी पालकर बीजपुर दरबार से मिल गया है। राजा जयसिंह ने उसको बड़ी जागीर देकर अपनी ओर लाने की कोशिश की। शिवाजी पन्हाला किला बीजापुर से न छीन सका। यह स्थिति देख कर राजा जयसिंह ने सोचा कि यदि शिवाजी को उत्तर भारत में न भेजा गया तो वह भी नेताजी पालकर की भांति शर्तों के उतार चढ़ाव के द्वारा बीजापुर दरबार से मिल जायगा और इस प्रकार से दक्खिन में मुगलों की बढ़ती हुई शक्ति तथा प्रभाव को पुनः हानि पहुंचने की सम्भावना पैदा हो जायगी। इसलिये जयसिंह ने बादशाह औरंगजेब को शिवाजी को दरबार में उपस्थित होने की स्वीकृति देने के लिये बार बार लिखा। राजा जयसिंह शिवाजी को दक्खिन से दूर रख कर, दक्खिन की स्वतंत्र रियासतों को आधीन करना चाहता था। शिवाजी औरंगजेब के छलपूर्ण व्यवहार से सशंक था—वह जानता था कि दक्खिन से दूर होते ही—उसके पीछे महाराष्ट्र जनता को संगठित करने वाला कोई न रहेगा। इस समय तक—मावले मराठे—वीरों के बलिदान से महाराष्ट्र में आत्माभिमान की जो ज्वाला प्रदीप्त हुई थी, वह मंद पड़ जायगी। शिवाजी दुविधा में था। पुरंदर की संधि के बाद वह राजा जयसिंह के कहे को टाल न सकता था।

उसके बालसखा—वीर चिन्तित थे। औरंगजेब ने

शिवाजी को दरबार में उपस्थित होने की स्वीकृति दे दी थी। शिवाजी को तसल्ली देने के लिये राजा जयसिंह ने शिवाजी की जीवन रक्षा की शपथें ली। राजा जयसिंह का पुत्र रामसिंह औरंगजेब के दरबार में प्रतिनिधि था। उसने भी शिवाजी को सुरक्षित वापिस भेजने की प्रतिज्ञा की। शिवाजी पुरंदर संधि की शर्तों के सम्बन्ध में, बादशाह के साथ दरबार में उपस्थित होकर, स्पष्टीकरण भी करना चाहता था। यदि सम्भव हो सके—बीजापुर दरबार को मटियामेट करने के बदले, मुगल दरबार का दक्षिण में प्रतिनिधि बनने का मौका मिले तो उससे भी लाभ उठाना चाहता था।

सब अवस्थाओं पर विचार कर यही उचित समझा गया कि शिवाजी औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हो। उत्तर भारत में जाने के बाद, पीछे शासन का प्रबन्ध इस ढंग से किया गया कि यदि शिवाजी कैद किया जाय या मारा भी जाय, तब भी उसके आधीन प्रदेशों में अव्यवस्था न हो। माता जीजाबाई को राज-प्रतिनिधि (Regent) नियत किया गया। सारा शासन प्रबन्ध उसके निरीक्षणमें किया जाना तय पाया। मोरोपन्त पेशवा, नीरोजी सोमदेव, अन्नाजी दत्ता को कोंकण के प्रान्तों में तैनात किया गया। हरेक किलेदार को सावधान किया कि वह दिन रात सावधान रह कर—मुगलों या बीजापुरियों के दांवपेंच में न फंसे। उत्तर भारत के लिये प्रस्थित होने से पहले, अपने स्वराज्यमें शिवाजी ने अचानक निरीक्षण-भ्रमण किया और अपने कर्मचारियों को, अनुपस्थिति में भी पहले की भांति—नियत नियमों के अनुसार कार्य करने का हुक्म दिया। अपने परिवार को रायगढ़ में रख कर

१६६६ मार्च को उत्तर भारत के लिये विदा हुआ। साथ में सम्भा जी, सात विश्वासपात्र सरदार—और ४००० सिपाही थे। राजा जयसिंह ने बादशाह की आज्ञा से रास्ते के खर्च के लिये शाही खजाना से लाख रुपये दिये और गाजीबेग नाम के सेनापति को मार्ग प्रदर्शन के लिये साथ भेजा। यात्रा में—रास्ते में शिवाजी को आगरा से ५ अप्रैल का लिखा हुआ बादशाही पत्र मिला। इस में शिवाजी को दरबार में शीघ्र उपस्थित होने तथा बादशाह द्वारा सम्मानित होकर दक्खिन वापिस जाने का आश्वासन दिया गया। साथ ही सम्मान सूचक—वेशभूषा भी भेजी गई।

८

पहाड़ी शेर को मैदान की गर्मी सताती है

शिवाजी औरंगजेब के चंगुल में

शिवाजी मुगल बादशाही की संरक्षा में यात्रा कर रहा था। औरंगजेब ने राजकर्मचारियों को शिवाजी का स्वागत करने का आदेश दिया हुआ था। स्थान स्थान पर शिवाजी की उत्तर भारत यात्रा की चर्चा फैल गई। जनता उत्सुकता-सम्मान और श्रद्धा के भाव से शिवाजी के दर्शनों के लिये पड़ावों पर आती। स्थानीय मुगल शासक शिवाजी को शाही अतिथि समझ कर उसका आतिथ्य करते। औरंगाबाद पहुंचने पर वहां का गवर्नर सफ़शिकानखान शिवाजी के स्वागत के लिये न आया। उसने अपना भतीजा भेज कर उसे अपने दरबार में आने के लिये कहा। शिवाजी ने अपमान का उत्तर उसके पास न जाकर, सीधा अपने लिये नियत स्थान पर जाकर दिया। खान साहेब को लाचार होकर मुगल सिपाहियों के साथ शिवाजी के पास उपस्थित होना पड़ा। शिवाजी औरंगाबाद से बादशाही मेहमान की भांति भेंट उपहार लेता हुआ, ६ मई को आगरा पहुंचा। औरंगज़ेब इन दिनों आगरा में दरबार लगा रहा था। १२ मई का दिन भेंट के लिए नियत किया गया। औरंगजेब पचासवीं वर्षगांठ मना रहा था। दरबार में औरंगजेब के सुवर्ण तुला दान, समारोह की तैयारियां हो रही थीं। दरबार में चारों ओर जगमग और चमक दमक थी। दरबार--आम में प्रतिष्ठित दरबारी—राजा—राजकुमार,

सरदार, नवाब—अनेक राज्यों के प्रतिनिधि अपने अपने स्थानों पर राजसी ठाठ बाठ में सुसज्जित होकर उपस्थित थे। निश्चित समय पर राजा जयसिंह के पुत्र रामसिंह ने शिवा जी के साथ दरबार में प्रवेश किया। शिवाजी के साथ उनका पुत्र शम्भाजी और उसके अपने १० सेनापति सरदार थे। शिवाजी की ओर से १५०० हज़ार सुनहरी मोहरें नज़र और ६०००) भेंट (निसरा) के रूप में अर्पित किये गये। औरंगजेब ने राजसी आन बान के साथ कहा—" शिवाजी राजा आगे आओ"। शिवाजी राजसिंहासन के नीचे सामने उपस्थित हुआ! सन्मान सूचक भाव प्रकट किये। औरङ्गजेब ने संकेत द्वारा शिवाजी को तीसरे दर्जे के सरदारों की श्रेणी में पंक्तिबद्ध खड़ा करने की आज्ञा दी और दरबार का कार्य यथापूर्व चलता रहा। औरङ्गजेब शिवा जी को उपेक्षा की अंधेरी खाई में धकेल कर, अपनी जन्म-गांठ की खुशियों में मस्त हो गया।

इस अपमान को शिवा जी सह न सका। वह आपे से बाहर हो गया। जयसिंह का बेटा रामसिंह, झुंझलाए शेर की भांति गुरगुराते वीर केसरी शिवा जी को सान्त्वना देकर समझाने की कोशिश करने लगा। आकाश में विचरने वाले स्वतन्त्र गरुड़ को, पिंजरे में चैन कैसे हो सकती थी। उसने अपनी जीवन सहेली तलवार पर हाथ रखा—पता नहीं क्या होने वाला है, भूषण कवि के शब्दों में शिवाजी ने औरंगजेब को—दादा की भांति—रनवास में छिपने के लिए बाधित किया।

कैयक हजार जहां गुर्जबरदार ठाढ़े,
करिके हुस्यार नीति पकरि समाज की।

राजा जसवन्त को बुलाय के निकट राख्यो,
तेउ लखैं नीरे जिन्हें लाज स्वामी काज की।
'भूषन', तबहुँ ठठकत ही गुसुलखाने,
सिंह लौं झपट गुनि साहि महाराज की।
हटकि हथ्यार फड़ बांधि उमरावन की,
कीन्ही तब नौरंग ने भेंट सिवराज की ॥१॥

सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग,
ताहि खरो कियो जाय जारिन के नियरे।
जानि गैर मिसिल गुसल गुसा धारि उर,
कीन्हो न सलाम न वचन बोले सियरे॥
'भूषन' भनत महाबीर बलकन लागो,
सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भये,
स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे॥

दरबारे-बादशाही इतिहास—लेखक के अनुसार, उस शोर गुल और चहल पहल को सुनकर—सन्नाटे को तोड़ते हुए कड़कती आवाज़ में औरंगजेब ने पूछा क्या मामला है !!! रामसिंह ने कहा—व्यंग से कहा—पहाड़ों के शीतल वातावरण में विचरने वाले शेर को—आगरा के मैदानों की गर्मी ने बेचैन और परेशान कर दिया है। शिवाजी दुर्योधन के राजदरबार में अपमानित पांडवों की भांति, विवश दिल ही दिल में घुलकर रह गया। औरङ्गजेब की दासता में जकड़े—दरबार में उपस्थित राजपूत, वीर केसरी शिवाजी के अपमान के प्रतिकार में चूं तक न कर सके। रामसिंह भी अपने पिता जयसिंह द्वारा, शाही अतिथि के रूप में

भेजे गये, शिवा जी की मान रक्षा के लिये कुछ न कर सका। स्वयं अपनी आन शान तथा मान मर्यादा को—दूसरों के आगे समर्पित करने वाले कर ही क्या सकते थे। औरङ्गजेब ने राजाज्ञा द्वारा शिवाजी को दरबार से बाहर भेज दिया और उसे, उसके लिये नियत—राजा जयसिंह के निवास स्थान में ठहरा दिया। राजकीय अतिथि को—राजकीय बन्दी बना कर—औरङ्गजेब ने अपनी नीतिहीनता का परिचय दिया। राजा जयसिंह ने शिवा जी को बड़ी २ आशाएं दिलाकर भेजा था, यह भी सम्भावना थी कि एक बार शिवाजी दरबार में उपस्थित हो जाय, औरङ्गजेब के प्रति आधीनता प्रकट कर दे, फिर उसे दक्षिण का शासक भी बनाया जा सकता था। उसकी सहायता से—अकबर के समय से सिर उठाने वाली दक्षिणी रियासतों को सदा के लिये मलियामेट किया जा सकता है।

× × × ×

बन्दी शिवाजी

परन्तु औरङ्गजेब चाणाक्ष—दूरदर्शी—स्वभाव से अविश्वासी था। वह अपने असली शत्रु को—उठते हुए बलवान शत्रु को पहचानता था—वह समझता था कि आदिलशाही और कुतुबशाही दरबार स्वयं अन्दरूनी अन्तः कलह के कारण जीर्णशीर्ण हो रहे हैं। शिवा जी मौका पाते ही उनको अपने आधीन करने से न चूकेगा। असली शत्रु शिवाजी है—इस मौके से लाभ उठा कर इसे कैद कर सदा के लिए इसकी गति को रोकना चाहिए। इस विचार से औरङ्गजेब ने सब प्रकार के संकोच छोड़ कर, उसे आगरा की सीमा के बाहर जयसिंह के निवास स्थान में बन्दी कर दिया; और अपने विश्वासी आदमियों का पहरा लगा दिया। औरंगजेब

शिवाजी को दक्षिण से दूर—आगरा वा अफ़गानिस्तान का कैदी बना कर, स्वयं दक्षिण को जीतने के मनसूबे बांधने लगा। शिवाजी ने असली स्थिति को ताड़ लिया। अब वह अनेक उपायों द्वारा, दरबार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा औरङ्गजेब के सामने उसकी राजनैतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने वाले प्रस्ताव उपस्थित करने लगा। बीजापुर और कुतुबशाही को जीतने के लिये अपनी सेवाएं समर्पित कीं। सब संभव उपायों से दक्षिण में जाने की कोशिश की। परन्तु औरङ्गजेब पर किसी बात का असर न हुआ। शिवाजी इस विषम परिस्थिति से घबराया नहीं। वह दिन रात यहां से निकल भागने की योजनाएं सोचने लगा। अन्त में निम्न-लिखित योजना द्वारा शिवाजी औरङ्गजेब के चुङ्गल से निकल भागा।

शिवाजी ने दरबारियों तथा पहरेदारों को अपनी उदारता, विनय-शीलता से अपने अनुकूल बनाना शुरू किया। उसने औरङ्गजेब से प्रार्थना की कि उसके साथ आए हुए मराठे सिपाहियों को दक्षिण वापिस भेजा जाय। औरङ्गजेब ने उनको वापिस जाने की आज्ञा दे दी। इससे औरङ्गजेब ने शिवाजी को अकेला करने के लिये, और शिवाजी ने उनको सुरक्षित दक्षिण में भेज कर वहां काम करने वालों के सामने मुग़ल दरबार की असली स्थिति रखने का अवसर ढूंढा।

शिवाजी बीमार की भांति दिनचर्या व्यतीत करने लगा। हर रोज सायंकाल ब्राह्मणों; फकीरों और दरबारियों के लिये बँहगियों पर मिठाई के बड़े २ भरे हुए टोकरे दान उपहार के रूप में भेजे जाने लगे। शुरू में पहरेदार कई दिनों तक इन टोकरों की तलाशी तथा जांच पड़ताल करते रहे। और फिर बिना जांच के उन्हें बँहगियों तथा मिठाई के टोकरों को बाहर

जाने देने लगे। १६ अगस्त को शिवाजी ने पहरेदारों को कहला भेजा कि मैं ज्यादा बीमार हो गया हूं और दिनभर बिस्तर पर लेटा रहता हूं। अतः मुझे कोई पहरेदार पूछताछ से परेशान न करे।

शिवाजी वैरागी के वेष में

अपने भाई हीराजी फर्जन्द को अपने बिस्तर पर लिटा दिया। उसने ऊपर चादर तानली। चादर से बाहर निकले हुए हाथ में शिवा जी का सोने का कड़ा पहन लिया और बीमार बन कर सो गया। इधर शिवाजी सूर्यास्त के बाद उस दिन जाने वाली बहँगियों में, पहले जाने वाली बहँगियों में से एक बंहगीमें एक तरफ़ स्वयं तथा दूसरी तरफ अपने बेटे सम्भाजी के साथ पहरे से बाहर निकल गया। पीछे हर रोज की भांति मिठाई के टोकरे बाहर भेजे गये। किसी को किसी प्रकार का संदेह न हुआ। मिठाई के टोकरों को शहर के बाहर एकान्त स्थान में छिपाकर रख दिया गया। बँहगी उठाने वालों को विदा कर दिया गया। शिवाजी अपने पुत्र के साथ वहां से आगरा से ६ मील दूर गांव में विश्वासनीय नीराजी राव जी के पास पहुँचा। जंगलमें परस्पर परामर्श करके, सारी टोली दो दलों में बँट गई। शिवाजी ने अपने पुत्र तथा नीराजी रावजी, दत्ता त्रिम्बक और रघुमित्र मराठे के साथ अपने देह पर भस्म रमाली और भभूत हिन्दु साधुओं के वेश में मथुरा की राहली। शेष साथियों ने अपने घर का रास्ता लिया।

इधर हीरा जी फर्ज़न्द रात भर तथा अगले दिन दुपहर तक बिस्तर में लेटा रहा। पहरेदार शिवाजी के सोने के कड़ों तथा नौकर को बीमार के पांव में मालिश करते देखकर निश्चिन्त रहे। दुपहर ३ बजे हीरा जी फर्जन्द अपने नौकर के साथ बाहर निकल गया।

और जाते हुए द्वार रक्षकों से कह गया कि देखो, शिवाजी बीमार है शोरमत मत मचाओ। उसे आराम से चुपचाप सोने दो।

कुछ समय बाद पहरेदारों ने उस स्थान पर सुनसान सन्नाटा अनुभव किया। अब लोगों का आना जाना बिल्कुल बन्द हो गया। उन्हें कुछ २ संदेह होने लगा। शिवाजी के स्थान पर गये और उसके बिस्तर को देखा—तो-वहां कोई न था। देखकर हैरान और स्तम्भित होगए। पक्षी उड़ गया। हाथ में आया हुआ शत्रु आंखों में धूल झोंक कर उड़ गया। एकदम कैदखाने के बड़े अफ़सर फुलादखान को इत्तिला दी गई। उसने एक दम औरंगजेब को शिवाजी के, जादू का प्रयोग पर वहां से निकल जाने की खबर पहुँचाई। उसने कहा हम उसे लगातार देखते रहे; पता नहीं कब जादू के चमत्कार से वह आकाश में उड़ गया, या भूमि में छिप गया। औरंगजेब इन बातों से सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने एक दम चारों तरफ अपने गुप्तचर पीछा करने के लिये दौड़ाए। जहां जो मराठा दिखाई दिया उसे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया गया। इतने में शिवाजी को एक दिन का समय मिल गया। वह कहीं से कहीं निकल गया। आगरा से दक्खिन तक सब मुमलाई थानों और शहरों में गुप्तचरों का जाल फैला दिया गया। परन्तु अब शिवाजी को पकड़ना मुश्किल ही नहीं, असंभव हो गया। औरंगज़ेब-दांत पीसता रह गया। उठते हुए बिद्रोही को तलवार चलाए बिना, रक्त-पात किये विना, नष्ट कर देने का मनसूबा काफूर हो गया। बेबसी और गुस्से के आवेश में, शिवाजी के निकल जाने की जिम्मेदारी जयसिंह के बेटे रामसिंह पर डाली गई। उसे पदच्युत कर दिया गया। उसका दरबार में आना बन्द कर दिया। इस

समाचार से राजाजयसिंह को बहुत ठेस पहुंची। अपने पुत्र के इस अपमान को देखकर वह हताश निराश हो गया। शिवाजी और औरंगजेब दोनों को कोसने लगा—पराधीनों तथा अपने जाति भाइयों को अपनी महत्वाकांक्षा के लिये बलि करने वालों के साथ ऐसा ही होता है। जयसिंह इस चिन्ता में परेशान रहने लगा—दक्खिन से उत्तर भारत को रवाना हुआ। उधर शिवाजी दक्खन में सुरक्षित पहुंच गया। जयसिंह रास्ते में ही बीमार होकर यम-लोक का यात्री बना। यदि तुम स्वयं स्वतन्त्र नहीं रह सकते हो—स्वयं अत्याचारी को ललकार नहीं सकते हो, तो कम से कम स्वतंत्रों को पराधीन बनाने वाले, तो मत बनो। यदि ऐसा करोगे—स्वतंत्रतादेवी के शाप के कारण—जीते जी कराहते हुए सब तरफ़ से निराश होकर नारकी मौत के यात्री बनोगे।

× × ×

शिवाजी अनेक वेषों में

शिवाजी ने मुगल गुप्तचरों की आंख से बचने के लिये महाराष्ट्र जाने के प्रसिद्ध मार्ग—मालवा खानदेश गुजरात का रास्ता छोड़कर, मथुरा, अलाहाबाद, बनारस, गया और पुरी की ओर प्रस्थान किया। वहां से गौंडवाना और गोलकुंडा होते हुए—भारत वर्ष की प्रदक्षिणा करते हुए रायगढ़ में पहुंचा।

मथुरा पहुंच कर शिवाजी ने अनुभव किया कि संभा जी के साथ यह साहसपूर्ण संकटाकीर्ण यात्रा निर्विघ्न समाप्त न हो सकेगी। मथुरा के तीन दक्षिणी ब्राह्मणों कृष्णा जी, काशी, और विसाजी ने अपने आपको खतरे में डाल कर राष्ट्रीयता के नाम पर सम्भा जी को, शिवा जी के महाराष्ट्र पहुंचने तक अपने साथ रखना स्वीकार

किया। यही नहीं कृष्णा जी ने शिवाजी को बनारस तक सुरक्षित पहुंचाने के लिये पथ प्रदर्शक बनना भी स्वीकार किया।

शिवाजी ने सन्यासियों वाले, अन्दर से खोखले दण्ड में, जवाहरात और स्वर्ण मुद्राएं भर लीं। कुछ रुपया अपनी जूतियों में छिपाकर रखा। साथ जाने वाले विश्वस्त नौकरों के पहने हुए कपड़ों में और उनके मुखों में कीमती हीरे जवाहरात छिपा दिये। आगरा से मथुरा तक शिवाजी ६ घंटों में पहुंचा। वहां पहुंच कर उसने दाढ़ी मूंछ साफ़ कराई। देह पर भस्म-रमाई। सन्यासियों के कपड़े पहने। दक्खनी बहुरूपिये हरकारों के साथ भिन्न २ रूपों में अनेक प्रकार के वेष धारण करने वाले साथियों के साथ शिवाजी रात को यात्रा करता था। शिवा जी के साथ ५० नौकर थे। इनकी तीन टोलियां बनीं। इन लोगों ने वैरागियों, उदासियों और गोसाइयों के वेश धारण किये।

शिवाजी अपने साथियों के साथ लगातार अपना वेश बदलते हुए यात्रा करने लगा। कभी व्यापारियों का बाना पहनता तो, कभी भिखारियों का वेश। किसी को भी आशा न थी कि वह पर्वीय प्रदेशों से यात्रा करेगा—उसका सीधा रास्ता पश्चिमीय प्रदेशों से था। फिर भी मुगल दरबार के—नहीं नहीं—औरंगज़ेब जैसे चाणाक्ष—चालाक—सूक्ष्मदर्शी बादशाहके; भारत के कोने२ में फैले हुए, गुप्तचर विभाग की आंखों से बचकर निकलना मुश्किल था।

एक शहर में मुगल दरबार के एक अफ़सर अली कुली ने संदेह होने पर उन सब को गिरफ्तार कर लिया। उसे सरकारी तौर से तो नहीं, परन्तु आगरा में रहने वाले एक मित्र के पत्र से पता लगा था कि शिवाजी वहां से भाग निकला है। उसने इन

सब की तलाशी लेनी शुरू की। शिवाजी इससे घबराया नहीं। उसने सावधानी से काम लिया। मध्य रात में, एकान्त में फौजदार अली कुली को जगाया—उसके सामने अपना असली रूप प्रकट कर उसे हीरे जवाहरात देकर चुप होने की प्रेरणा की। फौजदार ने भेंट स्वीकार की और शिवाजी को वहां से आगे जाने दिया। अत्याचारी बादशाहों के प्रबन्ध, इस प्रकार के लालची अफसरों के कारनामों से खोखले हो जाते हैं।

जिस शासन में इस प्रकार की रिश्वत लेने की प्रथा चल जाय उसके अन्तिम दिन निकट समझने चाहिए। साधारण जनता की इच्छा के प्रतिकूल, तलवार के बल पर चलने वाले शासकों की जड़ों को, ऐसे रिश्वतखोर लालची अधिकारी ही खोखला तथा छिन्न मूल करते हैं।

इलाहाबाद में गंगा यमुना के संगम पर स्नान करने के बाद शिवाजी बनारस पहुँचा। यहां पर शिवाजी ने प्रभात काल के धुंधले उषाकाल में तीर्थयात्री के कर्तव्य - तथा पूजा—कीर्तन संस्कार शीघ्र किये और उसी समय शहरमें आगरा से आए हुए, एक हरकारे द्वारा बादशाह की ओर से शिवाजी को गिरफ्तार करने की घोषणा के होते २ शिवाजी बनारस से अंधेरे २ में आगे निकल गया।

इस विषय में खाफ़ीखान ने निम्नलिखित घटना का वर्णन किया है—

मैं जब सूरत में रहता था तो एक ब्राह्मण वैद्य ने मुझे निम्न लिखित घटना सुनाई थी।

मैं बनारस में एक ब्राह्मण के पास शिष्य रूप में रहता था। एक बार प्रातःकाल अँधेरे में, मैं नियमानुसार गंगा तट पर गया।

वहां एक आदमी ने जबर्दस्ती मेरा हाथ खींचा। उसमें हीरे जवाह-रात और सुनहरी सिक्के रखते हुए कहा कि इसे खोलो मत—भेंट लो, जल्दी २ स्नान पूजा पाठ की विधि करो। मैं जल्दी में उसका चौर कर उसे स्नान कराने लगा—अभी स्नान समाप्त नहीं हुआ था—कि एक दम शोर गुल मच गया कि आगरा से मुगल दरबार का हरकारा शिवाजी की तलाश में आया है। मैं अभी स्नान करने तथा अन्य संस्कार कराने के लिये सावधान हुआ ही था कि क्या देखता हूं कि—यात्री—वहां से खिसक गया है। तब मैंने समझा कि यह व्यक्ति शिवाजी था। शिवाजी ने मुझे ६ हीरे, ६ अशर्फियां ६ हुन दिये थे। मैं अपने गुरू के पास नहीं गया। सीधा सूरत में आ गया। वह मकान जिसमें मैं रहता हूं—उसी धन से खरीदा हुआ है। वहां से शिवाजी गया—और जगन्नाथ-पुरी पहुंचा। अभी तक लम्बी यात्रा—पैदल ही होती थी।

पुरी में शिवाजी ने घुड़सवारी करने की इच्छा प्रकट की। यहां उसने घोड़े के व्यापारी से घोड़ा खरीदना चाहा। परन्तु उसके पास रुपये न थे। उसने उस व्यापारीको रुपये के स्थान पर सोनेकी मुहरें देकर घोड़ा खरीदना चाहा। इस समय तक वहां भी शिवाजी के आगरा से भाग जाने की खबर पहुंच गई थी। उस व्यापारी ने रुपये के बदले सोने की मोहरें देखते हुए कहा कि तुम शिवाजी हो—क्योंकि तुम छोटे से घोड़े के लिये, सुनहरी मोहरें दे रहे हो। शिवाजी ने उसको सोने की मोहरों वाली गुथली देकर चुप कराया और स्वयं वहां से तत्काल आगे विदा हुआ; और जगन्नाथपुरी में स्नान पूजा करके शिवा जी गौड़वाना हैदरा-बाद और बीजापुर के प्रदेशों में यात्रा करता हुआ अपने घर वापिस रायगढ़ में पहुंचा।

इस साहसपूर्ण यात्रा के सम्बन्ध में निम्नलिखित दन्तकथा भी सुनी जाती है। गोदावरी नदी के तट पर एक गाँव में एक किसान के घर में इन संन्यासियों ने आश्रय लिया। यजमान की वृद्ध माता ने सन्यासियों के सामने—नाम मात्र की, अल्प मात्रा में, भेंट उपस्थित की और कहा कि शिवा जी के लुटेरे सिपाहियों ने अभी इस गांव को लूट कर उजाड़ दिया है। उसने उन सिपाहियों तथा उनके स्वामी को दिल भर के शाप तथा अपशब्द सुनाए। शिवाजी ने उस किसान का नाम, गांव का नाम अङ्कित किया और घर जाने पर उस परिवार को वहां बुलाकर उनको दिल खोल कर इनाम दिया और उनकी लुटी हुई सम्पत्ति से ज्यादा सम्पत्ति उन्हें दी।

× × × ×

शिवाजी के महाराष्ट्र में सुरक्षित लौटने पर राष्ट्र ने आनन्दोत्सव मनाए। जनता उसे अजेय और चमत्कारी पुरुष मानने लगी। सम्भा जी अभी मथुरा में था। शिवाजी ने राष्ट्र में यह समाचार फैलाया कि सम्भा जी मर गया है—इसके लिये सार्वजनिक शोक भी किया गया। यह सब इसलिये कि मुगल गुप्तचर उसकी तलाश में न लगें—कुछ समय बाद शिवाजी ने मथुरा से मराठा ब्राह्मण साथियों के साथ उसे दक्खन में बुला लिया। कहा जाता है कि एक बार मुगल गुप्तचरों को सम्भा जी और उनके साथियों पर संदेह हो गया—उस समय—ब्राह्मणों ने भी सम्भा जी के साथ एक साथ बैठ कर भोजन किया इससे उन्होंने सम्भा जी को भी ब्राह्मण समझा और उनका संशय दूर हो गया। शिवाजी ने सम्भा जी के लौटने पर उसको सुरक्षित पहुंचाने वाले साथियों का संमान किया उन्हें भेंट पुरस्कार दिये। शिवाजी तथा उसके पुत्र के लिये अपने आपको मुसीबत में डालने वालों को भी पर्याप्त दान राशि तथा जागीरें दी गईं।

शिवाजी के इस प्रकार आगरा से बच निकलने पर औरंगजेब को बहुत अफ़सोस हुआ। वह शेष जीवन भर इसके लिये पछताता रहा। और लाचार उसने अपनी अन्तिम वसीयत और मृत्यु पत्र में इस विषय में इस प्रकार के भाव प्रकट किये: -

"किसी भी सरकार (शासन चक्र) को स्थिर पाये पर खड़ा करने का मुख्य साधन, राजाधिकारियों को उस राष्ट्र में होने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म घटनाओं का पता रखना है—ऐसा न होने पर एक मिनट की लापरवाही तथा असावधानी कई बार चिरकाल के लिये लज्जा-तथा शोक जनक परिणामों को पैदा करती है। देखो! इसी प्रकार की असावधानी और लापरवाही के कारण शिवाजी आगरा से निकल भागा। और इस भूल के कारण मुझे जीवन के अन्तिम दिनों में परेशान करने वाली लड़ाइयों में उलझना पड़ा।"

× × × ×

१६६६ ई० में शिवाजी के दक्षिण वापिस आने की खबर सर्वत्र प्रमाणित रूप में फैलगई। इस समाचार को सुनते ही शिवाजी के सिपाही तथा अनुयाई स्थान २ पर मुगल सेनाओं के विरुद्ध विद्रोह करने लगे। जयसिंह का प्रभाव तथा नियंत्रण शिथिल और क्षीण होने लगा। उसने फिर से शिवाजी को अपने चंगुल में फंसाने के लिये अपने पुत्र का शिवाजी की कन्या के साथ—विवाह करने का प्रस्ताव-जाल भी बिछाना चाहा। इसके लिये मुगल दरबार के प्रधान मंत्री जाफ़रखान से पत्र व्यवहार भी किया। परन्तु अब शिवाजी इस जाल में नहीं फंस सकता था। इस निराशा और पराजय से जयसिंह खिन्न हो गया। बीजापुर के आधीन प्रदेशों पर किये गये आक्रमणों में भी, उसे पराजित होना पड़ा;

और बुढ़ापा भी सिर पर आ पहुंचा। शिवाजी के आगरा में जय-सिंह के निवास स्थान से निकल आने के कारण औरंगजेब के हृदय में उसके लिये अविश्वास का भाव पैदा हो गया था। अपने पुत्र रामसिंह को मुगल दरबार में अपमानित होता देख वह बहुत दुःखी हुआ। १६६७ मई में औरंगजेब ने राजकुमार मुअज्जम को दक्षिण का शासक नियत करके भेजा। जयसिंह उसे कार्य भार सौंप कर उत्तर भारत को रवाना हुआ। रास्ते में २ जुलाई १६६७ को बुरहानपुर में चिन्ता और निराशा से खिन्न जयसिंह परलोक को सिधारा।

६

अपमान का प्रतिकार

दक्षिण वापिस आकर शिवाजी ने सब से प्रथम यह आवश्यक समझा कि इस समय बिखरी हुई; अनुपस्थिति में शिथिल तथा मन्द पड़ी हुई अपनी शक्ति को गतिशील और संगठित करे। इसके लिये आवश्यक था कि वह कुछ समय तक रणाङ्गण की चहल पहल से अलग रहे। संभावना यह थी कि औरंगजेब अपने दल बल के साथ शिवाजी का दमन करने के लिये स्वयं महाराष्ट्र में आयेगा। परन्तु उत्तर भारत में विद्रोहियों को दबाने में, उसे अपनी शक्ति को लगाना पड़ा। मुगल दरबार में भी उसका उपस्थित रहना आवश्यक था। शिवाजी ने भी औरंगजेब को इधर आने से रोकने के लिये उसके साथ स्वयं तथा मुअज्जम द्वारा संधि चर्चा शुरू कर दी।

× × × ×

घटना-संयोग से दक्खन में मुगल दरबार का नया शासक राजकुमार मुअज्जम स्वभाव से आराम पसन्द था। उसकी सहायता के लिये महाराज यशवन्तसिंह को भेजा गया था। वह भी यथा संभव लड़ाइयों से पृथक् रहना चाहता था। शिवाजी ने इन दोनों की मध्यस्थी का फायदा उठा कर औरंगजेब के साथ संधि चर्चा

शुरू की। अपने पुत्र संभाजी तथा अपनी सेना की टुकड़ी को मुगल दरबार में भेजना स्वीकार किया। औरंगजेब ने भी उत्तर भारत के विद्रोह को दबाने के लिये इधर शान्ति की नीति स्वीकार की। परन्तु दक्खन के विद्रोहियों—तथा प्रतिद्वन्दियों पर आंख रखने, और राजकुमार मुअज्जम और यशवन्तसिंह पर निगरानी रखने के लिये अपने विश्वास पात्र अनुभवी सरदार दिलेरखान को भारी सेना के साथ दक्खिन भेजा। उसकी सहायता के लिये दाऊदखान भी साथ था। मुअज्जम तथा यशवन्तसिंह, दिलेरखान के प्रभाव को कम करना चाहते थे। दिलेरखान सीधा मुगल दरबार का प्रतिनिधि बन कर इन्हें शिवाजी के साथ मिलने नहीं देना चाहता था। परिणाम यह हुआ कि राजकुमार मुअज्जम और दिलेरखान में अन बन हो गई। दक्खिन के मुगल कर्मचारी आपस में ईर्ष्या द्वेष की ज्वाला में झुलस गये। शिवाजी ने इस परिस्थिति से लाभ उठाया। मौका देख कर पुरन्दर की अपमानजनक संधि को नष्ट भ्रष्ट करने का निश्चय किया। इस संधि के कारण शिवाजी को अपने २३ पहाड़ी किले जयसिंह के द्वारा मुगल दरबार के आधीन करने पड़े थे। मुअज्जम और यशवन्तसिंह की शान्तिप्रिय नीति के कारण शिवाजी ने धीरे २ कई किले वापिस ले लिये। परन्तु रायगढ़ से—दिखने वाला—शिवाजी की बाल लीलाओं का क्रीडा स्थान—कोंडाणा किले पर फहराती हुई मुगल पताका—राजमाता जीजाबाई के हृदय में वेदना और अपमान की ज्वाला को सुलगाती थी। उसका पुत्र आगरा से सुरक्षित वापिस आ गया था। महाराष्ट्र की लक्ष्मी विजयश्री—सुरक्षित अक्षु महाराष्ट्र में पुनः रायगढ़ किले में अधिष्ठित हो गई। पुरंदर संधि की अपमान जनक कड़ियां भी छिन्न भिन्न हो गई थीं परन्तु—कोंडाणा किले पर फहराती हुई

मुगलों की पताका—महाराष्ट्रीय स्वाधीनता को हर समय चुनौती दे रही थी। जीजा बाई ने इस किले पर अपना झंडा लहराने की इच्छा प्रकट की। माता की इच्छा—आशीर्वाद के सामने शिवाजी ने सिर झुकाया। कोडांणा किले को सर करने की तैय्यारियां होने लगीं।

× × ×

सिंहों का रोमांचकारी युद्ध

कोडांणा किले का महत्व समझते हुए, औरंगजेब ने इस किले का रक्षक राजपूत वीर उदयभान को नियत किया था। वीर राजपूत वीरता की आनशान में अपना सर्वस्व लुटा देगा परन्तु रणांगण से पीछे न हटेगा। राजपूत वीरता को—डटे रहने को—अंतिम लक्ष्य समझते थे। उनके लिये यही अंतिम उद्देश्य था—किस की तरफ़ से लड़ रहे हैं—किससे लड़ रहे हैं - आपस में लड़ रहे हैं या पराये से, या भाई भाई से—इसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं, उनके लिये तो पीछे हटना—मरना है। इसी मनोवृत्ति के कारण विदेशियों ने—"शाबास राजपूत शेर" की थपकी देकर, मानसिंह को प्रताप से लड़ाया—प्रताप को सहोदर शक्ता से लड़ाया—जयचंद को पृथ्वीराज से लड़ाया। औरंगजेब ने यशवन्त को जयसिंह का प्रतिस्पर्धी बनाया—अनेक राजपूतों को मराठों के मुकाबले में वीरता के नाम पर लड़ाया। पुरंदर में भी शिवाजी के सेनापतियों के मुकाबले में 'उदयभान' को तैनात किया—उसे पता था कि उसके मुगल सिपाही चोट लगते ही वीरता की आन बचाने से पहले, अपने शरीर अपने प्राण को बचाएंगे। वह प्रत्यक्षवादी वीरता शूरता, चतुरता सब को आत्मरक्षा का साधन समझते हैं।

× × × ×

राजपूत उदयभान अपने मोर्चे पर खड़ा है। शिवाजी का बाल-

सखा, माता जीजाबाई के आदेश पर पुत्र के विवाह समारोह को छोड़ कर भवानी तलवार की अर्चना के लिये कोंडाणा की ओर बढ़ा। किला दुर्गम अजेय तथा सुरक्षित है। परन्तु शिवाजी के बालसखा के लिये, महाराष्ट्र की भूमि पर कोई स्थान अगम्य और अजेय नहीं। ताना जी मालसरे ने ३०० चुने हुए माबलिये सरदार अपने साथ लिये। एक अंधेरी रात को, उस स्थान के रहने वाले कुछ कोली पथदर्शकों के साथ कल्याण-द्वार के पास एक पहाड़ी पर, रस्सी की सीढ़ियों से चढ़ गया। वहां से पहरेदारों को मारता हुआ ताना जी मालसरे किले की ओर बढ़ा। किले के रक्षकों ने खतरे का बिगुल बजा दिया। अफ़ीम के नशे में चूर राजपूतों को शस्त्र बांध कर बाहर आने में कुछ समय लगा—इतने में मराठा बीर सिपाही अपना पैर जमा चुके थे। किले के संरक्षक सिपाही जी जान से लड़े—प्राणों को हथेली पर रख कर लड़े। परन्तु मावले बीरों के 'हर हर महादेव' के नारे ने राजपूत सिपाहियों में भय-आतंक की चिनगारियां बखेर दीं। ताना जी मालसरे और उदयभान दोनों एक दूसरे के आमने सामने आए। दोनों ने एक दूसरे को ललकारा दोनों की तलवारें चमचमाने लगीं। दोनों की टक्कर से आंखों को चौंधियाने वाली चिनगरियां निकलने लगीं। कोई पीछे नहीं हटा। घमासान युद्ध हुआ। सुन्द उपसुन्द की भांति बीरता और विजय-लक्ष्मी का आलिंगन करने के लिये दोनों में घमासान युद्ध हुआ। लड़ते लड़ते दोनों धराशायी हुए। ताना जी मालुसरे के धराशायी होते ही, मराठा बीर हतोत्साह होने लगे थे, इतने में उसका भाई सूर्याजी मालुसरे आगे बढ़ा। उसने भवानी की तलवार को संभाला, वीरों को उत्साहित तथा उत्तेजित किया। किले के अंदर राजपूत सिपाहियों को तलवार का यात्री बना कर किले के बाहर

एकत्र मावले वीरों को अंदर आने के लिये, किले के कल्याण द्वार के फाटक खोल दिये। मुख्य द्वार के खुलते ही किलेपर मराठे वीरों का पूर्ण अधिकार हो गया। इसके बाद मारकाट शुरू हुई। १२०० राजपूत तलवार की धार पर उतारे गये। अनेकों किले से बाहर निकलने की कोशिश में पहाड़ियों से बचकर निकलने की उलझन में मर मिटे। विजेता मराठों ने—घुड़सवारों की झोंपड़ियों में आग लगाकर—जलती हुई ज्वाला की लपटों से—यहां से ६ मील दूर—रायगढ़ किले में शिवाजी को किला सर करने की सूचना दी। किला जीतने की खबर के साथ २ ताना जी मालसरे की मृत्यु का शोकजनक समाचार भी सुना—मर्मान्तक हार्दिक वेदना के साथ "गढ़ आया पर सिंह गया" के हृदयोद्गार के साथ शिवाजीने उस किले का नाम सिंहगढ़ रखा। दो वीर, तलवार के धनी योद्धाओं के रक्त से सिंचित किले को सिंहगढ़ के सिवाय और किस नाम से स्मरण किया जाता। शिवाजी वीर था—वह वीरों की पूजा करना जानता था। उसने किले का नाम सिंहगढ़ रख कर अपने बालसखा ताना जी का नाम वीरता के इतिहास में अमर कर दिया।

× × × ×

तीन महीने के बाद मार्च में पुरन्दर का किला भी अजीजद्दीन खान किलेदार को गिरफ्तार कर मराठों के हाथ में आगया। १६५० ई० अप्रेल तक शिवाजी ने माहली आदि अनेक किले अपने आधीन कर लिये। मुगल सेनापति दाउदखान ने शिवाजी को माहलि आदि अनेक स्थानों पर रोकने की कोशिश की। परन्तु देर तक वह भी मुकाबला न कर सका। दक्खन में मुगल सेनापतियों में परस्पर कलह शुरू हो गया। शाहजादे मुअज्जम और दिलेरखान

में अनबन बढ़ती गई। औरंगजेब ने इसको दूर करने की कोशिश की, परन्तु सफल न हो सका। शिवाजी ने दक्खन के मुगल सेनापतियों के अन्तःकलह से खूब लाभ उठाया। औरंगजेब को अपने पुत्र मुअज्जम पर भी संदेह पैदा हो गया था। औरंगजेब की शक्ति भी दिन प्रतिदिन वृद्धावस्था के साथ कमज़ोर हो रही थी। शाहज़ादा मुअज्जम यशवन्त के साथ मिल कर उत्तर भारत को आ रहा था—औरंगजेब ने १६७० ई० में उसको एक दम औरंगबाद वापिस भेजा।

इस समय शिवा जी की शक्ति और हैसियत दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी। वह औरंगज़ेब के प्रभाव को मटिया मेट कर रहा था। जनता उसके प्रभाव के सामने सिर झुका रही थी। पुरन्दर की संधि छिन्नभिन्न होगई थी। १६७० ई० मार्च महीने में सूरत में रहने वाले अंग्रेज़ी कोठी के व्यापारियों ने अपने मालिकों को निम्न लिखित संदेश भेजा था।

"शिवा जी अब चोरों की भांति मार धाड़ नहीं करता। परन्तु अब उसके पास ३०,००० सिपाहियों की सेना है। वह जिधर बढ़ता है; उधर ही मैदान सर करता है। मुगलों के सेनापति तथा मुगलाई शाहज़ादे उसकी गति को रोक नहीं सकते।"

युद्धों के कारण राजकोष खाली हो रहा था। औरंगजेब जज़िया कर द्वारा—अपने राजकोष को पुर कर रहा था। शिवा जी ने मुकाबले में १६७० ई० के मास में सूरत पर—दूसरी बार हमला किया। डच, अंग्रेज़ व्यापारियों ने आत्मरक्षा में हथियार उठाए। मुगल अफ़सर शिवाजी को रोक न सके। शिवाजी ने अपने बिजली के समान चमक कर छिपने, और प्रकट होने वाले सिपाहियों की सहायता से सूरत को लूटा! खूब लूटा!! सरकारी बयान

के अनुसार शिवा जी ने ६६ लाख रुपये की सम्पत्ति सूरत से ली। ५५ लाख की सम्पत्ति सूरत शहर से—और १३ लाख की सम्पत्ति नवल साहू और हरिसाहू नाम के व्यापारियों से छीनी। शिवा जी के आक्रमणों तथा संभावित आक्रमणों की अफवाहों ने सूरत के व्यापार को बिलकुल तहस नहस कर दिया। व्यापारी लोग वहां आने से घबराने लगे। शाहज़ादा मुअज्जम ने सूरत की लूट का बदला लेने की कोशिश की। परन्तु कई स्थानों पर शिवा जी पर हमला करने की योजना की; परन्तु उसकी गति को वह भी न रोक सका। शिवा जी की विजययात्राओं की धूम सारे देश में मच गई। भारतवर्ष के विविध प्रान्तों के, मुगल-अत्याचारों तथा औरंगजेबी शासन नीति से खिन्न वीर पुरुष शिवा जी के चारों ओर एकत्र होने लगे।

× × ×

छत्रसाल और शिवा जी

१६७०—१६७१ ई० में महोबा के राजा चम्पतराय बुन्देल का पुत्र छत्रसाल शिवा जी के पास दक्खन में आया। मिर्ज़ा जयसिंह ने इस नवयुवक को शाही सेना में भी भर्ती किया। गोंड प्रदेश पर इसने मुगल सेना के साथ आक्रमण किया। परन्तु औरंगजेब की अनुदार नीति ने इसे असन्तुष्ट और अपमानित किया। यह युवक मौका देखकर अपनी वीर धर्मपत्नी के साथ—शिकार करने के निमित्त से शाही फौज से अलग होकर निकल भागा और दक्खन में शिवा जी की स्वतन्त्र सेना में भर्ती होने के लिये पहुंचा। शिवा जी ने उसका सन्मान पूर्वक अभिनन्दन किया और उसकी वीरता की प्रशंसा की। शिवा जी ने छत्रसाल को बुन्देलखण्ड में औरङ्गजेब के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये वापिस

भेजा और निम्न लिखित परामर्श दिया।

सम्मान योग्य वीर श्रेष्ठ! अपने शत्रुओं को जीतो और उनका दमन करो। अपनी मातृभूमि को शत्रुओं से छीनकर स्वयं उस पर राज करो। उचित यही है कि तुम अपने आधीन प्रदेशों में औरंगज़ेब के विरुद्ध—लड़ाई जारी रखो। वहां तुम्हारी वीरता और स्वाधीनता की तड़प तुम्हारे चारों ओर वीर पुरुषों को इकट्ठा कर देगी। जब कभी मुगल सेनाएं या मुगल दरबार तुम्हारे प्रदेश पर आक्रमण करने का इरादा करेंगे—मैं तुम्हें पूर्ण सहयोग दूंगा। उनको तुम्हारी ओर जाने से रोकूंगा और उनका ध्यान दूसरी तरफ़ खींचने में, उन्हें दूसरे रण क्षेत्र में व्यग्र रखने में कसर न करूंगा।

छत्रसाल इस वीर-संदेश को लेकर बुन्देलखण्ड वापिस आया और उसने शिवाजी के परामर्श के अनुसार-बुन्देलखण्ड में मुगलों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर औरंगजेब की शाहनशाही के रोबदाब को मटिया मेट करने में कोई बात शेष न रखी। इस प्रकार शिवाजी धीरे २ भारतीय राष्ट्र के स्वाधीनता प्रेमी वीरों का पूजनीय केन्द्र स्थान बन गया। राष्ट्र के वीर उसे, औरंगजेब के मुकाबले का प्रति द्वन्दी समझ कर उसके चारों ओर इकट्ठे होने लगे।

१६७१—१६७२ में शिवाजी ने लगातार लड़ाइयां करके बगलाना और कोली प्रदेश, कोंकण के जवाहर और रामनगर अपने आधीन कर लिये। १६७३ ई०में पन्हाला के प्रदेश को और १६७४ में कोल्हापुर और पोंडा पर शिवाजी का पूर्ण अधिकार होगया। इस प्रकार १६७५ में शिवाजी की राजसीमा पश्चिमी कर्नाटक तक पहुँच गई।

१०

शिवा जी का राज्याभिषेक समारोह

* विक्रमार्जित राज्यस्य स्वयमेव नरेन्द्रता ।

†क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः ।

पराक्रम द्वारा राज्य स्थापित करने वाला अभिषेक और संस्कार की अपेक्षा नहीं रखता, जनता स्वयं ही उसे राजा की तरह पूजने लगती है। जनता शिवा जी को अन्यायी शासकों के अत्याचार तथा अन्याय से रक्षा करने वाले राजा के रूप में पूजती थी। यद्यपि शिवाजी जन्म से मराठा थे—उस समय के रूढ़ी वादी जन्मगत श्रेणी भेदों को मानने वाले—उसे द्विज तक मानने को तैयार न थे—परन्तु शिवा जी ने जनता को, गौ ब्राह्मण को—अत्याचारियों की तलवार से बचा कर अपने आप को सच्चा क्षत्रिय प्रमाणित किया। उसके इस गुणोत्कर्ष को देखकर उसकी इस चमत्कारी आकर्षण शक्ति और तेज को देख कर—स्वयं जनता उसे क्षत्रपति-छत्रपति के रूपमें पूजने लगी। उस समय की जागृत जनता की धार्मिक उमंगों का मान करते हुए शिवाजी ने नियम पूर्वक राज्याभिषेक संस्कार कराना निश्चित किया। गागाभट्ट ब्राह्मण ने शिवाजी को मन्त्र दिया और यज्ञोपवीत धारण कराकर गुणकर्मानुसार क्षत्रिय बना कर अभिषिक्त

---

* पराक्रम से प्रदेश जीतने वाला स्वयं सिद्ध राजा है।

† प्राणिमात्र को क्षत आघात से बचाने वाला ही सच्चा क्षत्रिय है।

राजा होने का अधिकारी घोषित किया। चिरकाल की रूढ़िप्रथाओं और भोगवाद के कारण जीर्ण शीर्ण क्षत्रिय जाति के जन्मा-भिमानी, गुणहीन निश्चेष्ट होने पर, आर्य जाति के संचालक समय समय पर, नए नए वीर पुरुषों को क्षत्रिय धर्म में दीक्षित कर—नए क्षत्रियों की सृष्टि करते रहे हैं।

८वीं नवीं शताब्दी में आबू पर्वत पर इसी प्रकार के नए क्षत्रिय सजाये गये थे। इन वंशों ने चिरकाल तक भारतवर्ष को विदेशियों के आक्रमणों तथा अत्याचारों से सुरक्षित रखा। उत्तर भारत में पञ्चनद प्रान्त में गुरु गोबिन्द सिंह ने—पाहुल और चण्डी देवी का यज्ञ रचा कर इसी प्रकार के क्षत्रिय रचाए थे। इधर गुरु रामदास की आध्यात्मिक छत्र छाया में गागा भट्ट ने शिवाजी को क्षात्रधर्म में दीक्षित किया। क्षत्रधर्म में दीक्षित होते समय सुवर्ण छत्र आदि के तुला दान किये गये।

६ जून का दिन राजाभिषेक के लिये नियत किया गया। ५जून का दिन संयम-उपवास-व्रत में बिताया गया।

भारत की गंगा आदि नदियोंके तीर्थ जलसे शिवाजी ने स्नान किया। गागा भट्ट को ५०००हून दान दिये गये। उपस्थित ब्राह्मणों को सौ सौ सुनहरी मोहरें दी गईं। १६७४ई० ६जून को राज्याभिषेक का समारोह प्रारम्भ किया गया। प्रभात वेला में स्नान किया। कुलकी इष्ट देवता की अर्चना की। कुलपुरोहित गागा भट्ट की चरण वन्दना की। पवित्र शुभ्र वेष के साथ सुगन्धित पुष्प मालाएं धारण कीं। अभिषेक के लिये नियत स्थान पर शिवाजी उपस्थित हुआ। इस स्थान पर दो फीट ऊंचे, दो फीट चौड़े सुनहरी-पत्रों से जड़ित आसन पर शिवाजी आसीन हुआ। महाराणी सोयरा

बाई, शिवाजी के बाईं ओर बैठीं। सोयरा बाई का उत्तरीय वस्त्र शिवाजी के उत्तरीय वस्त्र के साथ ग्रन्थि बंधन द्वारा बांध कर सूचित किया गया कि दोनों (शिवाजी और सोयरा बाई) इस लोक तथा परलोक में, दोनों एक दूसरे के साथी हैं। राजकुमार सम्भा जी उत्तराधिकारी के रूप में दोनों के पीछे बैठाया गया। तदनन्तर अष्ट प्रधान मंडल के आठ मंत्रियों ने, गंगा जल से परिपूर्ण आठ सुवर्ण कलशों के पवित्र तीर्थ जलों को शिवाजी, सोयराबाई और सम्भा जी के शीर्ष भागों पर छिड़क कर उनका अभिषेक किया। इसी समय बाजे गाजे के साथ मंत्र-उच्चारण किया गया। सोलह पवित्र शुद्ध वस्त्र धारण करने वाली ब्राह्मण महिलाओं ने सुवर्ण निर्मित स्थाली में रखे हुई पंच—प्रज्वलित—दीपावलि से शिवाजी को आरती उतारी।

इसके बाद शिवाजी ने अपना वेष परिधान बदला। सुवर्ण जटित, जगमगाते हीरे मोतियों तथा स्वर्णाभरणों से सज्जित राजकीय वेष धारण किया। गले का हार, पुष्पों की माला, हीरे मोतियों की लड़ियों से सज्जित पगड़ी-शिरो वस्त्र पहरे। तलवार, ढाल, धनुष वाण की पुजा की। तदनन्तर पूजनीय वृद्धजनों और ब्राह्मणों को शिरोनत होकर नमस्कार किया। शुभ मुहूर्त में सिंहासन भवन में प्रवेश किया। सिंहासन भवन अनेक प्रकार की चित्रकारी से अलंकृत था। सिंहासन के ऊपर हीरे मोतियों की लटकती हुई लड़ियों से ओत प्रोत सुवर्ण-वस्त्र लहरा रहा था। भूमि भाग—वैल्वैट कीमती कालीनों से सजायागया था। सिंहासन भवन के ठीक बीच मध्य में कई महीनों के निरन्तर यत्न से निर्मित महनीय रत्न मणियों से जड़ा हुआ सिंहासन भी रखा गया।

सिंहासन की आसन पीठ सुवर्ण शलाकाओं से मढ़ी हुई थी।

आठों दिशाओं में खड़े आठों स्तम्भ-हीरेजवाहरात से जड़े हुए थे। इन आठों खम्भों पर कीमती सुवर्ण चित्रकारी से अलंकृत चांदनी लहरा रही थी। चांदनी की सुवर्ण-चित्रकारी से हीरे मोतियों की मालाएं जगमगाते रत्नों की आभा से प्रदीप्त होकर चमचमा रही थीं। राज सिंहासन पर सिंह-चर्म-के ऊपर वैल्वट सजाया गया। आर्य-परम्परा-और मुगलाई—शान और शौकत का अद्भुत मेल किया गया। सिंहासन के दोनों ओर अनेक प्रकार के राज चिह्न और शासन-चिन्ह सजाए गये थे।

ज्योंही शिवाजी सिंहासन पर आरूढ़ हुए, उपस्थित जनता पर अनेक प्रकार के सुवर्ण-रजत-निर्मित पुष्पों की वृष्टि की गई। तत्काल सोलह ब्राह्मण-विवाहित-देवियों ने नवाभिषिक्त राजा की आरती उतारी। ब्राह्मणों ने मंत्र-पाठ-के साथ राजा को आशीर्वाद दिया। राजा ने शिरोनत होकर उसको स्वीकार किया। एकत्रित जनता ने "छत्रपति शिवाजी की जय हो" के नाद से गगन को गुंजा दिया। बाजे-बजने लगे—गायक-गाने लगे। पूर्व नियत-प्रबन्ध के अनुसार-शिवाजी के सिंहासनारूढ़ होते ही, मराठा मंडल के सब किलों में तत्क्षण-शतघ्नियां आनन्द तथा विजय सूचक-गोले-तथा स्फोट शब्द करने लगीं। इसी समय मुख्य राज पुरोहित गागाभट्ट सुवर्ण जटित- हीरे मोतियों की मालाओं से अलंकृत राजछत्र लेकर आगे बढ़ा और शिवाजी को, स्वतन्त्र सर्वाधिकारी राजा-के रूप में छत्रपति शिवाजी की पदवी से अलंकृत किया।

तदनन्तर ब्राह्मणों ने आगे बढ़कर छत्रपति शिवाजी को आशीर्वाद दिये। शिवाजी ने मुक्त हस्त होकर ब्राह्मणों-भिक्षुओं और साधारण जनता को भारी धनराशि दान में वितीर्ण की।

तदनन्तर अष्ट प्रधान मंडल के मंत्रियों ने आगे बढ़कर, झुक

कर शिवाजी को नमस्कार किया। छत्रपति शिवाजी ने इन्हें सन्मान सूचक वेष परिधान, राजसेवा के नियुक्ति पत्र के साथ २ अनेक प्रकार के पारितोषक, धन घोड़े हाथी जवाहरात और शस्त्रादि वितीर्ण किये। अष्ट प्रधान मंडल के सब पदों के फारसी नाम बदल कर उनके स्थान पर संस्कृत नाम प्रचलित किये गये। सिंहासन से कुछ नीचे, उच्च स्थान पर युवराज सम्भाजी राज-पुरोहित गागा भट्ट और प्रधान मंत्री मोरोत्रिम्बक पिंगले आसीत किये गये। शेष मंत्री सिंहासन के दायी-बायीं ओर पंक्तियों में श्रेणी बद्ध होकर खड़े हुए। शेष उपस्थित दरबारी और दर्शक-सन्मान पूर्वक अपने २ स्थानों पर आसीन हुए।

इस समय प्रातःकाल के ८ बज गये थे। नारोजी पन्त ने अंग्रेजों के दूत हैनरीऔक्सिनडन को छत्रपति शिवाजी के सामने उपस्थित किया। उसने-यथोचित दूरी से झुक कर शिवाजी का सन्मान किया। दुभाषिए नारायण शास्त्री ने अंग्रेजों की ओर से शिवाजी को हीरे की अंगूठी भेंट रूप में अर्पित की। शिवाजी ने दूर २ स्थानों से आए हुए दर्शकों को सिंहासन के समीप बुलाया और उन्हें यथोचित पुरस्कार देकर विदा किया।

इसके बाद शिवाजी सिंहासन से उतरे और एक उत्तम साज बाज से अलंकृत घोड़े पर सवार होकर—महल के खुलेआंगन में अवतीर्ण हुआ। तदनन्तर शिवाजी ने उस अवसर के लिये सुस-ज्जित हाथी पर सवार होकर सैनिक जलूस के साथ राजधानी की वीथियों में जनता को दर्शन दिये। इस जलूस में मंत्रि मंडल के साथ २ सेनापति भी सम्मिलित थे। जलूस में दो राजपताकाएं—जरी पताका और भगवाझंडा—दो हाथियों पर सजाकर रखी गई।

पीछे २ सेनाएं पदाति-अश्वारोही, तोपवाले और मारूबाजे वाले अपने २ झण्डों के साथ आरहे थे। नागरिकों ने समयोचित-आन शान के साथ अपने मकान, मार्ग और अट्टालिकाएं खूब शान के साथ सजाई। देवियों तथा महिलाओं ने आरती उतार कर अक्षत-पुष्प वर्षा से शिवाजी का हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत किया। रायगढ़ पर्वत के अनेक देव मंदिरों का दर्शन किया, और वहां भेंट-अर्चना करने के बाद शिवाजी राज महल में वापिस आया। ७ जून को विविध राजदूतों और ब्राह्मणों को दान दिये गये—यह दान १२ दिनों तक दिया जाता रहा। इन दिनों राजा की ओर से अन्नक्षेत्र और लंगर भी खोले गये। इस दान यज्ञ में हरेक पुरुष को ३) से ६) तक दान दिया जाता था और स्त्रियों और बालकों को एक या दो रुपये दिये जाते थे।

राज्याभिषेक के अगले दिन वर्षाऋतु का प्रारम्भ हो गया। वर्षा जोर से होने लगी। उपस्थित दर्शकों तथा अतिथियों को इसके कारण पर्याप्त असुविधा हुई। राजाभिषेक के १० दिन बाद १८ जून को राजमाता जीजाबाई ने वृद्धावस्था में इस लोक से बिदाई ली। मानों पुत्र के राज्याभिषेक को देखने की प्रतीक्षा में ही थी !!! पुत्र को राजसिंहान पर, अपने हाथों पराक्रम से स्थापित राज्य का छत्रपति बनते देखकर जीजाबई के हृदय में जो अलौकिक आनन्द उत्पन्न हुआ था—उसका वर्णन नहीं किया जा सकता वह आनन्द-माता-पुत्र ही अनुभव कर सकते हैं—

११

कर्नाटक की विजय यात्रा

औरंगजेब ने बहादुर खां को शिवाजी और दक्खनी रियासतों पर अधिकार करने के लिये भेजा। शिवाजी का कोष खाली हो गया था। वह अभी लड़ाईयों में उलझने को तैय्यार नहीं था। इसलिये उसने बहादुरखान के पास संधि की शर्तें भेजकर उसे संधिचर्चा में लगाए रखा और दूसरी तरफ़ पौंड और कोल्हापुर के जिलों पर हमलाकर उन्हें अपने आधीन किया। औरंगजेब को जब यह समाचार मिले, उसने बहादुरखान को एक दम बीजापुर और शिवाजी पर हमला करने को लिखा। बहादुर खान ने शिवाजी पर कल्याण की ओर से, उत्तर कोंकण पर हमला किया। इन्हीं दिनों शिवाजी बीमार हो गया। तीन महीनों तक सतारा में रोग शय्या पर पड़ा रहा। मौका देखकर बहादुरखान ने बीजापुर दरबार में दक्खनी और अफगानी दलों के वैमनस्य का फायदा उठाकर बीजापुर के विरुद्ध आक्रमण किया। बहादुर खान के इस आक्रमण से बीजापुर बादशाह का मुख्य अधिकारी बहलोल खां शिवाजी से मिल गया। गोलकुण्डा की कुतुबशाही ने मुगलों के आक्रमण को रोकने के लिये शिवाजी और बीजापुर में सुलह करादी। बीजापुर दरबार ने शिवाजी को मुगलों से हिफ़ाजत करने के लिए ३ लाख रुपया और कोल्हापुर का जिला देना स्वीकार किया। परन्तु यह सुलह देर तक न टिकी। शिवाजी ने इसकी परवाह नहीं की। उसने अपने राज कोष को पूर्ण करने के लिये

कर्नाटक की विजय यात्रा की तैय्यारियां की और १६७६ ई० में इसके लिये प्रस्थित हुआ।

× × × ×

कर्नाटक का प्रदेश अपनी अतुल सम्पत्ति के लिये प्रसिद्ध था। अनेक विजेताओं ने समय समय पर उस प्रदेश की विजय यात्रा कर अपने राज कोष को सम्पूर्ण किया।

इक्ष्वाकु वंश के प्रसिद्ध राजा रघु ने भी इधर के पाण्डय राजाओं को अपना करद बनाकर अपने ऐश्वर्य को बढ़ाया था। महाराजा युधिष्ठिर ने भी राजसूय यज्ञ करते समय इधर अपने भाई को भेजकर अतुल सम्पति से अपने राजमहलों को परिपूर्ण किया था। अशोक-समुद्र गुप्त-भी यहां तक पहुंचे थे। विदेशी अरब निवासी समय २ पर इधर हमले करते थे। उत्तर से आने वाले मुसलमान आक्रान्ताओं में मलिक काफूर महम्मदशाह तुगलक आदि ने भी यहां अक्रमण कर इस प्रदेश की सम्पत्ति को लूटा। परन्तु इन सब आक्रमणों के बाद अब भी यह प्रदेश स्वर्णभूमि माना जाता था। उत्तर भारत के युद्धों-तथा भ्रातृ युद्धों के कारण; साथ ही शिवा जी के दमन के लिए भेजी गई सेनाओं पर हुए व्यय के कारण, औरंगजेब का राजकोष खाली हो रहा था। उसने अपने दक्षिणी शासकों को इस प्रदेश को जीतने के लिये आज्ञा दी। गोलकुंडा की कुतुबशाही पर हमला करने की तैय्यारियां की जाने लगीं। औरंगजेब ने अपने सरदारों को लिखा कि तंजौर में शहाजी का बेटा व्यंकोजी शासन करता है। वह निकम्मा और शक्ति हीन है। उस प्रदेश को सर करके, वहां पुराने समय से दबे हुए खजानों को हासिल करो। इधर शिवाजी ने भी अपना राजकोष भरने के लिये इस प्रदेश पर हमला करने की सोची। लोकाचार

की दृष्टि से अपने पिता की जायदाद का अपना हिस्सा लेने की बात भी कही।

औरङ्गजेब और शिवाजी दोनों कर्नाटक की ओर सम्पत्ति की आशा से अपनी सेनाओं की बागडोर मोड़ने की तैयारियां करने लगे। परन्तु औरङ्गजेब अवस्थाओं और परिस्थितियों से जकड़ा हुआ अपनी इस अभिलाषा को पूर्ण न कर सका। उसकी परखी हुई शक्तिशाली सेनाएं पँजाब और उत्तर पश्चिमी प्रान्त में पहाड़ी विद्रोहियों का दमन कर रही थीं। दक्षिण में बहादुरखान के आधीन सेनाएं बीजापुर सरकार के घरेलू युद्ध में उलझ गई थीं। बहादुर खान बीजापुर दरबार की दक्षिण की पार्टी के साथ मिल गया। स्वयं वह शिवाजी के साथ युद्ध करते करते थक चुका था। शिवाजी और बहादुर खान दोनों ने एक दूसरे पर हमला न करने और एक दूसरे के शत्रुओं की सहायता, तथा कार्यक्षेत्र में हस्ताक्षेप, न करने का निश्चय किया। शिवाजी ने बीजापुर दरबार के झगड़ों में भाग न लिया। बहादुर खान उधर स्वेच्छापूर्वक चलता रहा। इस सुलह से शिवाजी के प्रदेश में मुगलाई आक्रमण की आशंका न रही। शिवाजी पीछे की चिन्ताओं से मुक्त हो गया।

× × × ×

शिवा जी के दो प्रतिस्पर्धी

कर्नाटक में शिवाजी के दो प्रतिस्पर्धी थे। एक उसका अपना भाई व्यंकोजी तंजौर का राजा। दूसरा कुतुबशाही का बादशाह। शहा जी ने दीपाबाई के साथ विवाह किया था। व्यंकोजी उस की सन्तान था। शहा जी की मृत्यु के बाद इधर की सारी जागीर उसी के अधिकार में थी। व्यंकोजी स्वभाव में शिवा जी से उलटा

था। आराम पसन्द और महत्वाकांक्षा से शून्य था। शहा जी व्यंकोजी के स्वभाव की कमजोरी को जानता था। इसलिए उसने अपने जीवन काल में ही राजकार्य का संचालन करने के लिये रघुनाथ नारायण हनुमन्तो को प्रधान मन्त्री नियत कर दिया था। शहाजी की मृत्यु के बाद रघुनाथ और व्यंकोजी में दिन प्रति दिन ईर्ष्या और अनबन बढ़ने लगी। दोनों एक दूसरे पर दोषारोपण करते थे। एक दिन दरबार में कहा सुनी हो गई। रघुनाथ ने शिवाजी की आदर्श राजा के रूप में प्रशंसा की और व्यंकोजी को सुस्त आराम पसन्द और महत्वाकांक्षा से शून्य कहकर उसका अपमान किया। व्यंकोजी ने प्रत्युत्तर में शिवाजी को राजद्रोही, विद्रोही कहकर उसकी भर्त्सना की।

इस भर्त्सना से रघुनाथ उत्तेजित तथा अपमानित होकर, नौकरी छोड़ कर ग्लानि और प्रतिहिंसा के भाव से बनारस की ओर चल दिया। मार्ग में वह हैदराबाद में कुतुबशाही के प्रधान मन्त्री मदनपन्त से मिला। उसे शिवाजी और कुतुबशाह में मैत्री कराने के लिए प्रेरित किया। और शिवाजी के साथ इस आधार पर सुलह कराने की प्रेरणा की कि कर्नाटक की विजय यात्रा से जो सम्पत्ति व विजय प्राप्त होगी उसमें उसका भी भाग रहेगा। वहां से रघुनाथ शिवा जी के पास सतारा में गया। वहां जाकर उसने सारी स्थिति शिवा जी के सामने रखी। शिवा जी ने सब अवस्थाओं पर विचार कर यही उचित समझा कि कर्नाटक की विजय यात्रा से पहले कुतुबशाह के साथ मैत्री स्थापित की जाय। जिससे निश्चिन्त होकर कर्नाटक में विद्रोहियों तथा प्रतिद्वन्दियों का दमन किया जाय। दोनों में दोस्ती तथा भेंट कराने का कार्य हैदराबाद

के प्रधान मन्त्री मदनपन्त को सौंपा गया।

अपने पीछे महाराष्ट्र की राजव्यवस्था का प्रबन्ध इस प्रकार से किया गया। मोरो त्रिम्बक पिंगले पेशवा को प्रतिनिधि राज्याधिकारी नियत किया। अन्ना जी दत्तो और दत्ता जी त्रिम्बक को सेना की एक टुकड़ी के साथ राष्ट्र की रक्षा के लिए नियत किया। इन्हीं दिनों १६७६ ई० में नेता जी पालकर दिल्ली १० साल तक मुसलमान के रूप में रहकर महाराष्ट्र में वापिस आया था। उसकी शुद्धि की गई और उसे मराठा सेना में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

१२
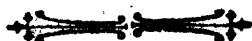
हैदराबाद में शिवा जी का राजसी जलसा

शिवाजी और कुतुबशाह में संधि हो गई थी । शिवाजी ने प्रह्लाद जी नीरा जी को कुतुबशाह के दरबार में अपना राजदूत नियत किया। शिवाजी ने उसको लिखा कि तुम बादशाह हस्मन कुतुबशाह के साथ मेरी मुलाकात भेंट का प्रबन्ध करो। पंडित मदनपन्त ने भी दोनों की दोस्ती को पक्का करने के लिये भेंट का होना आवश्यक समझा। उसने भी बादशाह को इसके लिए बार बार प्रेरित किया।

अफ़जल खान, शायस्ता-खान, औरङ्गजेब के कारावास से निकल आने, की कहानियां उसने सुनी थीं। उनको दृष्टि में रखते हुए उसे शिवाजी पर विश्वास न आता था । वह डरता था कि पता नहीं भेंट में क्या हो। परन्तु पंडित मदनपन्त और प्रह्लाद जी नीरा जी ने बादशाह को शपथ-पूर्वक इस विषय में भय आशंका से मुक्त किया। बादशाह कुतुबशाह ने भेंट करना स्वीकार कर लिया। १६७७ जनवरी को रायगढ़ से शिवा जी भेंट के लिये प्रस्थित हुआ । मराठी सेना के ७०००० सिपाहियों को सख्त ताकीद की कि कोई लूट मार न करे । बाजारों में सब सामान पैसे खर्च करके खरीदें। कुछेक सिपाहियों ने आज्ञा भंग किया। उन्हें अंगछेद और फांसी पर लटका कर सब सिपाहियों को सावधान और सतर्क कर दिया । १६७७ ई० को शिवाजी हैदराबाद आ पहुंचा । कुतुबशाह ने राजधानी हैदराबाद से आगे

आकर अगवाई करने का प्रस्ताव किया । शिवा जी ने कहला भेजा कि तुम मेरे बड़े भाई हो—तुम्हें अपने छोटे भाई का स्वागत करने के लिये आगे आना शोभा नहीं देता । सुलतान हैदराबाद में रहा । उसके मन्त्री मदनपन्त ने प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ शहर से आगे बढ़ कर शिवाजी का स्वागत किया—और उसे हैदराबाद में प्रविष्ट कराया ।

हैदराबाद नगर अनेक प्रकार से सजाया गया । बाज़ार गली सब कुंकुम के चूर्ण से सजाए गए थे । अटालिकाओं पर देवियां राज-अतिथि का स्वागत करने के लिए इकट्ठी हुईं । बन्दनवार पताका स्थान स्थान पर लहराये गये । शिवाजी ने अपने सीधे सादे वेश वाले सिपाहियों तथा सेनापतियों को समयोचित वेष भूषा से अलंकृत होने की आज्ञा दी । जंगली, पहाड़ी सिपाही, अयोध्या प्रवेश के समय रावण को जीतने वाली राम सेना की भांति, मोती से जड़ी पोशाकों में सजे हुए घोड़ों पर सवार हो गये ।

हैदराबाद के नागरिक इन अनेक युद्धों के विजेता—मुगल बादशाही को आमूल-चूल जीर्ण-शीर्ण करने वाले सिपाहियों और घुड़सवारों को आश्चर्य चकित नेत्रों से देखते थे । बीच २ में दक्खनी ब्राह्मण भी अपनी ऊंची बड़ी २ भौहें और गहरी आंखों और तिलक छाप से अंकित मस्तकों के साथ अपनी योग्यता के कारण नागरिकों की दृष्टि में विशेष कौतुक पैदा कर रहे थे ।

परन्तु इन सबसे बढ़कर हैदराबाद के हरेक नागरिक दर्शक की दृष्टि इन अतिथियों की चमत्कारी आत्मा पर केन्द्रित हो रही थी । मंत्रियों और सेनापतियों के चमकते हुए गिरोह के बीच में, एक छोटे पतले कद का अश्वारोही—पिछले दिनों की बीमारी और ३०० मील की लम्बी यात्रा के श्रम के कारण कुछ क्षीण और थका

हुआ—अपनी चमकती हुई दायीं बाईं और दृष्टिपात करती हुई आंखों, और स्वाभाविक स्मित विकसित चेहरे, और लम्बी आगे से झुकी हुई नाक से जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। शहर के जिस २ स्थान पर—वह अश्वारोही पहुंचता एकत्रित नागरिक 'शिव छत्रपति की जय' के नारों से आकाश को गुंजाते हुए रजत-सुवर्ण की पुष्प वर्षा द्वारा उसका अभिनन्दन करते। स्थान २ पर अट्टालिकाओं पर बैठी हुई महिलाएं उतर कर—राज-अतिथि को रोक कर आरती उतारतीं—गीत—संगीत द्वारा हार्दिक आशीर्वाद से उसे अभिनन्दित करतीं। शिवाजी ने भी उस स्वागत अभिनन्दन का उत्तर मुक्त हस्त से सोने चांदी की वर्षा द्वारा किया। स्थान २ के मुख्य नागरिकों को कीमती वेष भूषा देकर उनका सन्मान किया।

× × × ×

शाही अतिथियों का जलूस दाद महल (न्याय प्रासाद) के पास पहुंचा। महल के द्वार के पास सब रुक गये। शिवाजी अपने पांच चुने हुए राज्याधिकारियों के साथ महल की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ सिंहासन-भवन में पहुंचा। कुतुबशाह ने आगे बढ़कर शिवाजी का आलिंगन किया। और उसे राजसिंहासन पर अपने साथ बैठाया। प्रधान मंत्री मदनपन्त भी बैठ गया। शेष सब खड़े रहे। शाही घराने की देवियां—चिकों में से आश्चर्य के साथ सारे दृश्य को देख रही थीं। तीन घंटां तक दोनों बादशाह आपस में मैत्री का वार्तालाप करते रहे। एक दूसरे का स्वागत-अभिनन्दन किया गया। कुतुबशाह ने शिवाजी से उसकी आपबीती—जगबीती रोमांचकारी घटनाएं सुनीं—अफ़ज़लखां—शायस्ताखां, औरंगजेब को खुले दरबार में ललकारना—वहां से वापस महाराष्ट्र में आना—कुतुब-

शाह जैसे आरामपसन्द —राजा के लिये यह सब घटनाएं—अनोखी और चमत्कारी थीं—वह दांतों में अंगुली देकर—स्तम्भित हुआ इनको सुनता रहा। शिवाजी का वैयक्तिक जादू—उस पर छा गया—उसने हीरे जवाहरात घोड़े हाथियों द्वारा शिवाजी तथा उसके प्रमुख राज्याधिकारियों का स्वागत किया। कुतुबशाह ने पारस्परिक मैत्री को दृढ़ करने के लिये, शिवाजी के मस्तक पर सुगंध चन्दन चर्चित किया और अपने हाथ से पान की बीड़ी देकर स्वयं महल की सीढ़ियों तक जाकर उसको विदा किया।

इसके बाद कुतुबशाह ने निश्चिन्तता और शान्ति का सांस लिया। उसे शिवाजी की सचाई पर विश्वास हुआ। मराठा राजदूत के आश्वासन के सत्य प्रमाणित होने पर उसकी प्रशंसा की गई और उसे अनेक प्रकार के उपहार पारितोषक रूप में दिये। इसके बाद दोनों पक्षों में परस्पर अनेक प्रकार के—स्वागत - उपचार—भोजन—पान द्वारा होते रहे।

साथ ही संधि की शर्तें भी तय हो गईं। दोनों ने मुगलों के विरुद्ध पारस्परिक सुरक्षा के लिये शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा की। कुतुब-शाह ने अपने तोपखाना का कुछ भाग भी दिया। धन भी दिया। प्रतिफल में, विजय में कुतुबशाह को यथोचित भाग देने का निश्चय किया। शिवाजी एक महीने तक हैदराबाद में रहा। शर्तें पूरी होने के साथ २ आमोद प्रमोद भी होते रहे। कहा जाता है कि एक बार कुतुबशाह ने शिवाजी से पूछा कि तुम्हारे पास कितने प्रसिद्ध हाथी हैं—शिवाजी ने सुगठित मावला सिपाहियों की ओर संकेत करके कहा कि 'यह मेरे हाथी हैं'। एक दिन मावला सरदार येसाजी कंक का कुतुबशाह के मस्तहाथी के साथ मल्लयुद्ध रचा गया।

येसा जी ने कुछ समय तक तलवार द्वारा हाथी की रोक थाम की—तदनन्तर तलवार के वार से उसकी सूंड काट कर, उसे वहां से भगा दिया।

इसके बाद शिवा जी—श्री शैल आदि धर्म तीर्थ स्थानों पर यात्रा करता हुआ तंजौर पहुंचा। श्री शैल पर—वहां के आध्यात्मिक वातावरण में—शिवा जी संसार के झंझटों से उपरत हो गया और—उसने अपने शरीर त्यागके लिये श्री शैल को सर्वोत्तम स्थान समझकर भवानी की सेवा में अपने सिर की भेंट करने का संकल्प किया। मंत्रि मंडल को जब इसका पता चला उन्होंने एक दम शिवाजी को राजधर्म का उपदेश देते हुए—इस कार्य से रोका—यहां शिवाजी ने श्री गंगेश नाम का घाट बनाया।

यहां से बिदा होकर शिवाजी १६७७ अप्रैल में अनेक स्थानों से भेंट आदि लेता हुआ जिंजी तिरवाडी आदि स्थानों को आधीन करता हुआ त्रिचनापली पहुंचा। यहां रघुनाथ पन्त की मध्यस्थी द्वारा मदुरा के राजा नायक के साथ ६ लाख हून लेकर सुलह की।

शिवाजी और व्यंकोजी में भेंट

शिवाजी ने अपने भाई व्यंकोजी के साथ भेंट करने के लिये दूतों के द्वारा उसके पास संदेश भेजे। शिवा जी द्वारा जीवन रक्षा का आश्वासन मिलने पर, व्यंकोजी २००० घुड़सवारों के साथ जुलाई मास में तिरूमलवाड़ी में आया। शिवाजी ने आगे बढ़कर त्रिपातूर स्थान पर उसका स्वागत किया। दोनों भाइयों ने आठ दिन तक वहां पारस्परिक अभिनन्दन स्वागत किये। इसके बाद शिवा जी ने अपनी पैतृक सम्पत्ति में से ½ भाग व्यंकोजी से मांगा। व्यंकोजी ने देने से इनकार किया। इस पर शिवा जी ने उसको

सुस्त निकम्मा और उत्साह शून्य होने के लिये भर्त्सना की। इस पर उस रात को व्यंकोजी वहां से जगन्नाथ आदि मंत्रियों के परामर्श से भाग गया। शिवा जी को जब यह पता लगा तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने उन मंत्रियों को गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन खुले दरबार में कहा कि मैं व्यंकोजी को गिरफ्तार करने नहीं आया—परन्तु इन मंत्रियों ने उसे रात को भाग जाने की सलाह देकर मुझे बेईमान घोषित करने का कार्य किया है। मैं तो केवल पैतृक सम्पत्ति में अपना भाग मांगने आया था। यदि वह नहीं देता तो न दे, व्यंकोजी मूर्ख है।

इसके बाद उन मंत्रियों को भेंट उपहार के साथ तंजौर भेज दिया। साथ ही तंजौर का प्रदेश जीतने का विचार छोड़ दिया। शेष कर्नाटक का प्रदेश अपने आधीन कर शिवाजी तीर्थयात्रा करता हुआ—मैसूर आदि प्रदेशों पर अपना प्रभाव अङ्कित करता हुआ, ईस्वी सन १३७८को महाराष्ट्र में वापिस आया। कर्नाटक की विजय यात्रा ने शिवाजी का यश दिग्दिगन्त में फैला दिया।

१३

शिवाजी की औरंगजेब के नाम चिट्ठी

कर्नाटक विजय यात्रा से महाराष्ट्र में वापिस आने पर शिवा जी ने राष्ट्र की राजनैतिक स्थिति पर सिंहावलोकन किया। बीजापुर की आदिलशाही कुतुबशाही के राजवंश क्षीण हो रहे थे। मुगल सेनापति उन्हें हथियाने के लिये कई प्रकार के षड्यंत्र रच रहे थे। कभी उन्हें आपस में लड़ाते थे—उनके अन्दर घरू युद्ध पैदा करते थे, कभी उन्हें मराठों के विरुद्ध उत्तेजित करते थे, कभी मराठों को उनके विरुद्ध। इन षड्यन्त्रों के साथ २ औरंगजेब ने 'जजिया' नाम का कर हिन्दुओं पर लगाने की घोषणा की। इससे दक्खन में, मुगलाई प्रदेशों की हिन्दु जनता तथा भारतवर्ष के दूसरे स्थानों की हिन्दू जनता 'त्राहि त्राहि' करने लगी। ऐसे समय १६७६ ई० में शिवाजी ने औरंगजेब के नाम निम्नलिखित चिट्ठी लिखवाई। इस चिट्ठी से शिवाजी की उदारता दूरदर्शिता तथा आत्म-विश्वास की झलक पद पद पर प्रकट होती है। यह पत्र आज भी भारत की हिन्दु मुसलिम जनता के लिये मार्ग दर्शक हो सकता है। आज भी कुतुबशाह और शिवा जी—मुसलमान और हिन्दू भिन्न २ मजहबों में रहते हुए भी राजनैतिक स्वत्वों की दृष्टि से एक प्लैटफार्म पर एक हो सकते हैं। दिल्ली की राजगद्दी के अत्याचार—सब के लिये समान रूप होते हैं। यही सचाई उन दिनों शिवाजी गोलकुंडा और बीजापुर की बादशाहियों के साथ २ अनुभव की जा रही थी। परन्तु दिल्ली के आलमगीर ने जनता

के आराम की अपेक्षा, अपनी महत्वाकांक्षा और प्रतिष्ठा कायम रखने के लिये राजकोष भरने के लिये जजिया लगाने में भी संकोच नहीं किया—

श्री यदुनाथ सरकार द्वारा लिखित औरंगज़ेब पुस्तक में प्रकाशित अंग्रेज़ी भाषा में अनुवादित पत्र का हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है—

शाहंशाह आलमगीर औरंगज़ेब की सेवा में :—

शिवाजी आपका सदा दृढ़ हितेच्छु है। परमात्मा की कृपा और आपकी मेहरबानियों के लिये आपका धन्यवाद करता है। यद्यपि मुझे प्रतिकूल दैव के कारण आपको बिना मिले आपके दरबार से अचानक आना पड़ा। तथापि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आज भी एक कृतज्ञ सेवक की भांति आपकी सेवा करने के लिये कटिबद्ध हूं।

मैंने सुना है कि मेरे साथ जो आपके युद्ध हुए हैं उनके कारण आपका शाही खज़ाना खाली हो गया है, इस लिये आपने उस खजाने को पूरा करने के लिये हिन्दुओं पर 'जज़िया' नाम का कर लगाने की आज्ञा जारी की है। आपको मालूम है कि इस बादशाही का निर्माण जलालदीन अकबर ने किया था। उसने ५२ साल तक राज्य किया। इस काल में उसने सुलह-ए-कुल नीति स्वीकार की थी। उसके राज्यकाल में क्रिश्चियन यहूदी, मुसलिम, दादू, फलकिया, मलाकिया, अनासरिया दहरिया ब्राह्मण, जैन परस्पर प्रेमपूर्वक रह कर अपने २ धर्मों का पालन करते थे। अकबर की शासन नीति का उद्देश्य इन सब की रक्षा करना तथा इन्हें प्रसन्न करना था। इसी लिये उसका नाम जगद्गुरु प्रसिद्ध हुआ। उसके बाद जहांगीर ने २२ साल तक और शाहजहां ने

३२ साल तक इसी नीति के अनुसार शासन कर अपने २ नाम अमर किये। दोनों बादशाह सबके प्रिय और न्यायकारी समझे जाते थे। इन तीनों बादशाहों के शासन काल में सल्तनत की सम्पत्ति और ऐश्वर्य चरमसीमा तक पहुंचा। नए २ प्रदेश और नए २ किले इनके राज्य में सम्मिलित हुए। छोटे बड़े सब लोग आराम से शान्तिपूर्वक स्वतंत्रता का जीवन व्यतीत करते थे। सब लोग इनकी प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे।

परन्तु आपके शासन काल में कई किले और कई सूबे मुगलाई बादशाहत से अलग होगये हैं; और कई सूबे और किले अलग होने वाले हैं। मेरी तरफ से आपकी सल्तनत को तहस नहस करने और सूबों तथा किलों को छीनने में कोई कसर न रहेगी।

आपके इलाकों में कृषक लोग पद दलित हो रहे हैं। जमीनों की फसलें कम हो रही हैं। लाखों रुपयों के स्थान पर हजारों और हजारों के स्थान पर दस वसूल किये जाते हैं। वह भी बड़ी दिक्कत के साथ! जब शाहंशाह और उसके शाहजादों के महलों में निर्धनता और भिखारीपन प्रवेश कर चुके हैं तो इससे सरकारी अफसरों तथा हाकिमों की अवस्था का अनुमान लगाया जा सकता है। तुम्हारे शासनकाल में राज्य में फौजों में असन्तोष बढ़ रहा है। व्यापारी असुरक्षा के कारण शिकायतें करते हैं, मुसलमान चिल्ला रहे हैं, हिन्दू पीसे जा रहे हैं। सैंकड़ों लोग रात को भूखे सोते हैं, दिन में निराश हो भाग्य को रोते हैं।

पता नहीं आप किस शाही ख्याल में, जनता की इन तकलीफों को जजिया कर लगा कर और भी बढ़ा रहे हैं? आपके इन कारनामों से आपकी बदनामी पूर्व से पश्चिम तक फैल जायगी

और इतिहास की पुस्तकों में दर्ज किया जायगा कि किस प्रकार हिन्दुस्थान के बादशाह औरंगजेब आलमगीर ने राजकोष भरने के लिये भिखारियों के पेट काट कर ब्राह्मण और जैनी फ़क़ीरों से जजिया कर वसूल किया। आप दुर्भिक्ष पीड़ित भूखे भिखारियों पर अपना बल प्रयोग करके तैमूर वंश के नाम को मटियामेट कर रहे हैं।

बादशाह सलामत! यदि आप ईश्वरी किताब कुरान में विश्वास रखते हैं—तो वहां देखिये—वहां परमात्मा को (रबे-उल एलामीन) मनुष्य मात्र का मालिक कहा है केवल मुसलमानों का मालिक (रबे-उल-मुसलमान) नहीं कहा। यथार्थ में हिन्दुधर्म और इस्लाम एक दूसरे के प्रतिरञ्जक पूरक हैं। परमात्मा ने मनुष्य जाति के भिन्न २ रूप रंग की रेखाओं को पूरा करने के लिये इस्लाम और हिन्दुधर्म का प्रयोग किया है। यदि पूजा स्थान मसजिद है, तो वहां परमात्मा की स्मृति में आयतें गायी जाती हैं। यदि पूजा स्थान मंदिर है, तो वहां परमात्मा के दर्शनों की उत्कठा में घंटे घड़ियाल गुंजाए जाते हैं। किसी मनुष्य के धार्मिक विश्वास और धर्मकाण्ड के लिये अन्ध श्रद्धा तथा असहिष्णुता का प्रदर्शन करना इलहामी पुस्तक की आज्ञाओं को बदलता है। नई २ बातें तथा प्रथाएं जारी करना दिव्य चित्रकार की कृति में दोष दिखाने के बराबर है।

न्याय की दृष्टि से जजिया कर, किसी भी दशा में नियमानुकूल नहीं कहा जा सकता। राजनैतिक दृष्टि से यह कर लगाया जा सकता है, यदि आपके राज्य में ऐसा प्रबन्ध हो कि एक सुन्दर युवती सोने के गहनों से अलंकृत एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक

बिना किसी भय और बलात्कार के आ जा सके। परन्तु इन दिनों तो बड़े बड़े आबाद शहर लूटे जा रहे हैं। खुले असुरक्षित देहातों का तो कहना ही क्या! जजिया-कर जहां न्यायकी दृष्टि से अनुचित है, वहां भारतवर्ष के इतिहास की परम्पराओं की दृष्टि से यह एक नई अनोखी बात है। यह कर सामयिक स्थिति की दृष्टि से अनुचित और अनावश्यक है।

यदि आप जनता पर अत्याचार करना और हिन्दुओं को भयभीत करना अपना धार्मिक कर्तव्य (Duty) समझते हैं तो आपको साधारण जनता से यह कर वसूल करने से पहिले मेवाड़ के राणा राजसिंह से यह जजिया वसूल करना चाहिए। राणा राजसिंह हिन्दुओं के शिरोमणि महाराणा हैं। तब आपके लिये मुझ से यह कर वसूल करना कठिन न होगा। क्योंकि मैं आपका अदना सेवक हूँ। परन्तु चीटियों और मक्खियों का शिकार करना-आप जैसे बलवान्-शक्तिशाली व्यक्तियों को शोभा नहीं देता।

मुझे आपके नौकरों तथा अफ़सरों की निराली ईमानदारी—राजभक्ति पर आश्चर्य होता है, कि वह आपके सामने असली वस्तुस्थिति को रखने में भारी लापर्वाही कर रहे हैं और जलती हुई आग पर तिनके और भूसा डाल कर उसकी लपटों को आपके सामने प्रकट नहीं होने देते। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह आपको सुबुद्धि दें जिससे आपका शाहंशाही—सूर्य—परम्परागत महनीय महिमा के क्षितिज के ऊपर सदा चमकता रहे।

× × × ×

१४

छत्रपति शिवाजी की जय

कर्नाटक से वापिस आते हुए शिवाजी बेलगाम में बलवाड़ी गाम में पहुंचा। यहां की सावित्री बाई नाम की जमीदारन देवी ने शिवाजी की सेना के कुछ बैल जाते हुए लूटे थे। मराठा सिपाहियों ने उसका किला घेर लिया। २७ दिन तक वह वीरांगना स्वयं लड़ती रही। उसने मराठा सिपाहियों की एक न चलने दी। लाचार इस पर भी मराठा सेना ने हमला किया और सावित्री बाई पराजित होकर किले से भाग निकली। शिवाजी के सेनापति सक्खुजी गायक बाड़ ने इसे गिरफ्तार कर लिया और उसका भारी अपमान किया। शिवाजी के पास जब यह समाचार पहुंचा। एक दम सक्खुजी गायक बाड़ को गिरफ्तार किया गया। उसकी दोनों आंखें निकलवा दीं। उसको राक्षसी पाप का यथोचित दण्ड दिया गया। और शेष आयु उसे मनौली गांव में कैद किया गया। शत्रु महिला पर भी किए गये अत्याचार को न सह कर, शिवाजी ने मातृशक्ति के के प्रति सन्मान का भाव प्रकट कर, मित्र शत्रु की दृष्टि में, राजमाता जीजा बाई के यश को दिग्दिगन्त में चिरस्थायी कर दिया।

× × ×

शिवाजी को समाचार मिला कि उसके पुत्र संभा जी ने एक ब्राह्मण विवाहित देवी पर बलात्कार कर उसका सतीत्व नष्ट किया है। शिवाजी इससे पहले भी संभा जी की स्वेच्छाचारिता की बातें सुन चुका था। शिवाजी को सार्वजनिक-कामों में लगे रहने के

कारण संभाजी की देख भाल करने का अवसर भी न मिला। इस के विपरीत समय २ पर संभा जी को मुगल दरबार के दरबारियों के संग में रहने से, मुगल सेनापतियों के साथ आमोद-प्रमोद का अवसर मिलने से वह व्यसनी हो गया था। मुगल बादशाह का इसमें स्वार्थ था कि वह शिवाजी के उत्तराधिकारी को, शिवाजी की भांति शक्तिशाली आत्माभिमानी और तपस्वी संयमी न बनने दे। शिवाजी सम्भाजी की इन कमियों को जानता था। इसी लिये अपनी अनुपस्थिति में वह शासनतंत्र में संभाजी को दायित्व का कार्य न देता था। इस बलात्कार की घटना ने शिवाजी के मन्यु को प्रदीप्त किया। पितृमोह और राज कर्तव्य में से शिवाजी ने राजा कर्तव्य पालन किया और संभाजी को पन्हाला के किले में नजर बन्द कर दिया। मौका देख कर संभाजी अपनी धर्मपत्नी येसुबाई के साथ कुछ साथियों के साथ किले में से भाग निकला। मुगल सेनापति दिलेरखान ने रक्षक सेना भेज कर उसका सूपा से ८ मील की दूरी पर कारकम्य स्थान पर अभिनन्दन किया। औरंगजेब को इसकी सूचना दी गई। उसने संभाजी को राजा का खिताब देकर ७ हजार की हैसियत दी, और एक हाथी भेंट किया।

× × ×

शिवाजी समय समय पर दूत भेज कर संभाजी को समझाता रहा। उसे सन्मार्ग पर लाने की कोशिश भी की। दिलेरखान बीजापुर पर हमला कर रहा था दिलेरखान ने मार्ग में अथनी नाम की व्यापारी मंडी को भस्मसात् कर दिया। वहां के हिन्दू नागरिकों को बाजार में बेचने का निश्चय किया गया। सम्भाजी ने इसका विरोध किया परन्तु उसकी कुछ न चली। मौका देख कर २० नवम्बर १६८० को संभाजी अपने साले महादजी निम्बालकर की

भर्त्सना पर, तथा स्वाभिमान को लगी ठेस के कारण, उद्विग्न खिन्न होकर मुगलों के शिविर कैम्प में से अपनी धर्मपत्नी येसुबाई को मर्दाना वेष पहना कर निकल भागा; और बीजापुर पहुंच गया। वहां मसूद ने उसका स्वागत किया—दिलेरखान ने सम्भाजी का पीछा किया परन्तु संभाजी एक दम शिवाजी के भेजे हुए घुड़ सवारों के साथ पन्हाला पहुंच गया।

शिवाजी ने सम्भाजी को बहुत समझाया। उसने उसके सामने कर्त्तव्य पालन, लोक सेवा के आदर्श रखे। उसकी धार्मिक भावनाओं को जगाया। अपना संचित राज कोष, दूर २ स्थानों से आए हुए सन्मान पत्र दिखाए और उसे प्रेरित किया कि वह अपने वंश का, अपनी जाति का, धर्म का, ख्याल रखे—उसे राज्य का उत्तराधिकारी होने के नाते कर्त्तव्य पालन के लिये प्रेरित किया। महाराणा प्रतापसिंह की भांति शिवाजी को भी जीवन भर स्वतंत्र-युद्धों में अपराजित होते हुए भी, अन्त समय में पुत्र के भावी जीवन की चिन्ता के साथ राज्य की चिन्ता ने चिन्तित किया।

इन्हीं दिनों मानसिक आधियों और चिन्ताओं के साथ २ शिवाजी ज्वर और डीसैण्ट्री (लहू के दस्त) की बीमारी से पीड़ित हो गया। १२ दिन तक बीमार रहा। धीरे २ मृत्यु के चिह्न प्रकट होने लगे। जीवन की आशा छूट गयी। शिवाजी ने भी स्वयं इसका अनुभव किया। कई बार बीच में मूर्छा भी छा जाती थी। बालसखा, वीर सखा, युद्ध सखा अष्टमंडल के दरबारी शिवाजी के पास आते जाते और अपने सम्राट् के अन्तिम दर्शन—समझ कर विलाप करते। शिवाजी मृत्यु की सांस में भी उन्हें ढारस बंधाता और बलिदान, त्याग और पारस्परिक सहयोग से निर्माण किए गये राष्ट्र की रक्षा के लिये कटिबद्ध होने की प्रेरणा करता। शिवा-

जी को अनेक बार खूनी घातक वारों से बचाने वाले—शरीर रक्षक—उस समय मृत्यु के सामने अपनी तथा अपने सम्राट् की बेवसी को अनुभव कर रहे थे। उसके अटल नियमों के सामने किसी की न चली। कोई भी मृत्यु के वार को न रोक सका। ५ अप्रैल रविवार १६८० ई० चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन दुपहर को शिवाजी ५३ वर्ष की आयु में सदा के लिये सो गया—उस गहरी नींद में लीन हुआ जिससे कोई किसी को जगा नहीं सकता। शिवाजी के अन्तःपुर और मराठा मडल ने इस समाचार को दुःख और चिन्ता के साथ सुना। लगातार अनथक परिश्रम और दो बार की लम्बी बीमारी के कारण तथा संभाजी के भावी जीवन की चिन्ता के कारण जीवन के अन्तिम दिनों में शिवाजी का तन और मन थक चुका था—प्रकृति नियम के अनुसार—अब विश्राम लेना ही स्वाभाविक था।

× × ×

शिवाजी अपने जीवन काल में भयंकर संघर्ष में उलझा रहा। परमात्मा की लाड़ली, सौभाग्य शाली जातियों को ही शिवाजी जैसे प्रतिभा शाली नेता प्राप्त होते हैं। भारतीय आर्य जाति का सौभाग्य था कि उसे शिवाजी जैसा नेता मिला। उसने आर्य जाति को पराजित स्थिति से निकाल कर अपने पैरों पर, आत्म-गौरव के शैल पर पुनः खड़ा किया और अत्याचारियों का मुकाबला करने के लिये कटिबद्ध किया। शिवाजी ने अपने अलौकिक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के द्वारा भारतवर्ष में नवयुग का प्रारम्भ किया। नई परिस्थितियों में, नए युग का निर्माण क्रान्तिकारी व्यक्ति ही कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति ही नई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये नए साधन जुटा सकते हैं। शिवाजी के प्रादुर्भाव के समय

भारतवर्ष में नई दुनिया बन रही थी।

राजनैतिक क्षेत्र में भारतवासी धर्मयुद्ध करने के अभ्यासी थे। परन्तु विदेशों से आने वाले आक्रान्ता छल-युद्ध करने में संकोच न करते थे। राजपूतों ने छल युद्धों का मुकाबला धर्मयुद्धों से करना चाहा। सफल न हो सके। उन्हें मैदान छोड़ने पड़े। विदेशी प्रबल होते गये—शिवाजी ने परिस्थितियों के अनुसार विदेशियों के छल युद्धों का मुकाबला करने के लिये सदाचार और आर्य राजनीति पर आश्रित माया-युद्धों के करने में संकोच नहीं किया। वर्तमान युग में आर्य धर्म के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने भी इन शब्दों में इसका उपदेश दिया है।

"इस प्रकार से लड़ना कि जिससे निश्चित विजय होवे आप बचे जो भागने से वा शत्रुओं को धोखा देने से जीत होती हो तो ऐसा ही करना"। तृतीय समु० सत्यार्थप्रकाश १ क्षत्रधर्म

× × × ×

मुगलों ने तोपों की सहायता से भारतीय राजवंशों को युद्ध में पराजित करना शुरू किया। शिवाजी ने तोपों का मुकाबला करने के लिये तोपखानों का संग्रह किया। शिवाजी के समय में ही युरोपियन जातियों, डच, अंग्रेज, पुर्तगाल आदि ने जहाजों द्वारा युद्ध करने की प्रथा शुरू की, शिवाजी ने भी उनके मुकाबले में अपने जहाज तथा समुद्री बेड़े तैयार किये। आवश्यकतानुसार रूढ़ियों के बदलने में संकोच नहीं किया। इसीलिये युरोपियन लोग शिवाजी के जीते जी उसके मुकाबले में खड़े न हो सके और उससे भयभीत होते रहे। शिवाजी का इन युरोपियन लोगों पर भारी आतंक था।

× × ×

भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार युद्ध करने का काम क्षत्रियों का है परन्तु शिवाजी ने सामयिक आवश्यकताओं को अनुभव करते हुए शस्त्र बांधने तथा युद्ध में सिपाही बनकर आगे आने का अवसर हरेक राष्ट्रभक्त को दिया। शिवाजी के साथ स्वतंत्रता युद्ध में, भाग लेने वाले किसी एक श्रेणी विशेष के व्यक्ति न थे—उसकी सेना में—उसके राष्ट्रीय कार्यकर्तृ मंडल में, ब्राह्मण क्षत्रिय-वैश्य शूद्र—सब को बराबर अवसर दिया जाता था। उसने राष्ट्र सेवा के काम में जन्मगत जात पांत के भेदों की परवाह नहीं की। इसीलिये वह सदा विजयी रहा। शिवाजी की मृत्यु के बाद पेशवा इस नीति का पालन न कर सके—इस लिये वह चिरकाल तक अपनी स्वाधीनता कायम न रख सके।

शिवाजी ने यथाशक्ति-परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन किये। परन्तु जहां तक उसके पारिवारिक जीवन का सम्बन्ध है वह एक समय में बहुविवाह की प्रथा को न तोड़ सका। इसके अनेक कारण थे। यदि शिवाजी ने महाराज रामचन्द्र की भांति एक पत्नी व्रत का पालन किया होता तो उनकी मृत्यु के बाद-छत्रपति का राजवंश घरेलू झगड़ों में न उलझता। शिवाजी का यह दोष उनके अनेक गुणों की रश्मियों में चन्द्रमा के कलंक की भांति लुप्त हो जाता है।

× × ×

छत्रपति शिवाजी की जीवन कथा का पारायण करने के बाद वर्तमान भारत निवासियों के सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि आज शिवाजी जीवित होते तो वह भारत की वर्तमान राजनीतिक पहेलियों को सुलझाने के लिये क्या करते।

इसका विस्तृत उत्तर देना अप्रासंगिक होगा—इसका उत्तर

देने के लिये हम इस कथा का पारायण करने वाले हरेक श्रोता व पाठक के सामने निम्न लिखित प्रश्न उपस्थित करते हैं।

यदि आप शिवाजी के समय में जीवित होते तो आप उस समय क्या करते ?

इस प्रश्न के उत्तर में ही प्रथम प्रश्न का उत्तर आ जाता है। इस जीवन चरित को पढ़कर अपने आप को शिवाजी और उसके बालसखाओं की स्थिति में रखने का यत्न कीजिये।

× × ×

छत्रपति शिवाजी ने आर्य जाति के सामने विजय का संदेश आत्म बलिदान द्वारा रखा। आज मित्र शत्रु सब शिवाजी की राजनीति-कुशलता और मौलिकता का सिक्का मान रहे हैं। शिवाजी भारतीय जनता का आराध्य देव बन चुका है। आत्म-बलिदान करने वाले शिवाजी की स्मृति को, अमर अमिट बनाने के लिए हमें जनता की सेवा का व्रत—हृदयों में—धारण करना चाहिए। यही सच्चा शिवसंकल्प हमें शान्ति स्वाधीनता और कल्याण प्राप्त करा सकता है।